गुरु-विचार

●

लेखक :

ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे.

संशोधित हिन्दी अनुवाद

प्रकाशन

प्रथमावृत्ति १९६०

मूल्य ढाई रुपिया

दै व वि चा र मा ला. क्र. -५

गुरु-विचार

●

लेखक :

ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे

❉

संशोधित हिन्दी अनुवाद

प्रथमावृत्ति १९६०

मूल्य ढाई रुपिया

दैव विचार माला. क्र.-५

विषयानुक्रम

प्रकरण	विषय	पृष्ठ
१.	प्रास्ताविक	१
२.	सामान्य परिचय	३
३.	गुरु का स्वरुप	९
४.	कारकत्व–विचार	१४
५.	द्वादश भाव फल	२०
६.	महादशा–विवेचन	११४
७.	उच्चनीच विचार	११८

प्रकाशक—
अशोक दिगंबर धुमाळ
नागपूर प्रकाशन
सीताबर्डी, नागपूर १

मुद्रक—
ल. म. पटले
रामेश्वर प्रिंटिंग प्रेस
सीताबर्डी, नागपूर १

गुरु—विचार

प्रकरण १ प्रास्ताविक

अकलुषांशुजटिलः पृथुमूर्तिः कुमुदकुन्दकुसुमस्फटिकाभः ।
ग्रहहतो न यदि सत्पथवर्ती हितकरोमरगुरुर्मनुजानाम् ॥

(बृहत्संहिता पृ. ४९)

गुरु आकारसे बड़ा हो, निर्मल किरणोंसे युक्त हो और कुमुद, कुंद अथवा स्फटिक के समान शुभ्र वर्ण से प्रकाशमान हो, अन्य ग्रह से बाधित न हो तथा योग्य मार्ग से (उत्तर क्रांति से) जा रहा हो तो मनुष्यों का हित करता है ।

गुरु ग्रह विद्वानों का प्रतीक है । समाज में आर्थिक दृष्टि से विद्वानों की मान्यता नहीं है । उनकी अवहेलना होती है । कभी कभी खाने को मिलने की भी मुश्किल होती है । वह आजन्म परिश्रम करता है । रातदिन के कष्ट के कारण स्त्री-पुत्रों की ओर भी ध्यान नहीं देता । किंतु उसकी कीर्ति मृत्यु के बाद ही फैलती है । 'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते' ऐसी कहावत है किन्तु यह सन्मान विद्वानों में ही मिलता है, अन्य लोगों में नहीं ।

विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम् ।
नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम् ॥

ऐसे विद्वान को यूनिवर्सिटी की एकाध पदवी प्राप्त होगी, अन्य आर्थिक लाभ बहुत कम मिलता है । इसीलिए समाज में शिक्षक, प्राध्यापक, दार्शनिक, प्रवचनकार, साधु इनकी स्थिति दयनीय दिखाई देती है । तथापि विद्वान दुरवस्था में होते हुए भी लोगों की परवाह न करते हुये अपने ध्येय की प्राप्ति के लिये

हमेशा प्रयत्नशील रहता है। उसके पास धन नहीं होता किंतु शास्त्रज्ञान होता है। वह शत्रुओं पर जय प्राप्त नही करता किंतु विद्वान वादियों को जीतता है। उसके नौकरचाकर नहीं होते किन्तु शिष्य उसकी सेवा करते हैं। अतः विद्वान पुरुष सांसारिक दृष्टि से सुखी न होकर भी किसी श्रीमान या अधिकारी पुरुष से कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। ऐसे विद्वानों का प्रतिनिधि ग्रह गुरु है।

पुराणों में गुरु के अशुभ फलों के बारे में भी वर्णन मिलते हैं। कहा है कि लग्न में गुरु होने से राम को वनवास हुआ। तृतीय के गुरु से बलि पाताल में गया। चतुर्थ के गुरु से हरिश्चन्द्र की सत्त्व परीक्षा हुई। षष्ठ के गुरु से द्रौपदी का वस्त्रहरण हुआ। आठवें गुरु से रावण का नाश हुआ। दसवें गुरु से दुर्योधन का और बारहवें से पाण्डु का मृत्यु हुआ।

जन्मलग्ने गुरुश्चैव रामचन्द्रो वने गतः।
तृतीये बलिः पाताले चतुर्थे हरिश्चन्द्रः ॥
षष्ठे द्रौपदीहरणं च हन्ति रावणमष्टमे।
दशमे दुर्योधनं हन्ति द्वादशे पाण्डुं वनागतम् ॥

इसके अतिरिक्त भीष्म का राज्याधिकार से वंचित होना दशरथ का पुत्रशोक, अजराज का पत्नीवियोग, विश्वामित्र का अभक्ष्यभक्षण, नलराजा का वनवास—इन सबका कारण गुरु की अशुभ स्थिति माना गया है। भीष्म के द्वितीय में, दशरथ के पंचम में, अज के सप्तम में, विश्वामित्र के नवम में और नल के लाभस्थान में गुरु अशुभ स्थिति में था।

प्रकरण २

सामान्य परिचय (ग्रहयोनिभेद)

आचार्य–जीवो ज्ञानं, सूरिः पूजितश्च सचिवः, गुरुर्गौरगात्रः, पीतं, मेदः, कोशः, मध्यं, रौप्यं, हेमन्तः, मधुरम् । ज्ञानी, आचार्य, देवों का मन्त्री, कुछ पीला गोरा वर्ण-यह गुरु का स्वरूप है । मेद, खजाना, मध्यम आयु, चांदी, हेमन्त ऋतु और मधुर रुचि पर गुरु का अधिकार है ।

कल्याणवर्मा–आचार्य के समान वर्णन है–सिर्फ ऋग्वेदाधिपतिः (ऋग्वेद का स्वामी) यह विशेषण अधिक है।

वैद्यनाथ–देवाचार्यः सौख्यविज्ञानसागरः, शुभदो देवेज्यः, जीवस्तूभयतो व्रजेत्, पुरन्दराचार्यः द्विपात्, बुधालयग्रामचरो गुरुः, त्रिंशत् वर्षाणि गुरु,ः शाखाधिपो जीवः, देवता इन्द्रः, देवेज्यस्य च पुष्परागः, ईशान्यदिशा, विन्ध्यान्तमार्यः, विप्रो जीवः अमरमन्त्री सत्त्वप्रधानग्रहः, नराकारो गुरुः, वियत् सुराचार्यः, वसा, विलग्नः अमरेज्यः, मृदुः सुरेज्यः कुजेन जीवः —यह सुख और ज्ञान का सागर है, शुभ है, दोनों ओर से चलता है । द्विपाद, विद्वानों के निवासस्थान, तीस वर्ष की आयु, पुष्पराग रत्न, ईशान्य दिशा, गोदावरी से विन्ध्यपर्वत तक का प्रदेश, ब्राम्हण, सत्त्वगुण, मनुष्याकृति, आकाश, वसाधातु, मृदुता इनपर गुरु का अधिकार है । इसकी देवता इन्द्र है । यह मंगल के द्वारा पराजित होता है।

पराशर—चर्म, गुरुः सफलः, पीताम्बरः—सफलता, पीला वस्त्र, चर्म इन पर गुरु का अधिकार है ।

सर्वार्थचिन्तामणि---गुरोः समभागदृष्टिः, दिनवली । गुरु की दृष्टि समभाग होती है, यह दिन में बलवान होता है ।

जयदेव---प्रभातं गुरुः, उदङ्मुखः, वणिक् गुरुः, देवेज्यः- स्थविरो ग्रहः, गुरुः सुखकरः सदा, जीवश्च जीवं प्राहुर्महाधिपाः । गुरु प्रातःकाल का स्वामी है, उत्तर की ओर मुख है । वृद्ध, व्यापारी इन पर इसका अधिकार है । यह सुखदायक है ।

कालिदास---भूदेवस्वगुरुस्वकर्मरथगोपादातनिक्षेपकाः मीमांसानिधिवाजिमाहिषबृहद्गात्रप्रतापा यशः । तर्कज्यौतिषपुत्रपौत्रजठरव्याधिद्विपात्संपदः वेदान्तं प्रपितामहादिपुरुषप्रासाद-गोमेधिकाः ।। ज्येष्ठ भ्रातृपितामहेन्द्रशिशिरर्तूग्राणि रत्नं वणिक् देहारोग्यविचित्रहर्म्यनृपसन्मानोरुदेवास्तपः । दानं धर्मपरोपकार-समदृक् चोदङ्मुखो वर्तुलं पीतं ग्रामचरोत्तरप्रियसखान्दोलादि-वाग्धोरणीः ।। मेदो मध्यपटौ नवीनगृहसौख्यवृद्धमन्त्रद्विजाः तीर्थाजानुसुवर्गलोकसरणं सौख्यप्रदानं गृहम् । धीः प्रज्ञाधिककाव्य-गोपुरसभासन्मोदसिंहासनब्रह्मस्थापनसार्वकालवलमासाः पात्र-वैडूर्यकौ ।। अग्निष्टोममहाफलं मधुरसः सत्त्वं सुखासौख्यके दीर्घः सौम्यपरोङिगते च कनकालंकारतन्त्रादिकः । वातश्लेष्मसुपुष्पराग निगमाभासा मृदुप्रस्तरं शैवोपासननैष्ठिकत्वचतुरतारण्यप्रयाणं गुरौ ।। इस मत के अनुसार गुरु के अधिकार में निम्नलिखित विषय हैं---

ब्राह्मण, गुरु, अपना काम, रथ, गाय, पैदल सेना, निक्षेपक, मीमांसा, गड़ा हुआ धन, घोडे, भैंस, बडे अवयव, प्रताप, कीर्ति, तर्कशास्त्र, ज्योतिष, पुत्रपौत्र, पेट के रोग, दोपाये प्राणी, वेदान्त, परदादा इत्यादि पुरखे, प्रासाद, गोमेधिक, बडे भाई, दादा,

शिशिर ऋतु, रत्न, व्यापारी, शरीर का आरोग्य, सुन्दर घर, राजसन्मान, तपश्चर्या, दान, धर्म, परोपकार, समदृष्टि, उत्तर दिशा, वर्तुलाकृति, पीला रंग, गांव के प्राणी, प्रिय मित्र, झूला, मेद, मध्य, वस्त्र, नया घर, बडे बूढों की सलाह, तीर्थ, सुख देनेवाला घर, बुद्धि, काव्य, गोपुर, सभा, सत्पुरुषोंका आनन्द, सिंहासन, ब्रह्मदेव की स्थापना, सभी काल, बल, महीने, वैडूर्य रत्न, अग्निष्टोम यज्ञ का फल, मीठी रुचि, सत्त्व, सुख-दुख, ऊंचाई, सोने के अलंकार, तन्त्र, वात, श्लेष्मरोग, पुष्पराग रत्न, असत्य शास्त्र, मृदु पत्थर, शिव की उपासना, नैष्ठिकता, चतुरता, प्रयाण।

विलियम लिली---दीखने में यह ग्रह सब से बडा है। इस का रंग भी सबसे अधिक उजला है। यह प्रकाश कुछ पीला स्वच्छ होता है। इसकी गति शनि से अधिक है। राशिचक्र की परिक्रमा यह १४ वर्ष ३१४ दिन १२ घंटों में पूरी करता है। इसकी मध्यम गति ४ मिनिट ५२ सेकिंड है। इसका अधिकतम उत्तरी शर १ अंश ३८ मिनिट है और दक्षिणी शर १ अंश ४० मिनिट है। यह कोई १२० दिन वक्री रहता है। इस काल में पहले पांच दिन और अन्त में चार दिन इसकी गति स्तम्भित होती है। यह पुरुष ग्रह है। स्वभाव से कुछ गरम, आर्द्र है। यह संयम, नम्रता, गंभीरता, न्याय और उत्तम भाग्य का कारक है।

उपर्युक्त मतों का विवेचन---

नैसर्गिक कुंडली में गुरु नवम और व्ययस्थान का स्वामी है। नवम स्थान से ज्ञान, बुद्धि का विकास, आध्यात्मिक गुरु

ज्ञानदान इनका विचार होता है। बारहवें स्थान से मोक्ष, विश्व-बन्धुता, परोपकार आदि का बोध होता है। गुरु शब्द का व्युत्पत्ति की दृष्टि से अर्थ होता है अज्ञान का नाशक (गु = अज्ञान, रु = नाशक)। हृदयस्थित अज्ञानरूप अन्धकार गुरु के उपदेश से प्राप्त ज्ञानरूप प्रकाश से विलीन हो जाता है। भारतीय परमार्थसाधना में अत्युच्च ज्ञान प्राप्त करने के लिए संसार और शरीर के प्रति आसक्ति छोडना पडता है। इसी के प्रतीक स्वरूप गुरु ग्रह के अधिकार के व्यक्ति ज्ञानी, विद्वान किन्तु सांसारिक सुख से दूर ही पाये जाते हैं। ज्ञान के स्वामित्व के कारण ही गुरु को देवों का मन्त्री कहा गया है।

वर्ण—इसका रंग कुछ पीला गोरा है, यह आंखों से ही स्पष्ट दिखाई देता है।

धातु—मेद पर इसका अधिकार माना है। इसका कारण शायद यह है कि इसका आकार सब ग्रहों से बडा है। कामला से पीडित व्यक्ति जैसा इसका रंग भी मेद वृद्धि का सूचक है। किन्तु इस ग्रह के अधिकार में जो व्यक्ति होते हैं उन्हें उत्तर वय में मेदवृद्धि होती है। पूर्ववय में नहीं। पराशर ने चर्म अर्थात त्वचा का स्वामी गुरु को माना है। किन्तु यह ठीक प्रतीत नहीं होता।

कोश—खजाने का कारकत्व गुरु के अधिकार में कहना ठीक नहीं है। गुरु के अधिकार के व्यक्ति द्रव्यसंचय नहीं कर सकते, न उन्हें उसकी फिक्र ही होती है।

वस्त्र—मध्यम—न बहुत ऊंचा, न बहुत हलका तथा पीत-पीला यह वर्णन शायद इसके रंग के अनुसार है।

धातु---रौप्य अर्थात चांदी का अधिकार गौर वर्ण के कारण इसे दिया है। किन्तु हमारे मत से कांसे का अधिकार गुरु को देना चाहिये।

ऋतु---हेमन्त अथवा शिशिर ऋतु--इस वर्णन का कारण समझ में नहीं आता। शायद इस ग्रह का शीत स्वरूप देखकर यह कल्पना की हो।

रुचि---मधुर रुचि---इन व्यक्तियों में तीखे चरपरे और मधुर ये दो रस प्रिय होते हैं। मूलतः यह रूक्ष, शीत और रुचिहीन है। ठंडी के कारण शायद इसे मधुर रुचि का स्वामी कहा है।

ऋग्वेद---इसके स्वामित्व का गुरु से सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है।

बल---सायंकाल में यह बलवान होता है ऐसा कहा है। किन्तु वाचन--लेखन के लिए सुबह और रात का ही समय उपयुक्त होता है अतः यह वर्णन ठीक नहीं।

लोक--विबुधलोक अर्थात स्वर्ग का यह अधिपति माना है। ज्ञानी पुरुष मृत्यु के बाद स्वर्ग में ही जाते हैं।

उभयतो गमन---ग्रहों के उदय की कल्पना रवि-विचार में स्पष्ट की है।

द्विपाद---ज्ञान की अधिकता मनुष्यादि दोपाये प्राणियों में पायी जाती है। अतः यह विषय गुरु के अधिकार में है।

आयु---कुछ लोगों ने तीस वर्ष और कुछ लोगों ने वृद्ध अवस्था मानी है। हमारे अनुभव से ४२ वें वर्ष के बाद की आयु पर गुरु का अधिकार प्रतीत होता है।

शाखाधिप---यह वैद्यनाथ का वर्णन है। इसके स्थान में कुछ शास्त्रकार जीवाधिप शब्द का प्रयोग करते हैं। इस वर्णन का उद्देश स्पष्ट नहीं है। फिर भी दूसरा शब्द अधिक उपयुक्त है।

देवता---इन्द्र स्वर्ग का अधिपति है। इसी का मन्त्री गुरु है। किन्तु उपासना में इन्द्र का उपयोग नहीं होता।

पुष्पराग---रंग की समानता के कारण यह रत्न गुरु का कहा है। इसका फल भी अनुभव में आता है। किन्तु वृषभ कन्या, तुला और मकर लग्न के व्यक्तियों ने इस रत्न का प्रयोग नहीं करना चाहिये। क्योंकि इन्हें गुरु अनिष्ट होता है। दशम-स्थान में हो तो भी इन्हें गुरु का फल अशुभ ही मिलता है। अन्य लग्नों में इस रत्न के उपयोग से लाभ होता है।

दिशा---ईशान्य--यह देवों का निवासस्थान है। भारत के उत्तर में हिमालय के परिसर में देवता रहते हैं ऐसी धारणा पुराने समय प्रचलित थी। अतः यह दिशा गुरु के स्वामित्व मे कही।

प्रदेश---गोदावरी से विन्ध्य तक का प्रदेश गुरु के अधिकार में है।

वर्ण---ब्राह्मण---ज्ञानदान का कार्य ब्राह्मण करते हैं अतः यह गुरु का वर्ण कहा। किन्तु कुछ शास्त्रकारोंने वैश्य वर्ण कहा उस का भी अनुभव आता है।

गुण---सत्त्वप्रधान--गुरु का शान्त और रूक्ष स्वरूप देख कर यह वर्णन किया है।

आकार---पुरुषाकृति--इस ग्रह के स्वामित्व के व्यक्तियों के विचार पौरुषपूर्ण होते हैं।

तत्व---आकाश--इस वर्णन का तात्पर्य स्पष्ट नहीं।

काल---महीना--इस वर्णन का उपयोग प्रश्न कुण्डली के विवरण में ही हो सकता है।

बल---इसे लग्न में बलवान माना है। किन्तु ऐसा हो तो पूर्व दिशा का स्वामित्व इसे क्यों नहीं दिया गया ?

मृदु---देखने में गुरु का तेज उग्र नहीं--मृदु है। इसके अधिकार के व्यक्तियों का शरीर भी मृदु ही होता है।

पराभव---वैद्यनाथने मंगलके द्वारा गुरु का पराजय कहा है। किन्तु हमारे अनुभव से यह कार्य चन्द्र का है।

वृक्ष---फल देनेवाले वृक्षों पर गुरु का अधिकार है।

दृष्टि---समदृष्टि--शिक्षक सभी शिष्यों को समान रूप से पढाता है अतः गुरु की दृष्टि सम कही है।

उदंङ्मुख---उत्तर की ओर गुरु थोडा चपटा है अतः यह वर्णन किया होगा।

इस वर्णन में कुछ विषय बुध ग्रह के समान हैं उनका विवेचन बुधविचार में देखना चाहिये।

प्रकरण ३

गुरु का स्वरूप

आचार्य---बृहत्तनुः पिंगलमूर्धजेक्षणो बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः। इसका शरीर बडा, केश व नेत्र लाल--पीले, बुद्धि श्रेष्ठ एवं प्रकृति कफप्रधान होती है।

कल्याणवर्मा—ईषत्पिंगललोचनः श्रुतिधरः सिंहाब्दनादः स्थिरः सत्त्वाढ्यः सुविशुद्धकांचनवपुः पीनोन्नतोरःस्थलः । ह्रस्वो धर्मरतो विनीतनिपुणो बद्धोत्कटाक्षः क्षमी स्यात्पीताम्बरधृक् कफात्मकतनुर्मेदप्रधानो गुरुः ।।

इसकी आंखें कुछ लाल पीले वर्ण की होती हैं, आवाज सिंह या मेघ जैसा गंभीर होता है, स्वभाव सात्त्विक और स्थिर होता है, वर्ण सोने जैसा गोरा और छाती पुष्ट होती है। कद छोटा होता है। यह धर्मनिष्ठ विनयशील, समाधान, कफ प्रकृतिका, पीले वस्त्र पहननेवाला और मोटा होता है।

गुणाकर—उत्कृष्टबुद्धिः कलधौतगौरः । प्राज्ञो गुरुः । इसकी बुद्धि उत्तम और वर्ण सोने जैसा गोरा होता है। यह ज्ञानी होता है। शेष वर्णन कल्याणवर्मा के समान है।

पराशर—बृहद्गात्रविशारदः । अवयव बडे होते हैं। यह सब शास्त्रोंमें प्रवीण होता है।

वैद्यनाथ—वृहदुदरशरीरः सकलगुणसमेतः कपिलरुचिकचाक्षः अलघुनृपतिचिन्हः । इसका पेट और शरीर बडा होता है, केश और आंखें काली होती हैं। यह सब गुणों से और कई राजचिन्हों से युक्त होता है।

सर्वार्थचिन्तामणि—हास्यप्रियः पित्तकफानिलात्मा सद्यः-प्रतापी ननु पुंश्चलश्च । वृहस्पतिस्तुंदिलगात्रयष्टिः कफात्मकः श्रेष्ठमतिः सुविद्वान् ।। यह हंसमुख होता है। पित्त, कफ और वायु का समान प्रमाण होता है। यह शीघ्र ही प्रतापी होता है। व्यभिचारी, मोटा, बुद्धिमान, विद्वान और कफप्रकृति का होता है।

ढुंढिराज—ह्रस्वाकारश्चारुचामीकराभः सम्यक्सारः सुस्वरोदारवुद्धिः। दक्षः पिंगाक्षः कफी चातिमांसः प्राज्ञः सुज्ञः कीर्तितो जीवसंज्ञः॥ इसका कद नाटा, वर्ण सोने के समान, आवाज मधुर, वुद्धि उदार तथा वल अच्छा होता है। आंखें लालपीलीं और प्रकृति कफप्रधान होती है। यह दक्ष और ज्ञानी होता है।

विलियम लिली—यह सीधे ऊंचे कद का, लाल-पीले वर्ण का और सुन्दर होता है। आंखें बडीं, लंवी और कुछ गोल होती हैं। मस्तक ऊंचा, केश मृदु और लाल-पीले वर्ण के होते हैं। डाढी वडी और पेट भी वडा होता है। इसके पुठ्ठे और पैर मजवूत और प्रमाणबद्ध होते हैं। किंतु पैर के तलुवे बहुत वडे दीखते हैं। इसका वोलना गम्भीर और सूझबूझ का होता है। यह **पूर्व की ओर** हो तो—त्वचा अधिक स्वच्छ होती है। वर्ण शहद के समान—लाल-गोरा होता है। आँखें बडीं और शरीर मोटा होता है। प्रायः दाहिने पैर पर जन्मजात चिन्ह होता है। यह **पश्चिम की ओर** हो तो—आकृति सुन्दर और कद नाटा होता है। केश लाल-पीले, मृदु होते हैं। मस्तक के पास कुछ गंजा होता है। मध्यम आयु के ये व्यक्ति निर्णय अच्छी तरह और गम्भीरतापूर्वक ले सकते हैं। यह **कुण्डली में शुभ** हो तो—यह उदार, विश्वसनीय, लज्जाशील और अच्छी बातों में महत्त्वाकांक्षी होता है। सभी कामों में यह सचाई का व्यवहार चाहता है और सभी को मदद करने के लिए सत्कृत्य करता है। यह आदरणीय और धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। यह मधुर और प्रिय बोलता है। स्त्रीपुत्रों पर बहुत प्रेम करता है। वृद्ध पुरुषों का आदर करता है। गरीबों को उदारतापूर्वक

मदद करता है। कठोर कृत्यों का यह तिरस्कार करता है। यह न्यायी, बुद्धिमान, होशियार, कृतज्ञ और सद्गुणी होता है। कुण्डली में यह अशुभ हो तो–पैतृक सम्पत्ति का दुरुपयोग करता है, धार्मिक दृष्टि से दाम्भिक होता है, हठपूर्वक झूठे धार्मिक तत्त्वों का प्रतिपादन करता है। इसे आशंका होती है कि हर कोई इसे ठगाना चाहता है। अज्ञानी, बेपरवाह और मित्रता की कद्र न करनेवाला होता है। क्रियाशक्ति थोडी और मन्द होती है। मित्रमंडली में अपने व्यवहारसे नीचता प्रकट करता है।

उपर्युक्त मतों का विवेचन---इस वर्णन में शारीरिक वर्णन और रूप-रंग का भाग गुरु के प्रत्यक्ष अवलोकन से बताया है। गुरु बडा है इसलिए शरीर मोटा होता है यह फल कहा। गुरु पीला दीखता है इसलिए शरीर का रंग पीला-गोरा कहा। चेहरे पर सात्विक तेज होता है। यह चेहरा मंगल जैसा तेजस्वी नही होता। कामला से पीडित व्यक्ति के समान पीलासा रंग होता है। सिंह के समान गंभीर आवाज यह विशिष्ट फल मेष, सिंह या धनु राशि में गुरु हो तो अनुभव में आता है। अन्य गुणधर्म नैसर्गिक कुण्डली के नौवें और बारहवें स्थान के हैं। कुण्डली में गुरु बलवान हो तो विद्वान, बुद्धिमान, संशोधक, लेखक, व्यवहार से उदासीन, लोगों की परवाह न करनेवाला, ऐसा यह व्यक्ति होता है। खुद भूखा रह कर भी यह दूसरों की भूख दूर करना चाहता है। लोगों की मुश्किलों को हल करने की हमेशा कोशिश करता है। समय और परिस्थिति को देखकर वर्तन करता है। समाज में किसी नये तत्त्व के लिए बहुत प्रयत्न करता है और सुधारवादी होता

है। सामाजिक कार्यों में ध्यान देता है। भाषाशास्त्र और कानून का जानकार होता है। लोगों से मिलजुल कर रहने की अपेक्षा किसी विशिष्ट ध्येय की प्राप्ति के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। पैसे, कपडे और खानेपीने के बारे में ये फिक्र नही करते और इन्हें इन चीजों की प्राप्ति में तकलीफ ही होती है। किन्तु आयु के अन्तिम भाग में ये जरूर यशस्वी होते हैं। गुरु स्त्री राशि में हो तो पहले कुछ समय नौकरी कर बाद में स्वतंत्र व्यवसाय करते हैं। पुरुषराशि में गुरु हो तो प्रारंभ से ही स्वतन्त्र व्यवसाय होता है। किन्तु दशम स्थान में गुरु हो तो आयुभर नौकरी करनी पडती है। इन लोगों का शरीर भरा-पूरा, कद सुदृढ, वर्ण पीला-गोरा, मांसल आकृति होती है। पूर्णवय में साधारण और उत्तर वय में मोटा शरीर होता है। आंखें बडीं और तेजस्वी होती है। भौहों के बाल लंबे किन्तु सुन्दर और धनुष्याकृति होते हैं। केश महीन, नरम और चमकीले होते हैं। सामने के दांत अधिक बडे दीखते हैं। ठोडी बडी और दो भागों में बंटी सी दीखती है। गाल मांसल होते हैं। पैरों पर केश अधिक होते हैं। भालप्रदेश चौडा होता है और उसपर पसीना बहुत आता है। ३६ वें वर्ष के बाद वात का प्रादुर्भाव होता है और पसीना बढता है–बार बार कपडे बदलने पडते हैं। किसी बिल्डिग में ऊपर चढना हो तो थक जाते हैं और श्वास लगता है। इन लोगों को सब्जी खाने का बहुत शौक होता है इससे शरीर में उष्णता बढती है। इन्हें खानदान का बहुत अभिमान होता है और उसकी रक्षा के लिये हमेशा कोशिश करते हैं। ये लोग स्कूल, कॉलेज, आश्रम आदि

संस्थाएं स्थापन करते हैं। नगरपालिका, जिला बोर्ड, विधानसभा आदि में इनका चुनाव होता है।

कुण्डली में गुरु दूषित हो तो—वे व्यक्ति फिजूल अभिमान करते हैं। धंदे बहुत करते हैं किन्तु उनमें नुकसान ही अधिक होता है। खुद की स्तुति करके ये दूसरों को तुच्छ समझते हैं। खुद को समझदार और दूसरों को मूर्ख मानते हैं। हमेशा लोगों की निंदा करते रहते हैं। पत्नी के साथ ये पांच मिनिट स्थिरता से नहीं बोल पाते किन्तु अन्य स्त्रियों के साथ घुलमिल कर बातें करते हैं। व्यभिचारी, मुफ्त में प्रेमके इच्छुक होते हैं। इनकी पढाई अधूरी होती है किन्तु खुदको बहुत सुशिक्षित मानते हैं। लोगों पर रौब जमाने की कोशिश करते हैं। सुस्थापित संस्थाओं में गडबडी पैदा करते हैं।

सामान्यत:—मेष, मिथुन, सिंह, धनु और मीन राशियों में गुरु उत्तम फल देता है। तुला, वृश्चिक, मकर व कुम्भ में मध्यम फल मिलता है तथा वृषभ, कन्या और कर्क में अशुभ फल मिलता है।

प्रकरण ४

कारकत्वविचार

कल्याणवर्मा—मांगल्यधर्मपौष्टिकमहत्वशिक्षानियोगपुरराष्ट्रम् यानासनसुवर्णधान्य (वेश्म) पुत्रप्रभुर्जीवः।। मंगल कार्य, धर्म, शरीर की पुष्टता, बडप्पन, शिक्षा, नियोग, शहर, देश, वाहन,

आसन, नींद, सोना, धान्य, (घर) और पुत्र इन विषयों पर गुरु का प्रभुत्व है। इन में नियोग शब्द के कई अर्थ हैं-उपयोग, काम, आज्ञा, प्रतिदिन के लिए नियुक्त काम, प्रयत्न, निश्चय, आवश्यकता, पति की मृत्यु होने पर देवर के सम्बन्ध से पुत्रोत्पत्ति करना-इन में यथायोग्य अर्थ का उपयोग करना चाहिये।

वैद्यनाथ-प्रज्ञावित्तशरीरपुष्टितनयज्ञानानि वागीश्वरात्। आचार्यदेवगुरुभूसुरशापदोषैः शोकं च गुल्मरुजमिद्रगुरुः करोति॥ बुद्धि, धन, शरीर की पुष्टता, पुत्र और ज्ञान का विचार गुरु से करना चाहिये। आचार्य, देव, गुरु या ब्राम्हण के शाप से दुःख होना तथा गुल्मरोग यह भी गुरु का कारकत्व है।

पराशर-स्वकर्मयजनदेवब्राह्मणधनगृहकांचनवस्त्रपात्रमित्रांदोलनादिकारको गुरुः। अपना काम, यज्ञ करना, देव और ब्राह्मण, घर, कपडे, सोना, बर्तन, मित्र तथा पालकी में बैठनेका सम्मान ये विषय गुरु के अधिकार में हैं।

गुणाकर-धिषणात् सुखंच। सुख का विचार गुरु से करना चाहिये।

सर्वार्थचिन्तामणि- वाग्धोरणीमंत्रराजतंत्रनैष्ठिकगजतुरग-यामनिगमभावबोधकर्मपुत्रसंपज्जीवनोपायकर्मयोगसिंहासनकारको गुरुः॥ वाणी, दूरदर्शिता, वेदमंत्र, राजनीति, नैष्ठिक कार्य, हाथीघोडे, शास्त्र, पढानेका काम, पुत्र, जीविका के साधन, कर्मयोग (फल की अपेक्षा छोडकर कर्म करना) तथा राजगद्दी ये विषय गुरु के अधिकार में हैं।

जीवनाथ– वचनपटुत्वतुरंगमसौख्यम् तंत्रविचारनृपालविनोदम् । संततिसौख्यमलं निगमार्थज्ञानमुतांगवलं गुरुतश्च ॥ बोलने में कुशलता, घोडे का सुख, तंत्र का विचार, राजा की प्रसन्नता, पुत्रसुख, वेदों का ज्ञान तथा शरीर का बल इन विषयों का विचार गुरु से करना चाहिये ।

मन्त्रेश्वर–ज्ञानं सद्गुणमात्मजं च सचिवं स्वाचारमाचार्यकं माहात्म्यं श्रुतिशास्त्रधीस्मृतिमतिं सर्वोन्नतिं सद्गतिम्। देवब्राह्मणभक्तिमध्वरतपःश्रद्धांच कोशस्थलं वैदुष्यं विजितेंद्रियं धवसुखं सम्मानमीडचाह्वयाम् ॥ गुल्मान्त्रज्वरशोकमोहकफजान् श्रोत्रार्तिमोहामयान् देवस्थाननिधिप्रपीडनमहीदेवेशशापोद्भवम् । रोगं किन्नरयक्षदेवफणभृद्विद्याधराद्युद्भवं जीवः सूचयति स्वयं बुधगुरूत्कृष्टापचारोद्भवम् ॥ ज्ञान, सद्गुण, पुत्र, मन्त्री, आचारधर्म, गुरु, बडप्पन, वेदशास्त्रों का ज्ञान, सभी प्रकार की उन्नति, मरणोत्तर शुभ गति, देवब्राह्मणों पर श्रद्धा, यज्ञ तथा तप पर श्रद्धा, खजाना, विद्वत्ता, जितेन्द्रियता, पति का सुख, पूज्यों की कृपा, सम्मान ये विषय गुरु के अधिकार में हैं । गुरु के कारकत्व में निम्नलिखित रोगों का समावेश होता है–गुल्म, अंतडियों के विकार, ज्वर, कफ, शोक. मूर्छा, कान के रोग, देवस्थान के पैंसे हडप करने से या ब्राह्मण के शाप से उत्पन्न रोग, यक्ष, किन्नर, नाग आदि देवों द्वारा उत्पन्न किये हुये रोग ।

विद्यारण्य–गुरुणा देहपुष्टिश्च पुत्रार्थधनसम्पदः । शरीर की पुष्टता, पुत्र तथा धन यह गुरु का कारकत्व है ।

पाश्चात्य मत–सम्मान, भाग्य, कीर्ति, वृद्धि, यश, मैत्री का संरक्षण, पालनपोषण, बहुत सन्तति होना, बहुफल मिलना,

कानून बनानेवाले लोग, न्यायदेवता, राजनीतिज्ञ, न्यायाधीश, धर्मगुरु, शकुन जाननेवाले, वकील, विद्यार्थी, डाक्टरेट उपाधि प्राप्त करनेवाले, विश्वविद्यालय, कुलगुरु, उपकुलगुरु, दीक्षान्त समारोह, ऊनी कपडे के कारखाने, जांघें, पैर, दाहिना कान शरीरांतर्गत शोषण शक्ति इन विषयों पर गुरु का अधिकार है। इसके कारकत्व में निम्नलिखित रोगों का अन्तर्भाव होता है–जलोदर, यकृत के रोग, फेंफडे के रोग, मस्तिष्क की रक्त-वाहिनियों के रोग, आंतडियों की सूजन, हृदय को धक्का पहुंचना, पेट में शूल होना, पीठ की रीढ में दर्द होना, घटसर्प, पसलियों के तथा रक्तवाहिनियों के रोग, खून दूषित होना और लम्बे ज्वर।

उपर्युक्त मतों का विवेचन:-- कल्याणवर्मा ने नियोग शब्द का उल्लेख किया है। देवर से पुत्रोत्पत्ति कराना यह इस शब्द का अर्थ लिया जाय तो इस कारकत्व का वर्तमान समय में कोई उपयोग नही क्योंकि नियोग की यह पद्धति प्राचीन समय में ही बन्द हो चुकी है। मन्त्रेश्वरने जितेन्द्रियत्व यह कारकत्व कहा यह अनुभव के और पौराणिक वर्णनों के अनुकूल ही है। पुराणों में कहा है कि गुरु की पत्नी तारा ने चन्द्र से व्यभिचार कर बुध को जन्म दिया था। ऐसे प्रकारों से गुरु को वैराग्य उत्पन्न होना स्वाभाविक है। अत्यधिक विद्वत्ता के परिणामस्वरूप स्त्रीसुख कम ही मिलता है। हमेशा ग्रन्थपठन या संशोधन में व्यस्त रहने से स्त्री की ओर ध्यान नही दे पाते। इस लेखक ने पतिसुख यह कारकत्व कैसे कहा यह स्पष्ट नही। वस्तुतः गुरु न तो स्त्रीकारक है, न पतिकारक। इसी तरह शोक

और मोह ये वर्णन भी गलत मालूम होते हैं क्योंकि शोक शनि का विषय है और मोह शुक्र का। कोशस्थल का कारकत्व भी शुक्र का है। गुरु से इसका सम्बन्ध प्रतीत नही होता। हर किसी प्रकार का सुख, दीक्षागुरु, आध्यात्मिक गुरु, राजा के समान अधिकार, लोकसंग्रह, ग्रहणशक्ति, तीव्र बुद्धि, ग्रंथलेखन, स्थिर वृत्ति, संकट काल में अतिधीरता, संकटग्रस्तों को मदद करने की इच्छा, कर्तृत्व का प्रभाव, सारासार विचार, विवेक, समयसूचकता, निःस्पृहता, निर्भयता, सादे रहनसहन की रुचि, रुचिकर खाने की इच्छा, धान्य ये गुरु के अन्य कारकत्व हैं जिन पर विशेष विचार करने की जरूरत नही। मेरे विचार से–गुरु के कारकत्व में विशेषतः निम्नलिखित विषयों का अन्तर्भाव होता है–दूसरी भाषा (Second Language), बीजगणित, वैद्यक, आरोग्यशास्त्र, हिन्दू कानून, सिविल कानून, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, विद्वत्ता की उच्च उपाधियां-पी. एच्. डी. डी. लिट् आदि, शिक्षा विभाग, कार्यकारी अधिकारी, फिल्म सेन्सार बोर्ड, सचिवालय, राज्यपालों के सलाहगार, शाला, कालेज, शिक्षक, प्राध्यापक, बॅरिस्टर।

कारकत्व का वर्गीकरण—

जन्मकुण्डली में उपयोगी कारकत्व–मांगल्य, धर्म, पौष्टिक, महत्त्व, शिक्षा, पान, सुवर्ण, धान्य, पुत्र, प्रज्ञा, ज्ञान, वित्त, शरीरपुष्टि, शाप, शोक, गुल्म, कामला, वातरोग, पाश्चात्य मत में उल्लिखित सभी रोग, स्वकर्म, यजन, गृह, वस्त्र, पात्र, मित्र, आन्दोलन, सुख, वाग्धोरणी, मन्त्र, राजतन्त्र, नैष्ठिक, गज,

तुरग, बोधकर्म, जीवनोपाय, कर्मयोग, सिंहासन, वचनपटुता, तन्त्रविचार, प्रवचनकार, व्याख्याता, लेखक, प्रकाशक विडम्बन-काव्य, राजकृपा, सचिव, आचार्य, शास्त्र, धी, स्मृति, मति, सर्वोन्नति, भक्ति, अध्वरतपःश्रद्धा, वैदुष्य, धवसुख, सम्मान, दया, अन्त्रज्वर, मोह, कफज रोग, देवस्थाननिधि प्रपीडन से उत्पन्न रोग, भाग्य, कीर्ति, वृद्धि, यश, मैत्रीसंरक्षण, विधानसभा सदस्य, धर्मगुरु, दीक्षागुरु, आध्यात्मिक गुरु, न्यायाधीश, वकील, विद्यार्थी, ऊनी तथा सूती कपडे के कारखानदार, व्यापारी, जांघें, पैर, दाहिना कान, किसी भी प्रकार का सुख. राजा जैसा अधिकार, लोकसंग्रह, ग्रहणशक्ति, तीव्रबुद्धि, ग्रन्थकर्तृत्व, स्थिरवृत्ति, संकट में धीरता कर्तृत्व का प्रभाव, संकटग्रस्तों को मदद करने की इच्छा, सारासार विचार, विवेक, समयसूचकता, निःस्पृहता, निर्भयता, सादा रहनसहन, रुचिकर अन्न ।

शिक्षा में उपयोगी कारकत्व---मेरे मत में कारकत्व का जो वर्णन किया है उन विषयों का अच्छा अध्ययन होने के लिए गुरु लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम या एकादश स्थान में शुभ राशि में होना चाहिये । ऐसे योग के डाक्टरों की प्रेक्टिस अच्छी चलती है ।

मेदिनीय ज्योतिष में उपयोगी कारकत्व---कोशस्थल, पुर, राष्ट्र, न्याय व राज्यव्यवस्था, विधानसभा सदस्य, मन्त्री, मन्त्रिमंडल, संसद, विद्यापीठ, कुलगुरु, उपकुलगुरु, रजिस्ट्रार, दीक्षान्त समारोह ।

निरुपयोगी कारकत्व---नियोग, आसन, शयन, देव, ब्राह्मण, मन्त्र, निगम इन विषयों का फलनिर्देश में विशेष उपयोग नही होगा ।

व्यवसाय के विषय में गुरु के कारत्व का वर्णन नही किया क्यों कि सभी व्यवसायों में गुरुप्रधान व्यक्ति यशस्वी होते हैं। व्यवसाय के विषय में गुरु से तभी विशेष विचार करना चाहिये जब वह लग्न, सप्तम या दशम स्थान में हो। अन्य स्थानों में इस दृष्टि से विशेष विचार नही हो सकता।

प्रकरण ५ वां

द्वादशभावफल

प्रथम स्थान में गुरु के फल

आचार्य तथा गुणाकर–विद्वान, प्राज्ञः। यह विद्वान होता है।

कल्याणवर्मा––होरासंस्थे जीवे सुशरीरः प्राणवान् सुदीर्घायुः। सुसमीक्षितकार्यकरः प्राज्ञो धीरस्तथार्यश्च ॥ यह सुन्दर, बलवान, दीर्घायु, विचारपूर्वक काम करनेवाला, बुद्धिमान धैर्यशाली तथा सदाचारी होता है।

वैद्यनाथ––जीवे लग्नगते चिरायुरमलज्ञानी धनी रूपवान्। यह दीर्घायु, निर्मल ज्ञान से युक्त, धनवान और रूपवान होता है।

पराशर––जीवो लग्ने यदि वा केन्द्रगः। तस्य पुत्रस्य दीर्घायुर्धनवान् राजवल्लभः॥ यह धनवान, राजा को प्रिय होता है। इसके पुत्र दीर्घायु होते हैं।

वसिष्ठ––सुखकान्तिदाः स्युः। भयम्॥ यह सुखी और कान्तिमान होता है किन्तु मन में हमेशा भय बना रहता है।

गर्ग—कविः सुगीतः प्रियदर्शनः शुचिर्दाताज्यभोक्ता नृपपूजितश्च । सुखी च देवार्चनतत्परश्च धनी भवेद्देगुरौ तनुस्थे ।। यह कवि, गायक, देखने में प्रिय, पवित्र, उदार, उपभोगों का भोक्ता, राजाद्वारा सन्मानित, सुखी, देवपूजा में तत्पर और धनवान होता है । गुरुर्धनुपि मीनें च तथा कर्कटकेपि च । लग्न-त्रिकोणकेन्द्रे वा तदारिष्टं न जायते ।। गुरु लग्न में, त्रिकोण में या केन्द्र में धनु, मीन या कर्क राशि में हो तो आयुष्य में संकट नही आते ।

तनुस्थानगते जीवे गौरवर्णतनुर्भवेत् । वातश्लेष्म शरीरे च बाल्ये च सुखसंपदः ।। इसका वर्ण गोरा होता है, शरीर में वात और श्लेष्म रोग होते हैं और बचपन में सुख मिलता है ।

मिथ्यापवादजा पीडा शत्रूणां विषयदायिका । राजतो मानमतुलं धनप्राप्तिरनेकधा ।। झूठी अफवाहों से तकलीफ होती है, शत्रुओं के लिए विषवत् होता है, राजा द्वारा सन्मान और बहुत धन प्राप्त होता है ।

जातककलानिधि—क्रूरदृष्टिसमायोगे व्यथा काचित् प्रजायते। यो यो विघ्नः समुत्पन्नः स सद्यश्च विनश्यति ।। क्रूर ग्रह से या उसकी दृष्टि से युक्त हो तो कुछ पीडा होती है अन्यथा इस गुरु से जो जो विघ्न उत्पन्न हो उसका तत्काल नाश होता है । स्थिरप्रकृतिदः । शरीर दृढ होता है–(स्वभाव चंचल नही होता)। प्रकृत्या स भवेत् वृद्धो मान्यः सर्वजनेषु च । यह स्वभाव से प्रौढ और सभी लोगों में सन्माननीय होता है ।

बृहद्यवनजातक—विद्यासमेतोऽभितो हि राज्ञा प्राज्ञः कृतज्ञो नितरामुदारः । नरो भवेच्चारुकलेवरश्च तनुस्थिते देव-

गुरौ बलाढ्यः ।। विद्यावान राजा को प्रिय, बुद्धिमान, कृतज्ञ, बहुत उदार, सुन्दर शरीर का और बलवान होता है। प्रजा-मष्टमवत्सरे सुरगुरुः । आठवें वर्ष सन्तति होती है। ढुंढिराज का मत इसी प्रकार है।

नारायणभट्ट—गुरुत्वं गुणैर्लग्नगे देवपूज्ये सुवेशी सुखी दिव्यदेहोऽल्पवीर्यः। गतिर्भाविनी पारलोकी विचिन्त्या वसूनि व्ययं संबलेन व्रजन्ति ।। यह गुणों से श्रेष्ठ होता है—लौकिक शिक्षा की दृष्टि से शिक्षक अथवा आध्यात्मिक गुरु होता है। इसका पोशाक अच्छा होता है। सुखी, भव्य शरीर का किन्तु अल्पवीर्यवाला होता है। परलोक की गति के बारे में चिन्ता करता है। उपभोग से धन का व्यय करता है। **जीवनाथ** का मत ऐसा ही है।

काशीनाथ—लग्ने गुरौ सुशीलश्च प्रगल्भो रूपवानपि। नृपाभीष्टश्च नीरोगी ज्ञानी सौम्यश्च जायते ।। यह शीलवान, प्रौढ बुद्धिका, रूपवान, राजा को प्रिय, नीरोग, ज्ञानी और सौम्य स्वभाव का होता है।

आर्यग्रन्थकार—विविधवस्त्रविपूर्णकलेवरः कनकरत्नधनः प्रियदर्शनः। नृपतिवंशजनस्य च वल्लभः भवति देवगुरौ तनुगे नरः ।। यह विविध कपडे पहनता है, सोने रत्न आदि धन से युक्त होता है, सुन्दर होता है तथा राजा को और कुल के लोगों को प्रिय होता है।

जयदेव—विद्वान् नृपेज्यः सुतरामुदारो दारादिसौख्यस्तनुगो गुरुश्चेत्। यह विद्वान, राजा द्वारा सन्मानित, बहुत उदार, और स्त्रीं आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

जागेश्वर——यदा देवपूज्यो विलग्ने नराणां जनै पूज्यते भुज्यते नो कदन्नं । शरीरं दृढं कोमलं कान्तियुक्तं मनश्चिन्तितं नैव व्यक्तं विधत्ते ।। लोगों द्वारा सन्मानित, कदन्न कभी न खानेवाला, कोमल किन्तु दृढ और कान्तिमान शरीर का तथा मन के विचार स्पष्ट न कहनेवाला ऐसा यह व्यक्ति होता है। प्रधानो नराणाम् । यह मनुष्यों में मुख्य होता है ।

पुंजराज——लग्नस्थे च द्वितीये वा जीवे स्यान्मधुरप्रियः । मधुरं वचनं वक्ति सत्यं सर्वहितावहं ।। यह सत्य, सब लोगों के लिए हितकर तथा मीठे वचन बोलता है । इसे मीठे पदार्थ प्रिय होते हैं ।

मन्त्रेश्वर——सुकृतिः सात्मजः । सदाचारी तथा पुत्रों से युक्त होता है ।

गोपाल रत्नाकर——यह गुरु यदि स्वक्षेत्र में हो तो छहों शास्त्रों में प्रवीण, स्नेहल, विद्वान, दीर्घायु, राजाद्वारा सन्मानित, युक्तिमान एवं विपुल सन्तति से युक्त होता है ।

घोलप——यह संसार-व्यवहार में चतुर, प्रख्यात, पूज्य, शत्रुओं का घात करनेवाला, धर्मशील, बुद्धिमान, शुद्धचित्त, पवित्र, मित्रों से युक्त, तेजस्वी, पुराणशास्त्र सुनने में रुचि रखनेवाला, सर्वमान्य और धनवान होता है ।

हिल्लाजातक——प्रज्ञाकरोष्टमे वर्षे लग्नसंस्थो बृहस्पतिः । आठवें वर्ष ज्ञान प्राप्त होता है ।

लखनऊ नबाब——मुश्तरी यदि भवेद् यदिताले साहिबः खुशदिलो मनुजः स्यात् । आमिलः पुरसखुन सरदारः फारसो हि

कविरो महबूब: ।। यह तेजस्वी और अधिकारसम्पन्न, आनंदी, ईश्वरभक्त, बहुतों का स्वामी, सरदार, कवि होता है ।

पाश्चात्य मत--यह सुन्दर और नीरोग होता है । यह गुरु अग्निराशि में हो तो उदार, धैर्यशाली, स्नेहल, विजयी, मित्रों से युक्त, अभिमानी होता है । यह पृथ्वीराशि में हो तो स्वार्थी, अभिमानी, विश्वासु, मदद करनेवाला होता है । यह जलराशि में हो तो ऐश-आरामी, खिलाडी, पैसेकी फिक्र न करनेवाले, धन प्राप्त करनेवाले और उदार होते हैं । यह वायुराशि में हो तो न्यायी, उदार, समतोल आचरण के, निःपक्षपाती, विश्वासु, हरेक को मदद करने के लिए तत्पर होते हैं । सामान्यत: लग्न में किसी भी राशि में गुरु हो तो वह व्यक्ति उदार, स्वतन्त्र, प्रामाणिक, सच बोलनेवाले, न्यायी, धार्मिक तथा कीर्ति प्राप्त करनेवाले, और शुभ कार्य करनेवाले होते हैं । इनका भाल बड़ा और तेजस्वी दिखता है ।

नारायण--मृगराशिं परित्यज्य स्थिते लग्ने बृहस्पतिः । करोति स महीपालं धनपो वा भवेन्नर: ।। मकर से अन्य किसी राशि में गुरु लग्न में हो तो वह राजा या बडा धनवान होता है ।

अज्ञात--सुखी । उच्चे पूर्णफलानि । षोडशवर्षे महाराजयोग: । अरिनीचपापक्षेत्रे पापयुते वा नीचकर्मवान् मनश्चंचलत्ववान् । मध्यायु:, पुत्रहीन:, स्वजनपरित्यागी, कृतघ्न:, गर्विष्ठ:, बहुजनद्वेषी, व्यभिचारवान्, संचारवान् पापक्लेशभोगी ।। यह सुखी होता है । यह गुरु उच्च में हो तो शुभ फल पूरे मिलते हैं। सोलहवें वर्ष में महाराजयोग (बडे अधिकारपद की प्राप्ति

का योग) होता है। यह शत्रुग्रह की राशि में, नीच राशि में, पापग्रह की राशि में या पापग्रह के साथ हो तो वह नीच काम करनेवाला और चंचल मनका व्यक्ति होता है। आयु मध्यम होती है। पुत्र नही होते। अपने लोगों को छोड देता है। कृतघ्न, गर्विष्ठ, बहुतों से वैर करनेवाला, व्यभिचारी, भटकने-वाला और दुखी होता है।

हरिवंश—लग्नस्थे सुरराजमन्त्रिणि नरो राजप्रतापी भवेत् विद्यावाहनभोगभूषणधृतिप्रज्ञाप्रभावाधिकः ख्यातो वंशधरादिको गुणगणैः सन्त्यक्तवैरो बली गौरांगः सुभगः सुभामिनियुतो दीर्घायुरारोग्यवान् ॥ यह राजा जैसा प्रतापी, विद्यावान, वाहनों से सम्पन्न, उपभोग प्राप्त करनेवाला, धैर्यशाली, बुद्धिमान, प्रभावी, प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न, गुणी, वैर न करनेवाला, बलवान, गोरा, सुन्दर, अच्छी पत्नी से युक्त, दीर्घायु तथा नीरोग होता है।

तत्त्वप्रदीपजातक—लोके वेदे प्रसिद्धाः सकलफलहरा नीचगाः पापखेटाः स्वोच्चा नैव प्रशस्ता विमलफलहरा रन्ध्ररिः-फारियुक्ताः। जीवः स्वस्थानहन्ता वदति मुनिवरो दृष्टिरस्य प्रशस्ता सौरिः स्वस्थानपालः परमभयकरी दृष्टिरस्य प्रणष्टा ॥ ग्रह नीच राशि में हों तो सभी फल का हरण करते हैं और उच्च राशि में हों तो भी यदि षष्ठ, अष्टम या व्यय स्थान में हों तो सभी शुभ फल का नाश करते हैं। गुरु जिस स्थान में हो उस स्थान के फल का नाश करता है किन्तु जिस पर गुरु की दृष्टि हो उस स्थान के फल अच्छे मिलते हैं। इसके

विपरीत शनि जिस स्थान में हो उसके फल अच्छे मिलते हैं किन्तु उसकी दृष्टि जिस स्थान पर हो उसके फलों का नाश होता है।

मेरे विचार–उपर्युक्त शास्त्रकारों ने शुभफल कहे हैं उनका अनुभव मेष, सिंह, धनु, मिथुन तथा मीन राशियों में आता है। अन्य राशियों में अशुभ फल मिलते हैं। इसका वर्ण गोरा कहा है किन्तु काला वर्ण भी पाया जाता है। वात और श्लेष्म विकार होते हैं। वृषभ, कन्या, मकर, कुंभ या वृश्चिक में हो तो आयु के उत्तरार्ध में वातरोग होते हैं। मिथुन, तुला इन राशियों में शरीर अच्छा और वर्ण गोरा होता है। वृहद्यवन-जातक में आठवें वर्ष सन्तति का फल कहा है। यह शारीरिक दृष्टिसे असम्भव है। अत: विवाह के बाद आठवें वर्ष में सन्तति होगी ऐसा इसका अर्थ समझना चाहिए। [इस प्रकार हिल्ला-जातक में आठवें वर्ष ज्ञान प्राप्ति का योग कहा यह उन्ही विभूतियों के बारे में ठीक हो सकता है जो जन्मजात ज्ञानी हैं। हुबली के सिद्धारूढ स्वामी की कुण्डली में लग्न में गुरु-चन्द्रयुति थी। महाराष्ट्र के एक और सन्त गोंदवलेकर महाराज के लग्न में धनु राशि में गुरु था। श्रीमद् रामकृष्ण परमहंस के लग्न में मीन राशि में गुरु और शुक्र थे। अन्यत्र सामान्यत: १६ वें वर्ष तक खेलकूद की उम्र होती है अत: आठवें वर्ष ज्ञानप्राप्ति कठिन है। अज्ञातने १६ वें वर्ष महाराजयोग कहा है। इस योग का अनुभव भी सामान्यत: सम्भव नही है। इस आयु में राजपद या तो किसी राजपुत्र को मिल सकता है या किसी राजा

के द्वारा गोद लेने से मिल सकता है। अन्यत्र उच्चवर्गीय बालक इस आयु में पढते हैं और व्यापारियों के पुत्र व्यापार आरम्भ करते हैं अतः इन्हें राजयोग होना मुश्किल ही है। मकर को छोड़ अन्य राशियों में लग्नस्थ गुरु से राजपद मिलता है यह भी इसी तरह का अतिरंजित वर्णन है जो अनुभव में नही आता। उच्च गुरुके पूर्ण फल मिलते हैं ऐसा अज्ञात ने कहा है किन्तु मेरे विचार से ये पूर्ण फल अशुभ ही होते हैं। नीच काम करना, व्यसनासक्त होना, व्यभिचार करना, बुरा आचरण ये फल प्राप्त होते हैं यदि कर्क राशि के गुरु के साथ मंगल या शुक्र के अनिष्ट योग हों। गर्ग के अनुसार कर्क, धनु, मीन लग्न में गुरु हो तो आयुभर संकट नही आते। यह अनुभव धनु और मीन के बारे मे तो ठीक है। किन्तु कर्क लग्न में गुरु हो तो बार बार संकट आते हैं।

मेरे अनुभव–मेष, सिंह, तथा धनु लग्न में गुरु के फल अच्छे मिलते हैं। इनका स्वभाव उदार, सरदारों जैसा होता है। लोगों का कल्याण करने के लिये यत्न करते हैं और लोगों पर हुकूमत भी चलाना चाहते हैं। गाँव के सभी लोगों को रिश्तेदार जैसे प्रिय होते हैं। दीर्घायु, मिलनसार, लोकसंग्रही होते हैं। शिक्षा अधिक न होने पर भी विद्वान प्रतीत होते हैं। वृत्ति गंभीर-होती है। किसी भाषा के अध्यापक, वकील, बैरिस्टर, जज, उपन्यासलेखक, नट, गायक, कवि इन रूपों में ये यशस्वी होते हैं। ये शान्तिप्रिय, डरपोक, अतिकामुक, नास्तिक और सुखासक्त होते हैं। मेष, मिथुन, कर्क, कन्या, मकर इनके सिवाय अन्य लग्नों में गुरु हो तो सिर गंजा होता है, भाल भव्य

होता है । डाढी के केश कम किन्तु मूंछों के अधिक होते हैं। कभी कभी शरीर पर भी केश अधिक पाये जाते हैं। खिलाडी, नकल करने में कुशल, विनोदी, हावभाव के साथ बोलनेवाले होते हैं। इन्हें आयु के पूर्वार्ध में कष्ट होते हैं और उत्तरार्ध सुख से बीतता है। इन्हें मित्र प्रिय होते हैं । जीवन यशस्वी होता है। समयसूचक होते हैं। इन्हें बडा अधिकारपद प्राप्त होकर धन भी मिलता है किन्तु संग्रह की ओर प्रवृत्ति नहीं होती। ये धैर्यशील, विपत्ति में न डरनेवाले, संसार में व्यवस्थित रहनेवाले, घर में कठोरता से नियमों का पालन करनेवाले होते हैं। कुल का अभिमान बहुत होता है । लेन देन में सावधान और तत्पर होते हैं। किसी का आक्षेप सहन नही करते । मेष व सिंह लग्न में सन्तति मध्यम प्रमाण में होती है। धनु लग्न में सन्तति योग नही होता। वृषभ और कन्या लग्न में सांसारिक सुख कम मिलता है। स्वार्थी, हठी, अपनाही कहना सच माननेवाले होते हैं। अडचनों में दूसरों की मदद करते हैं किन्तु उसमें अपना स्वार्थ भी देखते हैं । सांपत्तिक स्थिति अच्छी नही होती। विपत्ति में घबरा जाते हैं। दूसरों पर जिन गलतियों के लिये टीका करते हैं उन गलतियों को ये स्वयं करते हैं। लोकमत अनुकूल नही होता। अपनी गलती ये कभी स्वीकार नही करते। उसका दोष दूसरों पर डालते हैं।

इस गुरु के फलस्वरूप रसिकता बिलकुल नही होती। इन्हें किसी भी प्रकार का शौक नही होता। पढने की भी इच्छा नही होती फिर लेखन कैसे हो सकेगा ? ये हमेशा खानेपीने की फिक्र करते हैं। वृषभ, कर्क, कन्या तथा वृश्चिक राशियों में

यह गुरु हो तो वे लोग बहुत खाते है। मकर में हो तो साधारणतः गाना, बजाना, नाटक, सिनेमा और पढने की ओर रुचि होती है। मीन में हो तो काव्य और वाङ्मय के उपासक होते हैं। जातकचंद्रिका के अनुसार वृषभ, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ इन लग्नों में गुरु अनिष्ट फल देता है। इसका अनुभव भी आता है। लग्न में अशुभ फल यही होता है कि स्वभाव अच्छा नही होता। लोगों में अपवाद फैलते हैं। सन्मान कम मिलता है। वृषभ, कन्या, तुला इन राशियों में यह गुरु हो तो धन कम मिलता है। मकर तथा कुम्भ में हो तो झूठा अभिमान अधिक होता है। इन्हें धन प्राप्त हो तो सन्तति नही होती और सन्तति हुई तो धन नही मिलता। कर्क और वृश्चिक लग्न में यह गुरु हो तो स्वभाव निर्दय, ओछा, क्रोधी होता है किन्तु इनका क्रोध क्षणिक होता है। झूठ बोलते हैं, मीठी गप्पें लडाते हैं। बडेबडे व्यवहारों में गप्पें भी बडी ही हांकते हैं। अधम श्रेणी की मजाक करते हैं। गन्दी मनोवृत्ति होती है। दरिद्री, बातूनी, झूठ अभिमानवाले, गर्वीले, खुद को होशियार और दूसरों को मूर्ख माननेवाले, ताने देकर बोलनेवाले और निर्लज्ज ऐसे ये व्यक्ति होते हैं। ये बोलने में सावधान होते हैं। किसी की बातों में नही आते। आश्चर्य तो यह है कि इन्हें कल क्या कहा इसका स्मरण बिलकुल नही रहता। लोगोंपर प्रभाव डालने का बहुत यत्न करते हैं। खाने का सामान जुटाने में ही इनका समय बीतता है। लग्न में मिथुन राशि में गुरु हो तो पूर्व आयु में दुःख और उत्तर आयु में सुख मिलता है। मिथुन, तुला, कुम्भ

लग्न में गुरु हो तो उन व्यक्तियों को प्रपंच की चिन्ता नही होती और उसके लिए वे अधिक प्रयत्न नही करते। ये चैनी होते हैं किन्तु पैसों की कमी इन्हें कभी नही होती। स्त्री के साथ इनका व्यवहार बहुत ही साधारण किसी हमसफर मुसाफिर जितने ही प्रेम के साथ होता है। वह दिनभर घर के काम कर इनकी सेवा करे इतनी ही पत्नी की योग्यता ये मानते हैं। मीन लग्न में गुरु हो तो स्वभाव अच्छा होता है। ये विश्वव्यापी दृष्टि से विचार करते हैं। बडी बडी संस्थाएं स्थापन करते हैं। अपने सुख की विशेष फिक्र नही होती किन्तु जगत की चिन्ता करते हैं। इन्हें व्यवहारज्ञान नही होता किन्तु भाग्य अच्छा होता है। ये या तो अविवाहित रहते हैं या एकसे अधिक विवाह करते हैं वसिष्ठ के मत से केन्द्र अथवा त्रिकोण में गुरु लक्षावधि दोष दूर करता है—द्युना विना केन्द्रगतोमरेज्यस्त्रिकोणगो वापि हि लक्षं निहंति दोषान् ॥ किन्तु अनुभव उलटा ही है। गुरु जिस स्थान में हो उसका फल नष्ट करता है—स्थाननाशं करोति गुरुः। लग्नस्थ गुरु हर छठवें वर्ष या हर बारहवें वर्ष विपत्ति लाता है, शारीरिक, मानसिक या आर्थिक संकट उत्पन्न करता है और इन संकटों को दूर करने का सामर्थ्य नही होना। गुरु धनदायक नही है इसलिए आर्थिक संकट दूर नही होते। यह ज्ञान और विद्या का कारक है। इन व्यक्तियों का आयुष्य सुख-समाधानपूर्ण नही होता—दुःख और विपत्तियों से भरा होता है। सामान्यतः ये लोग व्यभिचारी होते हैं। मेष, कर्क, तुला, मकर इन लग्नों में गुरु हो तो अतिनीच वर्ग की स्त्रियों से सम्बन्ध होता है। वृषभ, सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ इन लग्नों में यह

दोष नही होता । मिथुन, कन्या, धनु, मीन लग्नों में कुल, मान और वय से श्रेष्ठ स्त्रियों से सम्बन्ध होता है । इस गुरु के फ़ल-स्वरूप बचपन में माता या पिता की मृत्यु होती है । इन्हें द्वि-भार्यायोग होता है । पहली पत्नी आयु के मध्यम मेंही मृत होती है । यह विवाह न होने का भी योग हो सकता है । कर्क, वृश्चिक तथा मीन लग्नों में गुरु डाक्टरों के लिए अच्छा होता है । मिथुन, तुला और कुम्भ लग्नों में वैद्यों को अच्छा फल मिलता है । इनका रोगों का निदान और औषधियोजना ठीक होती है । वकीलों के लिए भी अच्छा योग है । इन्हें अच्छी कीर्ति मिलती है और न्यायाधीशों पर प्रभाव पड़ता है तथा यशस्वी होते हैं । इनकी बुद्धि तीव्र होती है और न्याय-अन्याय का निर्णय सूक्ष्मता से कर सकते हैं । लग्न में गुरु हो तो पुलिस, सैनिक या अबकारी विभाग में बिलकुल नही जाना चाहिए । ये शिक्षा विभाग में सफल होते हैं । इन्हें ऋण लेकर खर्च करने की बिलकुल इच्छा नही होती । प्रतिष्ठा की रक्षा करते हैं । श्रीराम के वनवास का कारण लग्नस्थ गुरु माना है । इस फल का अनुभव मेष, कर्क, तुला तथा मकर इन लग्नों में आता है । एक क्ष व्यक्ति के मेष लग्न में गुरु है । इनकी शिक्षा नही हुई किन्तु ४० वें वर्ष तक व्यापार में यशस्वी होकर ११ भाषाओं का अच्छा ज्ञान इनने प्राप्त किया । चाचाने इनकी इस्टेट का अपहरण किया था अतः ३२ वें वर्ष तक इन्हें वनवास जैसी दशा में समय बिताना पडा । दूसरे उदाहण के व्यक्ति के वृश्चिक लग्न में गुरु है । यह फ्रेंच, जर्मन, ग्रीक, लेटिन हिब्रू तथा स्पेनिश ये भाषाएं अच्छी तरह बोल सकता है तथा लिखता है । लग्नस्थ गुरु कुम्भ में हो

तो विज्ञान के तथा मीन, मकर और सिंह लग्न में हो तो भाषा और साहित्य के प्रोफेसर होने का योग होता है। शिक्षक, प्राध्यापक यही व्यवसाय लग्नस्थ गुरु के अनुकूल होता है।

लग्नस्थ गुरु का एक विचित्र उदाहरण गुरु शान्तस्वामी गोंबिमठ की कुण्डली में मिला। यह कुण्डली इस प्रकार है— शक १८२६ कार्तिक वद्य ३ दोपहर १–४३ जन्मस्थान शहापुर (बेळगांव)——

१
११ के.
२
१२ गु.
१० श.
३ ने. च.
९ शु. ह.
४
६ म
८ र. बु
५ रा.
७
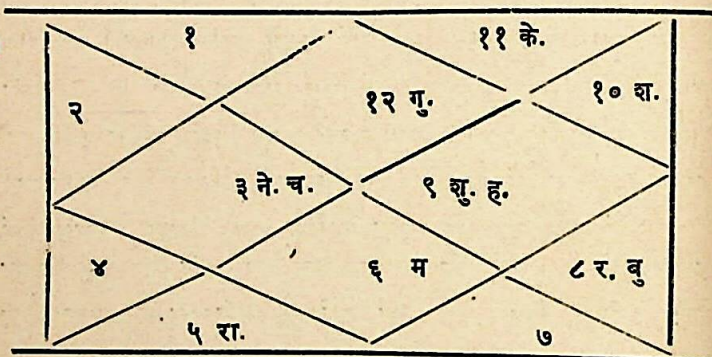
यह बचपन में बहुत मंदबुद्धि था। घर में गाय भैंसों की देखभाल करना, पानी भरना, कपडे धोना आदि काम मजदूर के समान करता था। १५ वें वर्ष तक यह हाल रहा। बडे भाई इसका ब्याह करने का प्रयत्न करने लगे। हमने तभी इसे कुण्डली देखकर फल बताया कि यह संन्यासी होगा। किन्तु ज्योतिषी होने पर भी बडे भाई को विश्वास नही हुआ। १६ वें वर्ष में इसे भयंकर ज्वर आया। चार दिन तक १०४ डिग्री बुखार रहा। तभी स्वप्न में एक संन्यासी का दृष्टान्त हुआ कि

यदि तुम संन्यास ग्रहण करो तो अच्छे हो सकते हो । जगने पर उसने भाई को यह बताया और उनने वह शर्त स्वीकार की । फिर उस संन्यासीने स्वप्न में बताई हुई औषधि देने से दूसरे ही दिन ज्वर दूर होकर स्वस्थता प्राप्त हुई । उस संन्यासी के मठ में जाकर इसने दीक्षा ग्रहण की । तदनंतर दो ही वर्षों में शंकर संस्कृत कालेज, यादगिरी तथा शासकीय संस्कृत कालेज, वाराणसी में पढकर कलकत्ता में परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर लौटा ।

दूसरा उदाहरण–सर भालचन्द्र कृष्ण भाटवडेकर–जन्म शक १७७३ माघ वद्य ३० गुरुवार इष्ट घटिका ४७–३६ ।
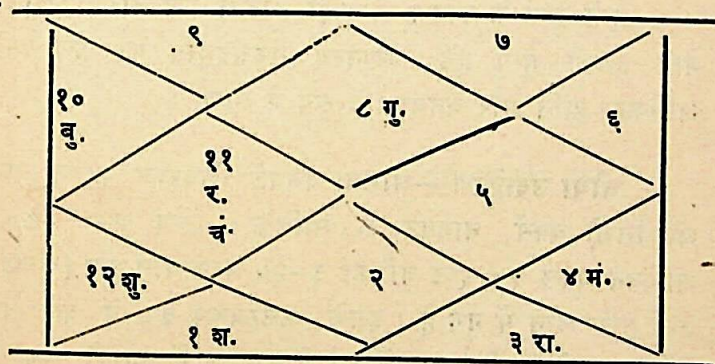
ये बम्बई के विख्यात डाक्टर थे । २५ वर्षों तक बम्बई म्युनिसिपल कार्पोरेशन के सदस्य रहे । मृत्यु के पूर्व कुछ समय इन्हें सांपत्तिक कष्ट हुआ । इन्हें लग्नस्थ गुरु के फलस्वरूप व्यवसाय में धन और कीर्ति प्राप्त हुई ।

तीसरा उदाहरण—कोल्हापुर के राजा शिवाजी—जन्म शक १७८५ चैत्र वद्य १ रात्रि ८, स्थान कागल।
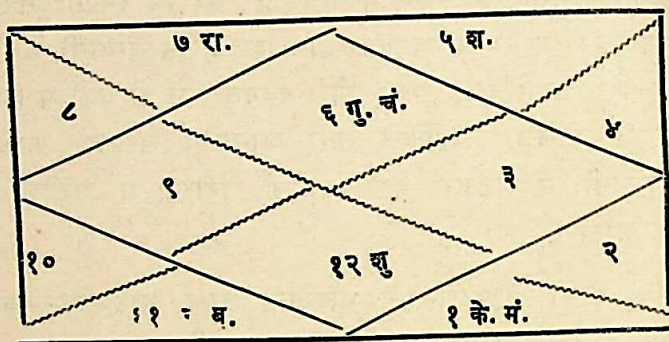
इन्हें कष्ट के कारण राजगद्दी छोडना पडा और तकलीफों मेंही इनकी मृत्यु हुई। लग्नस्थ गुरुचंद्रयुति का फल इन्हें अधिकार हानि और वनवास के रूप में मिला।

चौथा उदाहरण—श्रीमान धनवटे, शिवराज फाइन आर्ट अँड लिथो वर्क्स, नागपुर के मालिक। जन्म शक १८०१ आश्विन शुक्ल १४ इष्ट घटिका ३–२५ जन्मस्थान भूज (कच्छ) इन्हें तुला लग्न में गुरु है। इसके फलस्वरूप ३६ वें वर्ष तक स्थिरता नही मिली। ३७ वें वर्ष में नागपुर में स्थायी रूप से रहने लगे। तब से सतत उत्कर्ष हो रहा है। इन्हें माता का सुख बहुत कम मिला और पिता की मृत्यु १८ वें वर्ष हुई।

पांचवां उदाहरण—एक क्ष व्यक्ति, जन्म ता. ४–१–१९१ रात १२–३० बडोदा।
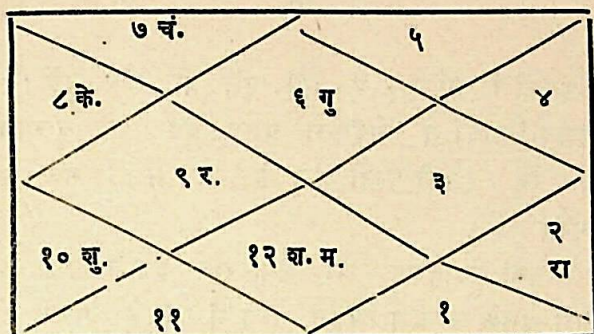
इन्हें स्थिरता कभी मिली नही। विवाह भी नही हुआ। ऐसी ही कुण्डली एक पारसी लडकी की देखी। दूसरे वर्ष में विषम ज्वर से इस की तालु को धक्का पहुंचा और थोडे ही समय बाद पैर भी बेकार हुए।

छठवां उदाहरण—श्री रंगराव रामचंद्र दिवाकर (भूतपूर्व राज्यपाल–बिहार राज्य) जन्म शक १८१६ आश्विन शुक्ल १ रविवार इष्ट घटिका ४२–४९ ता. ३०–९–१८९६।
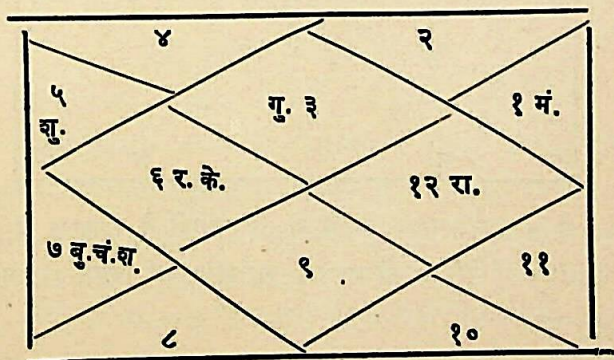
इनकी शिक्षा एम्. ए., एल्. एल्. बी. तक हुई। भाषा और दर्शन विषयों में निपुणता प्राप्त हुई। ये वृत्तपत्रों के सम्पादक रहे। इनकी पत्नी आयु के मध्य में ही सन १९३१ में स्वर्गस्थ हुई।

सातवां उदाहरण—श्री. शंकरराव देव—प्रसिद्ध सर्वोदय कार्यकर्ता—इनके लग्न में मिथुन राशि में गुरु है, पंचम में तुला में शनि है और नवम में कुम्भ में राहु है। ये अविवाहित रह कर राष्ट्रकार्य में मग्न रहे।

आठवां उदाहरण—प्रो. जे. विठोबा—जन्म शक १८०४ आश्विन कृष्ण ७ गुरुवार इष्ट घटिका ३८—१० भंडारा।
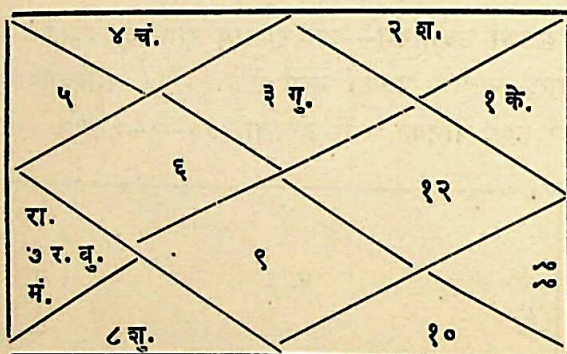
ये बंगाल नागपुर रेलवे में टेलिग्राफी के शिक्षक थे। बाद में नागपुर में टेलिग्राफी क्लास का संचालन किया। इनके दो विवाह हुए।

लग्नस्थ गुरु के फल साधारणतः अच्छे मिलनेपर भी कष्ट सहन करना पडता है। किन्तु आपत्ति का समय भी किसी तरह

निभ जाता है। स्वभाव उच्च होता है। कृतज्ञ और विश्वासु मनोवृत्ति होती है। मिथुन, तुला और कुम्भ लग्न में गुरु हो तो वे वादविवाद में कुशल होते हैं। समय पर अपना कहना झूठ है यह मालूम होने पर उसे सच सिद्ध करते हैं। किन्तु वह समय बीत जाने पर उनकी गलती उन्हें समझाई जा सकती है। अतः ऐसे व्यक्तियों से विवाद नहीं करना चाहिए। लग्न में गुरु हो तो आपसी झगडे अदालत में ले जाने की वृत्ति नही होती। समझौते का प्रयास करते हैं। इन व्यक्तियों की पत्नी गम्भीर वृत्ति की और विपत्तियों में धैर्य रखनेवाली होती है। इस विषय में ये लोग भाग्यशाली होते हैं। बहुत ऋण होने पर या बेइज्जती के मौके पर ये अज्ञात स्थान में चले जाते हैं। मेष, सिंह और धनु लग्न में गुरु हो तो नींद सजग होती है। ये अपने काम व्यवस्थित रूप में और समयपर करते हैं। ये किसी के काम का उत्तरदायित्व अपने पर नही लेते। किन्तु लेना पडा तो उसे बराबर पूरा करते हैं। ये अपना वचन अच्छी तरह निभाते हैं।

दूसरे स्थान में गुरु के फल

आचार्य व गुणाकर––सुवाक्यः। वाणी अच्छी होती है।

कल्याणवर्मा––धनवान् भोजनसारो वाग्मी सुवपुः सुवाक् सुवक्त्रश्च। कल्याणवपुस्त्यागी सुमुखो जीवे भवेद् धनगे॥ यह धनवान, अच्छा अन्न खानेवाला, वक्ता, सुंदर, मधुर बोलनेवाला मोहक मुखवाला, सुदृढ, उदार स्वभाव का होता है।

गर्ग––लक्ष्मीवान् नित्यमुत्साही धनस्थे देवतागुरौ। बुध-दृष्टे च निःस्वः स्यादिति सत्यं प्रभाषितम्॥ धनवान, सदा उत्साही होता है। किन्तु इस पर बुध की दृष्टि हो तो निर्धन

होता है। भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टमद्वितीयकः। षष्ठे वर्षे भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः॥ यदि मेष या वृश्चिक राशि में गुरु दूसरे, छठवें या आठवें स्थान में हो तो उस बालक की छठवें वर्ष में मृत्यु होती है।

जातकरत्नाकर—गुरौ धनेऽथवा दृष्टे धनधान्यसुखं भवेत्। विद्याविनयसंपन्नो मान्यः सर्वस्य जायते॥ गुरु धनस्थान में हो या इस स्थान पर गुरु की दृष्टि हो तो धनधान्य का सुख मिलता है तथा वह व्यक्ति विद्यावान और विनयी तथा सब लोगों द्वारा सन्माननीय होता है। **मन्त्रेश्वर** ने भी इसी प्रकार वर्णन किया है।

वसिष्ठ—नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः। अनेक प्रकारों से धन का संग्रह होता है।

बृहद्यवनजातक—सद्रूपविद्यागुणकीर्तियुक्तः संत्यक्तवैरो नितरां गरीयान्। त्यागी सुशीलो द्रविणेन पूर्णो गीर्वाणवंद्ये द्रविणोपयाते॥ रूपवान, विद्यावान, गुणी, कीर्तिमान, वैरहीन, गम्भीर स्वभाव का, उदार, सुशील तथा धनवान होता है। गुरुर्भाद्वे भूपमानम्॥ यह २७ वें वर्ष राजाद्वारा सन्मान प्राप्त करता है। **जयदेव** तथा **ढुंढिराज** के मत इसी प्रकार हैं।

वैद्यनाथ—वाग्मी भोजनसौख्यवित्तविपुलस्त्यागी धनस्थे गुरौ। बोलने में कुशल, धनवान, उदार तथा उत्तम भोजन प्राप्त करनेवाला होता है।

काशीनाथ—धने जीवे धनी लोकः कृतघ्नो बन्धुसंयुतः। गजाश्वमहिषीयुक्तः कान्तिमानपि जायते॥ धनवान, कृतघ्न,

भाईबहिनों से युक्त, हाथी घोडे भैंस आदि से संपन्न तथा कान्तिमान होता है।

आर्यग्रन्थकार—सुरगुरौ धनमंदिरमाश्रिते प्रमुदितो रुचिर-प्रमदापतिः। भवति मानधनो बहुमौवितकैर्गतवसुर्भविता प्रस-वाहिन्के ॥ आनन्दी, सुन्दर स्त्री का पति, मानी और धनवान होता है। जन्म के समय निर्धन होता है। धनस्थाने गुरुर्यस्य अतिकष्टात् धनागमः। कवित्वे मतिः संजाता न धनं तिष्ठति गृहे ॥ इसे धन की प्राप्ति बहुत कष्ट से होती है, बुद्धि कविता करने की ओर प्रवृत्त होती है, घर में धन कायम नही रहता।

नारायण भट्ट—कवित्वे मतिर्दण्डनेतृत्वशक्तिर्मुखे दोषधृक्-शीघ्रभोगार्त एव। कुटुंबे गुरौ कष्टतो द्रव्यलब्धिः सदा नो धनं विश्रमेद् यत्नतोऽपि ॥ कविता की ओर प्रवृत्ति होती है, अधिकार धारण करने का सामर्थ्य होता है, मुख में दोष होते हैं, जल्दी उपभोग समाप्त होने से दुखी होता है, धन बडे कष्ट से मिलता है और मिलने पर स्थिर नही होता। **जीवनाथ** का मत भी इसी प्रकार है।

जागेश्वर—सजीवे धने काव्यकृच्चंचलो वै धनं तस्य वर्गे विरोधस्तदानीं। परं शत्रवः प्रौढतां संप्रपन्नाः सुरूपं तथा भामिनीं रंजितोऽयं ॥ कवि, चंचल, धनवान, अपने लोगों से विरोध करनेवाला, सुन्दर तथा स्त्री से सन्तुष्ट होता है। इसके शत्रु बढते हैं।

हरिवंश—दानी दीनदयाकरो नरवरो ज्ञानी गुणज्ञो गुणी। निर्लोभी निरुपद्रवी च विनयी सत्संगमी साहसी ॥ विद्याभ्यासरतो विवेकसहितो युक्तो महिष्यादिभिर्नानावाहनवित्तसंचयपरो वित्ते

सुरेज्ये भवेत् ॥ दानी, दीनों पर दया करनेवाला, ज्ञानी, गुणवान, गुणों को समझनेवाला, निर्लोभी, निरुपद्रवी, नम्र, सत्संगति में रहनेवाला, साहसी, पढने में मग्न, विवेकयुक्त, भैंसें आदि प्राणियों से संपन्न, विविध वाहनों से युक्त, तथा धन का संग्रह करनेवाला होता है।

कश्यप–धनस्थानगते जीवे धनी भवति बालकः । सर्वाधिराजः सुरराजमंत्री ॥ यह धनवान और अधिकारसंपन्न होता है।

नारद–धनलाभं तथारोग्यं प्रमोदो बन्धुवर्गतः । प्रचंडैः सदृशं भोगो देवेज्ये धनगे भवेत् ॥ धन मिलता है, आरोग्य प्राप्त होता है, भाइयों और रिश्तेदारों से आनन्द होता है और उत्तम उपभोग प्राप्त होते हैं।

पुंजराज–कोशस्थे चेद्देवपूज्ये वाग्मी स स्यात् पूरुषः सौम्यवक्त्रः। बोलन में कुशल और प्रसन्न चेहरे का होता है। **रामदयाल** का यही मत है।

घोलप–यह प्रसिद्ध, शत्रुओं का नाश करने में समर्थ, बलवान, बुद्धिमान, धनवान, पुण्यवान, उत्तम मित्रों से युक्त, सर्वत्र सुशोभित, भोगी, कलाओं का ज्ञाता, उत्तम कपडे पहननेवाला, स्त्री सुख से युक्त और उदार होता है।

गोपाल रत्नाकर–स्पष्ट बोलनेवाला, बडे कुटुंब से युक्त, मृदु बोलनेवाला, दानी, धन जमीन में रखनेवाला और कुटुम्ब का संचालक होता है।

हिल्लाजातक–द्वितीयः सप्तविंशे च जायालाभकरो गुरुः। २७ वें वर्ष पत्नी प्राप्त होती है।

लखनऊ के नबाब–मुश्तरी यदि भवेज्जरखाने बुज्रुग: परमपुण्यमति: स्यात् । कामिल: कनकसूनुयुतश्च खूबरो हि मनुजो जरदार: ।। चतुर, पुण्यशील, यशस्वी, स्त्रीपुत्रों से युक्त, धनवान मधुर, बोलनेवाला और सफल होता है ।

पाश्चात्य मत–धन का संग्रह होता है । यह गुरु बलवान हो तो श्रेष्ठ फल मिलता है । सरकारी नौकरी, कानूनी काम बैंक, देवालय, धर्मादाय संस्था आदि में यश मिलता है । रसायनशास्त्र और भाषाओं के ज्ञान में निपुणता प्राप्त होती है । कुटुंब के व्यक्तियों से और पत्नी से अच्छा सुख मिलता है ।

अज्ञात–धनवान् बुद्धिमान् उच्चभाषी । षोडशवर्षे धनधान्यसमृद्धि: । बहुप्राबल्यवान् । उच्चक्षेत्रे धनुषि द्रव्यवान् । पापयुते विद्याविघ्न: । चोरवचनवान् दुर्वचा: अनृतप्रिय: । नीचयुते पापक्षेत्रे मद्यपायी भ्रष्ट: कुलनाश: । कलत्रान्तरयुत: । पुत्रहीन: ।। यह धनवान, बुद्धिमान और अच्छा बोलनेवाला होता है । सोलहवें वर्ष धनधान्य मिलता है । बहुत प्रबल होता है । कर्क और धनु राशि में हो तो धनवान होता है । पापग्रह से युक्त हो तो शिक्षा में रुकावट आती है । चोर, ठग, झूठ बोलनेवाला, अयोग्य बोलनेवाला होता है । नीच राशि में या पापग्रह की राशि में हो तो शराबी, भ्रष्ट, कुल का नाश करनेवाला, दूसरी स्त्री से युक्त, पुत्रहीन होता है ।

हमारे विचार

प्राय: सभी शास्त्रकारोंने इस गुरु का फल धनप्राप्ति बतलाया है । गुरु धन देनेवाला शुभ ग्रह है यह उनकी धारणा है । किन्तु मेरे विचार से धनप्राप्ति से गुरु का सम्बन्ध नही है ।

धनस्थान में गुरु अशुभ सम्बन्ध में या पापग्रह से युक्त न होने पर भी बहुतांश व्यक्ति साधारण स्थिति के ही देखे हैं। बैरिस्टर या जज लोगों का अपवाद छोड दिया जाय तो ये लोग प्राय: भिक्षुक, ब्राह्मण, शालाओं में शिक्षक, प्राध्यापक अथवा ज्योतिषी होते हैं और इन वर्गों में धन कितना मिलता है यह स्पष्ट ही है। नारायणभट्ट ने शीघ्र उपभोग के कारण दुखी होना यह फल बतलाया है इसका अनुभव नही आता किन्तु इन लोगों में नाजुक शरीर अवश्य पाया जाता है। मुख में दोष होना यह फल मंगल का अशुभ सम्बन्ध होने पर मिथुन, तुला या कुम्भ राशि में गुरु हो तो मिलता है। घर के बडे व्यक्तियों से विरोध होना इस फल का अनुभव मेष, सिंह, या धनु में यह गुरु होने पर आता है। कुटुम्ब के निर्वाह के लिए धन की कमी होती है, धन का संग्रह नही होता यह फल वृषभ, कन्या, तुला, मकर या कुंभ लग्न हो तो मिलता है। अज्ञात ने दूषित गुरु के फलों में शराबी, चोर, ठग, झूठ बोलनेवाला, भ्रष्ट ऐसा वर्णन किया। किन्तु इस वर्णन का विशेष अनुभव नहीं आता। दूसरी स्त्री से सम्बन्ध और पुत्र न होना ये भी फल कहे हैं। इनके बारे में अनुभव ऐसा है कि पहली पत्नी की मृत्यु ४८ से ५२ वर्ष तक की आयु में होती है किन्तु दूसरा विवाह नही होता। पुत्र न होने के बारे में–मिथुन, तुला व कुंभ ये वन्ध्या लग्न हों तो यह फल मिलेगा। लग्न पुरुष राशि का और गुरु स्त्री राशि में हो तो सन्तति नही होगी। यवनजातक में २७वें वर्ष राजमान्यता मिलने का योग कहा वह ठीक है। हिल्लाजातक में २७ वें वर्ष पत्नी मिलने का योग

कहा। यह विलम्ब से विवाह होने का योग हुआ क्योंकि लेखक के समय में बालविवाह का ही प्रचलन था। आजकल उच्च वर्गों में प्रौढ अवस्था में विवाह होते हैं अतः यह आयु ३२ से ३६ वें वर्ष तक मानना चाहिये। नीच वर्गों में इस फल का अनुभव प्रायः नही मिलता। क्यों कि असाधारण कारण न हो तो अभी उनमें बालवय में ही विवाह करते हैं। ऐसे असाधारण कारण का द्योतक यह गुरु हो सकता है। जन्मसमय में गुरु धनस्थान में हो तो २७ वें वर्ष में गोचर गुरु का भ्रमण पंचम स्थान से होता है। यही कारण है कि यह आयु विवाहयोग की कही है।

हमारे अनुभव—गुरु द्वितीय स्थान में हो तो जन्म के समय कुटुंब बडा होता है और गरीब होता है। कुटुम्ब छोटा हो तो श्रीमान हो सकता है। बडा कुटुम्ब होकर धनसमृद्धि हो तो कुटुम्ब के व्यक्तियों की मृत्यु हो कर संख्या कम होती है। अथवा बँटवारा होता है। अथवा वैभव कम होने लगता है। रवि विचार में धनस्थान के रवि के जो फल बतलाये उनमें निम्नलिखित फलों का अनुभव गुरु के बारे में भी आता है।। (१) पिता का सुख कम मिलता है। इसके धन का उपभोग पिता नही कर सकता। (२) पैतृक सम्पत्ति नही मिलती। मिली तो नष्ट होती है। (३) दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार किया जाता है। (४) पैतृक सम्पत्ति अच्छी हो तो पिता से सम्बन्ध अच्छे नही रहते। सम्बन्ध अच्छे हों तो बेकार रहना पडता है। पिता पुत्र दोनों एकसाथ धनार्जन नहीं कर सकते। इस गुरु से शिक्षा पूर्ण नही होती। अपनी जाति के लोग मदद नही करते। जिन पर उपकार किया जाय वे ही निन्दा करने लगते

हैं। उपकर्ता को बिलकुल अयोग्य बतलाने की ये कोशिश करते हैं। यह गुरु मेष में हो तो वाणी बहुत कठोर होती है। वृषभ, सिंह, वृश्चिक और कुंभ में हो तो पैसों के लिए सदा ही चिंतित रहना पडता है। धन मिले तो भी ये निश्चिन्त नही हो पाते। ये लोग यदि बहुत झूठ बोलें तो वाणी में दोष उत्पन्न होता है। अतः इन्हें सच ही बोलना चाहिये। वाणी के शाप से इन्हें धन की कमी बहुत होती है। यह गुरु धनु में हो तो दानधर्म के कारण धन कम होता है। इसका अच्छा उदाहरण सेठ जमनालाल बजाज की कुण्डली में मिलता है। जन्म शक १८११ कार्तिक शुक्ल १२ सोमवार ता. ४–११–१८८९ इष्ट घटिका २–५५ स्टैन्डर्ड टाईम ७–५० लोकल ७–३१ अक्षांश २७-३६ रेखांश ७५–१५ स्थान सीकर, सूर्योदय ६–११।
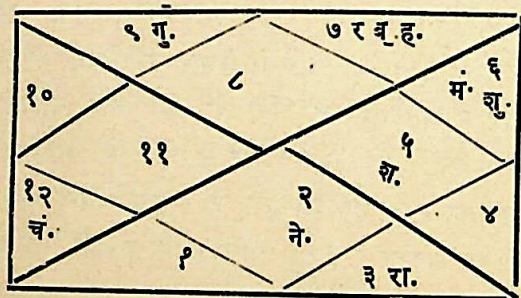
इनका जन्म जयपुर रियासत में सीकर नामक स्थान में हुआ। कुटम्ब बडा किन्तु गरीब था। आयु के ८ वें वर्ष ये एक श्रीमान परिवार में दत्तक लिये गए। यहां अपनी बुद्धिमत्ता से विविध उद्योगों में यश प्राप्त कर सम्पत्ति बढाई और करीब २५–३० लाख रुपये धार्मिक कार्यों में खर्च किये। बाद में

राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हुए। इनका लग्न वृश्चिक के ७ वें अंश में है। इस विषय में चारुबेल लिखते हैं–यह एक मुकुटधारी दण्डधारी नग्न बच्चे के समान है। स्वभावकी सरलता, उदात्तता और भावी महानता का यह सूचक है। इन का स्वभाव धार्मिक और उदार किन्तु व्यवहारी था। गुणों की कद्र करते थे। जातिभेद और उच्चनीचता की कल्पनाओं पर श्रद्धा नही थी। जाति से अग्रवाल मारवाडी थे। किन्तु सभी जातियों के लोगों से इनका सम्पर्क था। धनस्थान में गुरु के फलस्वरूप जन्मत: गरीबी, गोद लेने के बाद समृद्धि और पहले कुटुम्बसुख की हानि यह अनुभव मिला। दशम के शनि के फल-स्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन में कारावास हुआ। लाभस्थान के मंगल से तिलक स्वराज्य फंड के अपहार का झूठा आरोप इन-पर किया गया। इसी के फलस्वरूप सन्तति कम हुई। सप्तम के नेपच्यून के विषय में पाश्चात्य ज्योतिर्विद कहते हैं–अन्य ग्रहों की अपेक्षा इस ग्रह का कम्पन उच्च और माध्यमिक होता है। इसके प्रभाव से होनेवाले विवाहों में शारिरिक सुख से मानसिक ऐक्य अधिक प्रभावी होता है। कभी कभी इस नेपच्यून के फलस्वरूप शारीरिक, मानसिक अथवा नैतिक दृष्टि से पीडित, व्यंगयुक्त व्यक्ति से विवाह होता है। श्री. बजाज को नेपच्यून का पहला ही फल मिला–उनकी पत्नी सुस्वरूप, और गम्भीर थी। व्ययस्थान के रवि से इन ने दान में पर्याप्त सम्पत्ति का व्यय किया।

स्व. रावबहादुर डी. लक्ष्मीनारायण की कुण्डली में धन-स्थान में धनु में गुरु था। इन्हें भी पैतृक सम्पत्ति नही थी।

अपने साहस से धन प्राप्त कर दान में व्यय किया। स्व. डा. गौर के धनस्थान में मकर में गुरु था। आपको भी पैतृक सम्पत्ति बिलकुल नही मिली। स्वयं साहस द्वारा धन प्राप्त कर शिक्षा के प्रसार के लिए दान किया।

धनस्थान में कर्क में गुरु होते हुए साधारण दरिद्री अवस्था ही पाई जाती है। किसी तरह इनका उदरनिर्वाह होता है। इनमें कुछ बडे रोगों द्वारा पीडित और पागल देखे हैं। साधारणतः धनस्थान में मेष, सिंह, धनु और मिथुन, तुला तथा कुम्भ में गुरु के फल अच्छे मिलते हैं। स्त्री राशियों में मध्यम फल मिलते हैं। महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा भीष्म को राज्याधिकार छोडना पडा क्यों कि उनके धनस्थान में मकर में गुरु था।

तृतीय स्थान में गुरु

आचार्य तथा गुणाकर—कृपणः, क्लेशः। कंजूस तथा दुखी होता है।

कल्याणवर्मा—अतिपरिभूतः कृपणः सदाजितो मानवो भवति जीवे। मन्दाग्निः स्त्रीविजितो दुश्चिक्ये पापकर्मा च ॥ सदा पराभूत होनेवाला, कंजूष, भूख कम लगनेवाला, स्त्रीद्वारा पराजित और पापकर्म करनेवाला होता है।

गर्ग—भ्रातृस्थाने गुरौ भ्रातृभगिनीभ्यः सुखं वदेत्। भ्रातरः पंचचत्वारः क्रूरदृष्टया विपत्तयः ॥ क्रूरैश्च शत्रुभिर्दृष्टे स्वल्पं भ्रातृसुखं भवेत् ॥ इसे भाईबहिनों का सुख अच्छा मिलता है। चारपांच भाई होते हैं। क्रूरग्रह की दृष्टि हो तो भाइयों पर विपत्ति आती है। क्रूर और शत्रुग्रहों की दृष्टि हो तो भाईयों का सुख कम

मिलता है। धनवान् निर्धनाकारः कृपणो भ्रातृसंयुतः। कुटुम्बी नृपपूज्यश्च सहजे देवता गुरौ ।। यह धनवान होकर भी निर्धन जैसा दिखता है। कंजूस, भाई और बडे कुटुम्ब से युक्त तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है।

गौरीजातक––लग्नात् तृतीयगे जीवे नराणां चैव वल्लभः। लोकप्रिय होता है।

जातकमुक्तावली––स्वर्क्षे जीवे भ्रातृसौख्यं। यह धनु या मीन राशि में हो तो भाइयों का सुख मिलता है।

यवनजातक––शताधिपो देवपुरोहितश्च। सैंकडों लोगों का स्वामी होता है।

वैद्यनाथ––भ्रातृस्थानगते गुरौ गतधनः स्त्रीनिर्जितः-पापकृत्। निर्धन, स्त्रीद्वारा पराजित तथा पापकर्म करनेवाला होता है। जीवेन युते कंठस्वरं चारुतरं समेति। आवाज बहुत मधुर होता है।

ढुंढिराज––सौजन्यहीनः कृपणः कृतघ्नः कान्तासुत-प्रीतिविवर्जितश्च। नरोऽग्निमान्द्याबलतासमेतः पराक्रमे शक्रपुरो-हितेऽस्मिन् ।। सौजन्य न बतलानेवाला, कंजूस, कृतघ्न, स्त्रीपुत्रों पर प्रेम न रखनेवाला, तथा अग्निमान्द्य और दुर्बलता से युक्त होता है।

आर्यग्रन्थ––सहजमन्दिरगे च बृहस्पतौ भवति बन्धुगतार्थ-समन्वितः। भाइयों से धन प्राप्त करता है।

नारायणभट्ट––भवेद् यस्य दुश्चिक्यगो देवमन्त्री लघूनां लघीयान् सुखं सोदराणाम्। कृतघ्नो भवेन् मित्रसार्थे न मैत्री

ललाटोदयेऽप्यर्थलाभो न तद्वत् ।। यह हीन दर्जे का होता है। भाइयों का सुख मिलता है। कृतघ्न, किसी से मित्रता न करनेवाला होता है। बहुत भाग्योदय होनेपर भी इसे यथेच्छ धन नही मिलता।

जीवनाथ--गुरौ सहोत्थे यदि पंच पुत्राः। पांच पुत्र होते हैं। अन्य फल नारायणभट्ट के समान हैं।

काशीनाथ--जीवे तृतीये तेजस्वी कर्मदक्षो जितेन्द्रियः। मित्राप्तसुखसम्पन्नस्तीर्थयात्राप्रियो भवेत् ।। यह तेजस्वी, अपने काम में तत्पर, जितेन्द्रिय, मित्र और आप्तों के सुख से सम्पन्न, तीर्थयात्राएं करनेवाला होता है।

जयदेव--असुजनः कृपणो विमनाः कृशः क्षुधयुतोऽलसभाक् सहजे गुरौ ।। दुर्जन, कंजूस, विमनस्क, दुबलापतला, आलसी होता है। इसे भूख बहुत लगती है।

मन्त्रेश्वर--सावज्ञः कृपणः प्रतीतसहजः शौर्येऽघकृद् दुष्टधीः। अपमानित, कंजूस, पापी, दुष्ट बुद्धि का होता है। इसके भाई प्रसिद्ध होते हैं।

पुंजराज--सहोत्थितानां बहुलं सुखं गुरुस्तृतीये सौख्यं त्रयाणां च सहोत्थितानां ।। भाइयों को अच्छा सुख मिलता है। तीन भाई होते हैं। रामदयाल का मत इसी प्रकार है।

जागेश्वर--भवेल्लाघवं मानवानां विशेषात्। मीठी बातें करता है।

बृहद्यवनजातक--गुरुतोऽभ्रनेत्रैर्मित्राप्तिः। बीसवें वर्ष मित्र प्राप्त होते हैं। इसका अन्य वर्णन ढुंढिराज के समान है।

हिल्लाजातक--सुज्ञसमागमो विंशे तृतीयः कुरुते गुरुः। बीसवें वर्ष विद्वान व्यक्तियोंका समागम होता है।

पराशर--गुरुस्तृतीये तु शत्रुवृद्धि धनक्षयम्। शत्रु बढते हैं, धन कम होता है।

वसिष्ठ--सुधिषणं क्लेशम्। बुद्धि अच्छी होती है किन्तु क्लेश होते हैं।

हरिवंश--उन्मादकृतहीनतां कृपणतां प्रीतिं कलत्रे शुभां अप्रीतिः सुतमित्रतोऽपि जनने मानं नरेन्द्राश्रयात्। उन्माद के कारण अपमान होता है। कंजूस होता है। स्त्री पर प्रीति करता है किन्तु पुत्र और मित्रों से प्रेम नही होता। राजा द्वारा सन्मान होता है।

घोलप--यह सामान्य हो तो भी दीन अवस्था में नही होता। राजा की कृपा प्राप्त कर सुखी होता है। वस्तुओं का संग्रह करनेवाला, धनवान, पूज्य, गोरे वर्ण का तथा काव्यादि पठन कर श्रेष्ठता प्राप्त करनेवाला होता है।

गोपालरत्नाकर--बहुत कंजूस, दाक्षिण्य से युक्त, भाइयों को बढानेवाला, संकल्पों को सफल बनानेवाला, अपने लोगों का पोषक, खेती में रुचि रखनेवाला होता है।

लखनऊके नवाब--गाफिलो बहुपराक्रमयुक् स्यात् मानवः परुषवाक् च वखीलः। पालको भवति श्रेष्ठजनानां मुश्तरी यदि बिरादरखाने ।। बहुत पराक्रमी होता है किन्तु गाफिल रहता है। कठोर बोलनेवाला वकील होता है। श्रेष्ठ लोगों का पालन करता है।

४

पाश्चात्यमत---छोटे प्रवास होते हैं। लेखन से लाभ होता है। यह गुरु धार्मिक और आध्यात्मिक वृत्ति का पोषक है। यह विचारशील और बुद्धिमान होता है किन्तु युक्तिवाद करता है और मत बदलता है। आप्तों से इसे धनलाभ होता है। यह गुरु अग्नितत्त्व की राशियों में हो तो संसार में विजय मिलती है। पृथ्वीतत्त्व की राशियों में हो तो व्यापार, सट्टा, साहस में विजय मिलती है। वायुतत्त्व की राशियों में हो तो मानसिक और ज्ञानसम्बन्धी कार्यों में श्रेष्ठ होता है। जलतत्त्व की राशियो में हो तो जलप्रवासद्वारा सुख मिलता है।

अज्ञान---अतिलुब्धः। भ्रातृवृद्धिः। दाक्षिण्यवान्। भ्रातरं सहजे। सुहृद्बन्धुसमागमः। अष्टात्रिंशद्वर्षे यात्रासिद्धिः। भावाधिपे बलयुते भ्राता दीर्घायुः। भावाधिपे पापयुते बन्धुदोषकरः। भ्रातृनाशः। धैर्यहीनः जडबुद्धिः दारिद्र्ययुक्तः॥ भाई बहुत होते हैं। विजयी होता है। मित्रों तथा बन्धुओं का समागम होता है। ३८ वें वर्ष में तीर्थयात्रा होती है। तृतीयेश बलवान् हो तो भाई दीर्घायु होते हैं। तृतीयेश पापग्रहों से युक्त हो तो भाइयों का नाश होता है, उनसे सम्बन्ध दूषित होते हैं। यह डरपोक, मन्दबुद्धि और दरिद्री होता है।

हमारे विचार---तृतीय स्थान शुभग्रहों को अच्छा नही माना है। अतः इस स्थान में गुरु हो तो दारिद्र्य प्राप्त होता है। दारिद्र्य और कंजूस होना तथा कृतघ्न होना यह फल सभी आचार्यों ने दिया है। ये सब अशुभ फल कर्क, वृश्चिक, मीन तथा स्त्री राशियों के हैं। हिल्लाजातक, यवनजातक तथा

अज्ञात ने विशिष्ट वर्षों के जो फल कहे हैं उनका अनुभव देखना चाहिये। हमें इन फलों की प्रतीति नही हुई। जीवनाथ ने ५ पुत्र होने का फल कहा उसका अनुभव नही आता। इस स्थान में गुरु पुरुष राशि में हो या स्त्री राशि में हो पुत्रसंख्या बहुत कम होती है। गर्ग ने चार-पांच भाई होने का फल कहा। यह स्त्रीराशियों के लिए ठीक है। पुंजराज ने तीन भाई होने का फल कहा। यह पुरुष राशियों में ठीक प्रतीत होता है। गोपाल रत्नाकर तथा घोलप का फलादेश स्त्रीराशियों के लिए योग्य है। यवनमत के वर्णन का अनुभव पुरुष राशियों में आता है। काशीनाथ का फलवर्णन मेष, सिंह, धनु तथा मिथुन, तुला, कुंभ इन राशियों में उचित प्रतीत होता है।

हमारे अनुभव--इस स्थान में गुरु पुरुष राशि में हो तो शिक्षा कम होती है। वृषभ, कन्या तथा मकर में हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। किन्तु इस योग में सुशिक्षित लोग कम ही मिलते हैं-ज्यादातर अशिक्षित ही होते हैं। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में यह गुरु हो तो सुशिक्षित होते हैं-अशिक्षित कम मिलते हैं। गुरु स्त्री राशि में हो तो वह व्यक्ति स्वतन्त्र व्यवसाय द्वारा उपजीविका करता है। पहले नौकरी हो तो वह छोड कर स्वतंत्र व्यवसाय का आरम्भ करता है। इस योग में भाइयों से सम्बन्ध अच्छे नही रहते किन्तु कचहरी तक जाने का मौका नही आता। आपसमें ही झगडते रहते हैं। घर का कारोबार तरुण वय में ही देखना पडता है। यह गुरु पुरुष राशि में हो तो नौकरी द्वारा उपजीविका होती है। स्वतन्त्र व्यवसाय हो तो उसे बन्द कर

नौकरी करना पडता है। इस योग में बडे भाई होते हैं,–बहनें नही होतीं। स्त्रीराशि में यह गुरु हो तो छोटेभाई और बहनें होती हैं। तृतीय के गुरु से भाइयों की प्रगति में विरोध आता है। सभी एकसाथ प्रगति नही कर सकते। कोई एक निरुपयोगी हो जाता है। अतः ऐसे व्यक्तियों को कुटुम्ब से अलग होकर ही रहना चाहिये। बहनें अधिक होती हैं किन्तु उन्हें सुख नही मिलता। यह गुरु, मेष, सिंह, मिथुन, तुला या कुम्भ में हो तो शिक्षा विशेष न होने पर भी पठन बहुत होने से वे लोग विद्वान प्रतीत होते हैं और विद्वानों से मित्रता करते हैं। स्त्रीराशि में यह गुरु हो तो विद्वान होकर भी प्रसिद्धि प्राप्त नही होती। सरकारी नौकरी हो तो असमय में ही पेन्शन लेना पडता है। जिस व्यवसाय में कीर्ति मिले उसमें धन नही मिलता, धन के लिए दूसरा धंधा करना पडता है। तृतीय के गुरु के लिए अच्छा व्यवसाय शिक्षक, प्राध्यापक या ऐसी ही कोई नौकरी करना है। इन की बुद्धि शान्त और गहरी होती है। लोगों से दूर रहना, दारिद्रय की परवाह न करना, दूसरों को ज्ञान बतलाकर स्वयं विक्षिप्त वर्तन करना यह इनका स्वभाव होता है। इन्हें धनवान से एकदम गरीब अथवा अधिकार से एकदम सामान्य स्थिति में आना पडता है। पुराणों में बलि राजा को त्रिलोक का साम्राज्य छोडकर पाताल में जाना पडा ऐसा कहा है। तृतीय में कर्क राशि के गुरु से उसे यह फल प्राप्त हुआ।

चतुर्थं स्थान में गुरु

आचार्य तथा गुणाकर–सुखी ।

कल्याणवर्मा——स्वजनपरिच्छदवाहनसुखमतिभोगार्थसंयुतो भवति। श्रेष्ठः शत्रुविषादी चतुर्थसंस्थो यदा जीवः।। आप्त, वाहन, सुख, बुद्धि और विविध उपभोग तथा धन प्राप्त होते हैं। यह श्रेष्ठ और शत्रुओं को ताप देनेवाला होता है।

वसिष्ठ——यह मुख्य होता है किंतु धन नष्ट होता है।

गर्ग——भवन्ति बालमित्राणि यस्य मित्रगतो गुरुः। दिव्यमालाम्बरक्रीडा नानावाहनयोग्यता ।। जीवःस्यात् पितुस्तस्य सुखं भवेत् ।। जीवश्चाप्यमृतोपमम् ।। एकोऽपि जीवश्चतुर्थस्थः पापाश्चान्यत्र संस्थिताः। तदा गृहे हि जातस्य पूर्वजं धनमुच्यते ।। अनन्तसौख्यं सुरराजमन्त्री ।। इसे बालमित्र प्राप्त होते हैं। उत्तम वस्त्र, पुष्पहार प्राप्त होते हैं। खेल खेलता है। अनेक वाहन चला सकता है। पिता को सुख प्राप्त होता है। कुँए में जल बहुत मीठा होता है। चतुर्थ में गुरु अकेला हो और पापग्रह अन्यत्र हों तो पूर्वजों का धन प्राप्त होता है। यह गुरु अपरिमित सुख देता है।

वैद्यनाथ——वाग्मी धनी सुखयशोबलरूपशाली जातः शठप्रकृतिरिन्द्रगुरौ सुखस्थे ।। यह वक्ता, धनवान, सुखी, कीर्तिमान, बलवान, रूपवान, किन्तु कपटी होता है।

मन्त्रेश्वर——बन्धौ मातृसुहृत्परिच्छदसुतस्त्रीसौख्यधान्यान्वितः। माता, मित्र, परिवार, पुत्र, स्त्री और अनाज का सुख अच्छा मिलता है।

बृहद्यवनजातक-- सन्माननानाधनवाहनाद्यैः संजातहर्षः पुरुषः सदैव। नृपानुकम्पासमुपात्तसंपत् स्वर्गाधिपे मन्त्रिणि भूतलस्थे ॥ सम्मान, धन और वाहनों से इसे सदा आनन्द मिलता है। राजा की कृपा से धन मिलता है। गुरुराकृतौ। आयु के २२ वें वर्ष धन मिलता है।

आर्यग्रंथ, महेश तथा ढुंढिराज--इनने बृहद्यवनजातक के समान वर्णन किया है।

नारायणभट्ट--गृहद्वारतः श्रूयते वाजिन्हेषा द्विजोच्चारितो वेदघोषोऽपि तद्वत्। प्रतिस्पर्धिनः कुर्वते पारिचर्यं चतुर्थे गुरौ तप्तमन्तर्गतं च ॥ इसके घर घोडों की हिनहिनाहट सुनी जाती है और ब्राह्मण वेदपठन करते हैं (यह धनवान और ब्राह्मणों का आश्रयदाता होता है।) शत्रु भी इसकी सेवा करते हैं। किंतु इसका अंतःकरण चिन्तायुक्त रहता है।

जीवनाथ-ने नारायणभट्ट के समान वर्णन किया है।

काशीनाथ--सुखे जीवे सुखी लोके सुभगो राजपूजितः। विजितारिः कुलाध्यक्षो गुरुभक्तश्च जायते ॥ यह सुखी, सुन्दर, राजाद्वारा सम्मानित, शत्रुओं को जीतनेवाला, कुल का प्रमुख और गुरु का भक्त होता है।

जयदेव--नें काशीनाथ के समान वर्णन किया है।

जागेश्वर--चतुर्थे गुरुर्मित्रसौख्यं नराणां सुविद्याविवादो भवेत् तस्य गेहे। गजाश्वादिलाभः परैः सेव्यतेऽसौ धिया काव्यकर्ता सुकर्मा इति स्यात् ॥ मित्रों का सुख मिलता है। इसके घर विद्वत्तापूर्ण वाद होते हैं। हाथीघोडे प्राप्त होते हैं। शत्रु भी

सेवा करते हैं। बुद्धिमान, कवि और अच्छे कार्य करनेवाला होता है।

पुंजराज--जीवे च सर्वकल्याणं यदा स हिबुके वसेत्। मामा और मौसियों को सुख मिलता है।

पराशर--चतुर्थे च सैनापत्यं धनायतिः। जीवेन चिन्ता तु सुखस्य कार्या ।। धन और सेनापतिपद प्राप्त होता है। सुख-प्राप्ति का विचार इस गुरु से करना चाहिए।

घोलप--अपने प्रदेश में पूज्य होता है। श्रेष्ठ कवि, कमल जैसे गोरे वर्ण का और शान्त स्वभाव का होता है। उत्तम पुरुष के आश्रय से उन्नति होती है। पिता और गुरु पर भक्ति होती है। सद्गुणी, श्रेष्ठ कीर्तिमान और उद्योगी होता है।

गोपाल रत्नाकर--स्नेह के योग्य, बुद्धिमान, सुखी, आप्तों का पालन करनेवाला, वाहन और दुधारू पशुओं का स्वामी होता है।

हिल्लाजातक--द्वाविंशे बन्धुमित्रयोर्लाभदस्तुर्यगो गुरुः। २२ वें वर्ष में बन्धु और मित्रों से लाभ होता हैं।

लखनऊ के नबाब--अश्वजर्जरकशीरथ फीलैर्युगुजनः प्रियतमः खलु राज्ञः। मुश्तरी यदि चहारुमखाने भवति यः सकल-सौख्ययुतः स्यात् ।। हाथी, घोड़े, धन, परिवार से सम्पन्न, मधुर बोलनेवाला और बहुत सुखी होता है।

पाश्चात्यमत--आयु के अन्तिम भाग में विजय प्राप्त होता है। यह गुरु बलवान हो तो पिता की स्थिति बहुत अच्छी

होती है। शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वारिस के नाते अच्छी सम्पत्ति मिलती है। मातापिता पर भक्ति होती है और उससे अच्छा लाभ होता है।

अज्ञात–सुखी क्षेत्रवान्, बुद्धिमान्, क्षीरसमृद्धः सन्मानसः मेधावी। पापयुते क्षेत्रवाहनहीनः परगृहवासः मातृनाशः बन्धुद्वेषी बहुचिन्तावान् ॥ सुखी, अच्छे हृदयवाला, बुद्धिमान, खेती तथा दुधारू पशुओं से सम्पन्न होता है। इस गुरु के साथ पापग्रह हों तो खेती और वाहन नही होते, दूसरों के घर रहना पडता है, आप्तों से द्वेष होता है, बहुत चिन्ता होती है, माता की मृत्यु होती है।

हमारे विचार––इस स्थान में सिर्फ वसिष्ठ और वैद्यनाथ ने गुरु के अशुभ फल बतलाये हैं। बाकी सभी ग्रन्थकारों ने शुभ फल बतलाये हैं। वैद्यनाथ, अज्ञात, पराशर, नारायणभट्ट, जीवनाथ इन लेखकों ने सुख की चिन्ता होना यह फल कहा। इस विषय में अनुभव ऐसा है कि [सन्तति, सम्पत्ति और विद्या इन तीनों से सुखी विरले ही मिलते हैं। सम्पत्ति मिली तो सन्तति नही होती। सन्तति होने पर जीवित नही रहती अथवा बडी होने पर सम्पत्ति का रक्षण नही कर सकती। सन्तति अधिक होने पर सम्पत्ति की चिन्ता होती है। कुटम्ब का पालन-पोषण ठीक तरह नही होता। इन दोनों की चिन्ता न हो तो लोगों में मान सन्मान प्राप्त करना, चुनाव में जीतना इन बातों की फिक्र करते हैं। स्त्री, प्रेयसी, स्थावर इस्टेट, सुख इनमें किसी एक की चिन्ता बनी रहती है।] पुंजराज ने मामा और

मौसियों के सुख का फल कहा। किन्तु इनका चतुर्थ स्थान से क्या सम्बन्ध है यह समझ में नही आता। अतः यह विचारणीय है। हिल्लाजातक और यवनजातक में २२ वें वर्ष लाभ का फल कहा है। यह हमें ठीक प्रतीत नही होता। शास्त्रकारों ने जो शुभ फल कहे वे पुरुष राशियों के हैं और अशुभ फल स्त्री राशियों के हैं।

हमारा अनुभव---इस स्थान में किसी भी राशि में गुरु हो, वह पूर्वार्जित इस्टेट का नाश करता है। या तो ऐसी इस्टेट होती ही नही। अपने प्रयत्न से ही धन प्राप्त करना पडता है। ३६ वें वर्ष तक स्थिरता प्राप्त नही होती। पिता का सुख जल्दी ही नष्ट होता है। मां भी जबतक जीवित रहती है तबतक भाग्योदय नही होता। इसके कमाये धन का उपभोग मातापिता नही कर पाते। नौकरी में वर्षों तक एकही जगह पडे रहते हैं। व्यापार मं भी बहुत मन्द प्रगति होती है। इनके जीवन में बारह वर्ष अच्छे जाते हैं, फिर बारह वर्ष अशुभ जाते हैं—इस प्रकार अच्छे बुरे का चक्र चलता है। मेष, सिंह या धनु में यह गुरु हो तो क्षेत्रचिन्ता होती है—अर्थात अपना निजी घर या बंगला हो, खेतीबाडी हो, बागवगीचे हों ऐसी इच्छा होती है। आयु के अन्त में घर मिलने की इच्छा पूरी होती है किन्तु अन्य इच्छाएं बनी रहती हैं। वृषभ, कन्या या मकर में हो तो द्रव्यचिन्ता या सन्ततिचिन्ता होती है। दोनों में कोई एकही सुख प्राप्त होता है। मिथुन, तुला या कुम्भ में यह गुरु हो तो प्रपंच की चिन्ता होती है। आयुभर स्थिरता नही मिलती। अपनी

इस्टेट कुछ नही होती। सन्तति बहुत होती है। कुछ व्यक्ति गोद लिये गये भी इस योग में देखे हैं। कर्क, वृश्चिक या मीन में यह गुरु हो तो गोद लिये जाने का योग विशेष रूप से होता है। ऐसा नही हो तो जनक मातापिता को बहुत कष्ट होते हैं। दुख, दारिद्रय वनवास, कष्ट का अनुभव करना पडता है। इस गुरु का सर्व साधारण फल पूर्वार्जित सम्पत्ति न होना, अपनी मेहनत से धन प्राप्त करना यह है। उत्तर आयुष्य कुछ अच्छा जाता है। माता या पिता की अल्पवय में मृत्यु होती है। उनके बाद भाग्योदय होता है। आयु का पूर्वार्धं कष्टमय होता है। पूर्वार्जित सम्पत्ति अपने हाथों नष्ट होती है या कोई ट्रस्टी हडप जाते हैं। चतुर्थं स्थान के गुरु के उदाहरण रूप एक कुण्डली इस प्रकार है—क्ष—जन्म ता. ३-३-१८८७ दोपहर १-४७ बम्बई।
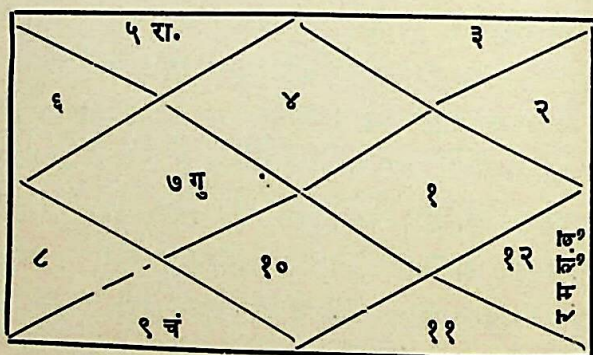
ये आयु के १२ वें वर्ष गोद लिये जाकर बडी इस्टेट के अधिकारी हुए किन्तु कचहरी के मामलों से सभी इस्टेट नष्ट होकर फिर अपने कष्ट से धन प्राप्त करना पडा।

दूसरा उदाहरण–जन्म ता. १०-९-१८९० सुबह ९। इनकी
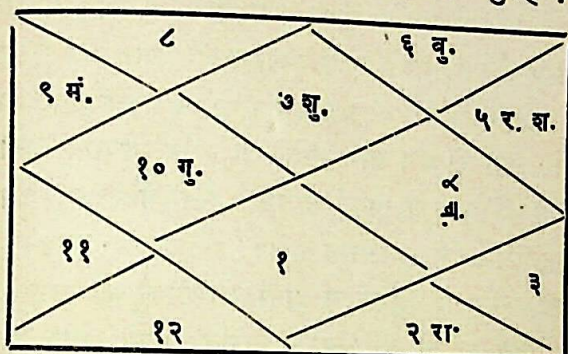
माता की मृत्यु बचपन में ही हुई। सौतेली मां आई। पन्द्रह-बीस लाख की इस्टेट थी। व्यसन कुछ नही थे। बडा व्यापार था। किन्तु रसायन के धोखे में पडकर सब इस्टेट गंवाई। अन्त में ससुर की ओर से चारपांच लाख की इस्टेट फिर प्राप्त हुई। वैदिक विवाह के पहले पुनर्विवाह किया था। सन्तति नही हुई। शिक्षा भी नही हुई।

पांचवें स्थान में गुरु

आचार्य व गुणाकर––धीमान्–बुद्धिमान होता है।

कल्याणवर्मा––सुखसुतमित्रसमृद्धः प्राज्ञो धृतिमांस्तथा विभवसारः। पंचमभवने जीवे सर्वत्र सुखी भवति जातः॥ सुखी, पुत्र और मित्रों से संपन्न, वुद्धिमान, धैर्यशाली, धनवान् होता है।

वैद्यनाथ––मन्त्री गुणी विभवसारसमन्वितः स्याद् अल्पात्मजः सुरगुरौ सुतराशियाते॥ यह प्रधान, गुणवान, धनवान

और कम पुत्रों से युक्त होता है। मीनस्थोऽत्यल्पसन्तानः चापस्थः कृच्छसन्ततिः। असन्ततिः कुलीरस्थो जीवः कुम्भेन सन्ततिः॥ पुत्रस्थाने कुलीरे वा मीने कुम्भे शरासने। स्थितो यदि सुराचार्य-स्तत्फलं कुरुते नृणाम्॥ यह गुरु कुम्भ या कर्क राशि में हो तो सन्तति नही होती। मीन में हो तो थोडी सन्तति होती है। धनु में हो तो कष्ट से युक्त सन्तति होती है। यह पंचमस्थ गुरु विफल होता है–गुरुः सुते तु।

गर्ग––समृद्धो बहुपुत्रश्च दाता भोक्ता गुणान्वितः। धनी मानी च सततं सुतस्थे देवतागुरौ॥ जीवे मकरे याते पंचमभे आत्मजमृतिं विद्यात्। मीनस्थितेपि चैवं नवमे शुभसंस्थितेल्पजीवौ च॥ जीवे शुभा मतिः॥ इन्दोर्वेश्मनि जीवे पुत्रस्थे दारिका-बहुलं स्यात्॥ ताताम्बिकासोदरमातुलाश्च मातामहाः पितृ-पिता च सूनुः। सूर्यादिखेटैः खलु पंचमस्थैर्नश्यन्ति नूनं मुनयो वदन्ति॥ यह समृद्ध बहुत पुत्रों से युक्त, दानी, भोक्ता, गुणवान, धनवान और मानी होता है। यह गुरु मकर या मीन में हो तो पुत्रों की मृत्यु होती है। यही नवम में शुभग्रह हों तो पुत्र अल्पायु होते हैं। बुद्धि शुभ होती है। यह कर्क राशि में हो तो कन्याएं अधिक होती हैं। पंचम में रवि हो तो पिता, चन्द्र हो तो माता, मंगल हो तो भाई, बुध हो तो मामा, गुरु हो तो नाना, शुक्र हो तो दादा और शनि हो तो पुत्र को मारक होता है। सुतपंचकदो गुरुः। पंचम में गुरु अकेला हो तो पांच पुत्र होते हैं।

वसिष्ठ––कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुखिनं सुरूपम्। बहुत पुत्र होते हैं। सुखी और सुन्दर होते हैं।

नारायणभट्ट---विलासे मतिर्बुद्धिगे देवपूज्ये भवेत् जल्पकः कल्पको लेखको वा । निदाने सुते विद्यमानेऽपि भूतिः फलोपद्रवः पक्वकाले फलस्य ॥ विलासी वृत्ति होती है । वक्ता, कल्पक अथवा लेखक होता है । किसी भी कार्य का फल प्राप्त होने के समय विघ्न आते हैं ।

बृहद्यवनजातक---सन्मित्रपुत्रोत्तममन्त्रशास्त्रसुखानि नानाधनवाहनानि । बृहस्पतिः कोमलवाग्विलासं नरं करोत्यात्मजभावसंस्थः ॥ उत्तम मित्र और पुत्र होते हैं । मन्त्रशास्त्र का अभ्यास करता है । विविध प्रकारों से धन और वाहन मिलते हैं । वाणी कोमल होती है । रिष्टमातुलगो मातुलार्तिम् । ७ वें वर्ष मामा को कष्ट होता है ।

महेश व ढुंढिराज---बृहद्यवनजातक के समान वर्णन है ।

आर्यग्रन्थकार---सुहृदयता च सुहृज्जनवन्दितः सुरगुरौ सुतगेहगते नरः । विपुलशास्त्रमतिः सुखभाजनं भवति सर्वजनप्रियदर्शनः ॥ मित्रों द्वारा सम्मान मिलता है । विविध शास्त्रों का अभ्यास करता है । सुखी और सब लोगों को प्रिय होता है ।

काशीनाथ---सुखे जीवे सुतैर्युक्तो धार्मिकः पंडितः सुखी । धार्मिक, विद्वान, सुखी और पुत्रों से युक्त होता है ।

जयदेव---सुमित्रपुत्रः ससुखार्थमन्त्रः प्राज्ञः शुचिः श्रेष्ठतमः सुतस्थे ॥ इसे पुत्र, मित्र, सुख और धन प्राप्त होता है । यह बुद्धिमान, पवित्र और श्रेष्ठ होता है ।

मन्त्रेश्वर---पुत्रैः क्लेशयुतो महीशसचिवो धीमान् सुतस्थे गुरौ । पुत्रों से कष्ट होता है । यह राजा का मन्त्री और बुद्धिमान होता है ।

जागेश्वर—गुरौ पंचमे पंडितोयं प्रतापी सुतानां सुखं वार्धके वै कदाचित्। सदा प्राप्तिकाले नराणां विरोधः परं वर्गराजो नृपो वै धनेशः ॥ पंडित और प्रतापी होता है। वृद्धावस्था में पुत्रों से कदाचित् ही सुख मिलता है। धनलाभ के समय विरोध उपस्थित होता है। अपने वर्ग का प्रमुख और धनवान होता है।

जीवनाथ—यदा प्रज्ञास्थाने जनुषि मनुजो भोगकुशलः सदार्थानां वक्ता सदसि च सतर्कः सुरगुरौ। सदर्थैः संपूर्णः प्रवरकृतिभिश्चापि महितः सदा योगाभ्यासी तनयतनयानन्दविमुखः ॥ उपभोग करने में कुशल, अच्छा वक्ता, सभाओं में तर्कयुक्त बोलनेवाला, धनवान, महान लोगों द्वारा सन्मानित, योगाभ्यास करनेवाला होता है। इसे सन्तति सुख नही मिलता।

घोलप—बन्धुओं को मान्य, उनके सम्वन्ध से सुशोभित, पुत्रों से युक्त, पण्डित, नीचों और शत्रुशों से दूर रहनेवाला, अच्छे लोगों का आश्रय लेनेवाला, अपने पराक्रम से सुशोभित, शूर, मित्रों का रक्षण करनेवाला, गुरु की कृपा से और पूर्वजों के गुण सुनकर तदनुसार सदाचरण में तत्पर रहनेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर—सेनाधिकारी, बुद्धिमान, बडी आंखोंवाला, कम पुत्रों से युक्त, खरीदीबिक्री में कुशल, पिता से श्रेष्ठ, पुत्रों के ऐश्वर्य से युक्त होता है।

लखनऊ के नवाब—पण्डितः फुरुतराहुद आर्यः पुत्रपौत्रसहितो महबूबः। मुश्तरी यदि भवेत् फरजंदस्यालये न मनुजो जरदारः ॥ पण्डित, चिन्तायुक्त, पुत्रपौत्रों से युक्त, तेजस्वी किन्तु निर्धन होता है।

हिल्लाजातक---पंचमे मातुलारिष्टं कुरुते पंचमे गुरुः। पांचवें वर्ष में मामा पर संकट आता है।

पाश्चात्य मत---इसके पुत्र आज्ञाधारक होते हैं। मनोरंजक खेल, सट्टा, जुंआ, साहसी काम, रेस, प्रेम प्रकरणों आदि में यह विजयी होता है। वृत्ति न्यायशील होती है। इस गुरु के साथ रवि का या चन्द्र का अथवा दोनों का त्रिकोण योग हो तो सट्टा, लाटरी अथवा अन्य आकस्मिक साधन द्वारा धन प्राप्त होकर इसका आयुष्यक्रम बदलता है।

अज्ञात---सुभूषः। बुद्धिचातुर्यंवान्, विशालकार्यंकरः, सुज्ञः। वाग्मी, प्रतापी, अन्नदानप्रियः, कुलप्रियः, धनवान्, मंत्रविद्यावान्। अष्टादशवर्षे राजद्वारेण सैनापत्ययोगः। पुत्रसमृद्धिः। पापयुते बलहीनो विपुत्रः। पापक्षेत्रे अरिनीचगे पुत्रनाशः। एकपुत्रवान्। पापक्षेत्रे पापयुते अरिनीचगे राजमूलेन धनव्ययः।

हमारे विचार---इस स्थान में आचार्य, गुणाकर, कल्याणवर्मा, वैद्यनाथ, गर्ग, वसिष्ठ, बृहद्यवनजातक, आर्यग्रन्थ, ढुण्ढिराज तथा जयदेव ने सब शुभफलों का वर्णन किया है। ये फल पुरुष राशियों में प्राप्त होते हैं। वैद्यनाथ ने कर्क, मीन, धनु तथा कुम्भ राशि में पुत्र न होना अथवा थोडे और रोगी पुत्र होना यह फल कहा। यह अनुभवसिद्ध फल है। पंचमस्थ गुरु निष्फल होता है यह वर्णन वृषभ, कर्क, कन्या, मकर, मीन तथा धनु राशियों के लिए ठीक प्रतीत होता है। ऐसे व्यक्तियों को धनलाभ और पुत्रलाभ का फल कभी अनुभव में नही आता। किन्तु अन्य

राशियों में गुरु के फलों का अनुभव अवश्य आता है। गर्ग, वसिष्ठ तथा वैद्यनाथ ने पंचम और दशम स्थान को मारक माना है और इन स्थानों में अलग अलग ग्रहों के होने से अलग अलग सम्बन्धियों के मृत्यु का फल कहा है। इसकी तालिका इस प्रकार है--

गर्ग	वसिष्ठ	वैद्यनाथ
रवि–पिता	रवि–पिता	रवि–पिता
चन्द्र–माता	राहु–माता	चन्द्र–माता
मंगल–भाई	मंगल–भाई	मंगल–मामा
बुध–मामा		
गुरु–नाना		
शुक्र–दादा		
शनि–पुत्र	शनि–पुत्र	शनि–पुत्र

वैद्यनाथ ने पंचम भाव में ही पिता के सुख और आयु का विचार करना चाहिए ऐसा कहा है–पुत्रादेवमथापि पुत्रपितृधी-पुण्यानि संचितयेत्। उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होगा कि गर्ग ने राहु को छोडकर अन्य सभी ग्रहों को एक एक व्यक्ति के लिए मारक माना है। वसिष्ठ ने सिर्फ पापग्रहों को मारक माना है और वैद्यनाथ ने चन्द्र का उनमें समावेश किया है। तात्पर्य यह प्रतीत होता है कि कोई ग्रह पंचम स्थान में हो तो वह जिस व्यक्ति का कारक ग्रह हो उस व्यक्ति के लिए मारक होता है। किन्तु इस पंचम स्थान जैसे शुभ स्थान में मृत्यु के फलों का वर्णन करना कुछ विलक्षण ही है। इस स्थान में गुरु के फल-

स्वरूप सन्तति नही होती ऐसा जीवनाथ का मत है। पुत्र कम होते हैं और कर्क, मीन, धनु तथा कुंभ में पुत्र नही होते ऐसा वैद्यनाथ ने कहा है। पुत्र होते हैं किन्तु उनसे सुख नही मिलता यह मंत्रेश्वर और जागेश्वर का वर्णन है। तात्पर्य यह कि पंचमस्थ गुरु सन्तति के बारे में अशुभ फल देता है। प्रयत्न का फल प्राप्त होते समय विघ्न आना यह फल नारायणभट्ट ने कहा सो ठीक ही है। ये व्यक्ति ज्ञानी, विद्वान किन्तु व्यवहार में उदासीन होते हैं अतः फलप्राप्ति में बाधा अवश्य आती है। अन्य अशुभ फल स्त्रीराशियों के हैं। अज्ञातने १८ वें वर्ष सेनापति होते का फल कहा। इसका अनुभव आना मुश्किल ही है। गोपाल रत्नाकर ने आंखें बडी होना यह फल कहा किन्तु इस स्थान का आंखों से कुछ संबंध प्रतीत नही होता। हिल्ला-जातक में ५ वें वर्ष और यवनजातक में ७ वें वर्ष मामा को अनिष्ट योग कहा है इसका अनुभव देखना चाहिए।

हमारा अनुभव—इस स्थान में गुरु मेष, सिंह, मिथुन, तुला या कुंभ में हो तो शिक्षा पूरी होती है। धनु में शिक्षा अधूरी रहती है। भाषाविज्ञान, बीजगणित अर्थशास्त्र, दर्शन पैलिओन्टालजी आदि विषयों का अच्छा अध्ययन होता है। पाठशालाओं में शिक्षक, प्राध्यापक, प्राचार्य आदि के रूप में ये यशस्वी होते हैं। वक्ता, लेखक, सम्पादक, शिक्षाविभाग के अधिकारी आदि के रूप में कार्य करते हैं। इन्हें पुत्र एकदो ही होते हैं। पुत्र स्वयं भाग्यवान होते हैं किन्तु उनसे पिता को कष्ट ही होता है। पिता जीवित हो तबतक उनका भाग्योदय

नही होता। पिता का नाम कलंकित करनेवाले पुत्र होते हैं। पिता के बाद ही वे अच्छा पद प्राप्त कर सकते हैं। ये लोग कीर्तिमान और भाग्यवान होते हैं किन्तु धन कम मिलता है। प्रेम प्रकरणों में ये यशस्वी होते हैं। इनकी पत्नी भी प्रणयक्रीडा-कुशल होती है। यह गुरु वृषभ, कन्या या मकर में हो तो शिक्षा अधूरी रहती है। व्यापार में भाग लेते हैं। बुद्धि मन्द होती है। सन्तति बहुत होती है–उसमें भी लडकियां अधिक होती हैं। साधारणतः धनहीन होते हैं। स्वभाव से रूक्ष किन्तु व्यवहार में दक्ष होते हैं। प्रेमप्रकरणों में इनका विश्वासघात होता है। पंचमस्थ गुरु कुछ व्यभिचारी वृत्ति का निदर्शक है। कर्क, वृश्चिक या मीन में यह गुरु हो तो सन्तति नही होती। गुरु ग्रह अग्नि-तत्त्व का और उष्ण प्रकृति का है अतः जलतत्त्व की राशि में यह ग्रह हो तो निष्फल होता है। इसलिए स्त्रीराशियों में गुरु सन्तति और धन के विषय में कुछ शुभ फल नही देता। ये लोग वकील, एडवोकेट या बैरिस्टर हुए तो हिन्दू कानून, इक्विटी आदि में प्रवीण होते हैं। वैद्यक, दर्शन, भाषा आदि में भी निपुण हो सकते हैं। ये लोग बहुत विद्वान होते हैं। पत्नी के साथ इन का बरताव प्रेमपूर्ण नही होता। किसी मुसाफिर जैसा व्यवहार करते हैं। पुत्रों की बहुत चिन्ता करते हैं किन्तु पत्नी की बिलकुल फिक्र नही करते। पूर्व आयु में स्थिरता नही मिलती। २८ वें वर्ष के बाद ही भाग्योदय होता है। पुत्रसन्तति नही होती अथवा पुत्रों से कुछ लाभ नही होता। हीन वर्गों में पुत्रप्राप्ति के वर्ष १८–२४–३०–३६–४२ ये होते हैं। उच्चवर्गों में ३०–३६–४२ ये वर्ष कहना चाहिये। पंचमस्थ गुरु होते हुए

जो डाक्टर होते हैं उन्हें अच्छा यश मिलता है। वकील भी इस योग में यशस्वी होते हैं। अन्य व्यवसायों में इस गुरु से लाभ नही होता। भिक्षुक, याज्ञिक, वैदिक ब्राम्हणों के लिए यह योग बहुत बार देखा है। पंचमस्थ गुरु के उदाहरणस्वरूप श्री. अच्युतराव कोल्हटकर की कुण्डली देखिए--
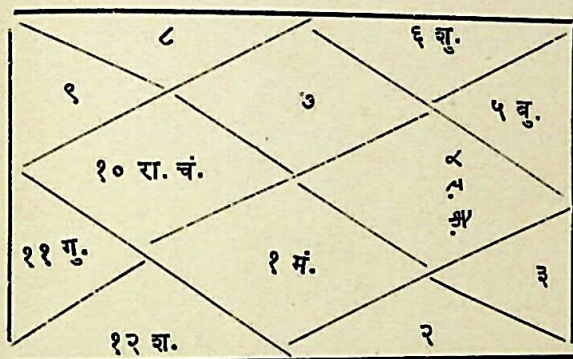
इनने एल. एल. बी. होने के बाद नागपुर में देशसेवक पत्र शुरू किया। वह बन्द होने पर बम्बई में कुछ व्यवहार किये। फिर नागपुर में स्वातंत्र्य नामक अिंग्लिश दैनिक पत्र शुरू करने की कोशिश की। वह असफल होने पर श्रुतिबोध मासिक बम्बई में शुरू किया। उसके बाद सन्देश साप्ताहिक का संचालन किया। अिस तरह सभी कार्यों में अधूरापन रहा। बहुत विद्वान थे। पुत्र कम थे।

छठवें स्थान में गुरु

आचार्य व गुणाकर-अशत्रुः। इसे शत्रु नही होते।

कल्याणवर्मा–स्वल्पोदराग्निपुंस्त्वः परिभूतो दुर्बलोलसः षष्ठे। स्त्रीविजितो रिपुहन्ता जीवे पुरुषोऽतिविख्यातः ।। भूख और पौरुष कम होता है। पराभव होता है। दुबला और आलसी होता है। स्त्री के आधीन होता है। शत्रुओं का पराभव करता है। प्रसिद्ध होता है।

वसिष्ठ–जीवः करोति विकलं शुचम्। रोगी और शोक करनेवाला होता है।

वैद्यनाथ–कामी जितारिरबलोऽरिगतेऽमरेज्ये। कामुक. शत्रुओं को जीतनेवाला और दुर्बल होता है।

गर्ग–स्वगेहे शुभगेहे वा षष्ठे गुरुरमित्रहा। शत्रुगेहेऽरिणा दृष्टे शत्रुपीडां ददाति सः ।। यह गुरु स्वगृह में अथवा शुभग्रह की राशि में हो तो शत्रुओं का नाश होता है। शत्रुग्रह की राशि में हो अथवा शत्रुग्रह की दृष्टि में हो तो शत्रुओं से कष्ट होता है। सबलौ शत्रुगौ स्यातां तदा स्याद् गोधनं बहु ।। यह गुरु बलवान हो तो विपुल गोधन प्राप्त होता है। गुरुः रिपुगेहे यदा भवेत् तदा भ्रातृस्वसृणांच मातुलानां महासुखं। भाईबहिनों के लिए तथा मामा के लिए सुखदायक होता है। यस्य जीवो भवेत् षष्ठे भवने तेजसा युतः। शुभं तस्य प्रवक्तव्यं जातस्य पृच्छकस्य वा। जन्मकुंडली अथवा प्रश्नकुंडली में छठवें स्थान में गुरु हो तो शुभ फल कहना चाहिए। सदैव दोषान् चन्द्रेण समः पतंगः। चंद्र के साथ हो तो यह दोष निर्माण करता है।

बृहद्यवनजातक–सद्गीतनृत्याहृतचित्तवृत्तिः कीर्तिप्रियोऽर्थी निजशत्रुहन्ता। आरम्भकालोद्यमकृन्नरः स्यात् सुरेन्द्रमन्त्री यदि

शत्रुसंस्थः ।। गाना, बजाना, नाचना आदि प्रिय होता है। कीर्तिप्रिय, शत्रुओं का नाश करनेवाला, कार्य के प्रारंभ में बहुत मेहनत करनेवाला होता है। षष्ठे भ्रातृनाशकरो गुरुः। यह गुरु भाइयों का नाश करता हैं। षष्ठे जीवे भवेच्चैव शत्रुमातुल-नाशकृत्। शत्रुओं का और मामा का नाश होता है। सुरगुरुः खाब्धौ च शत्रोर्भयं। ४० वें वर्ष शत्रु से भय होता है।

नारायणभट्ट–रुजार्तो जनन्या रुजः सम्भवेयू रिपौ वाक्पतौ शत्रुहन्तृत्वमेति। बलादुद्धतः को रणे तस्य जेता महिष्यादिशर्मा न तन्मातुलानाम् ।। इसे और इसकी माता को रोग होते हैं। शत्रुओं का नाश करता है। बहुत बलवान होने से युद्धमें इसे कोई जीत नही सकता। घर में भैंस आदि प्राणी रहते हैं। मामा को सुख नही मिलता।

जीवनाथ–जंभारेर्गुरुरमलकांतातितरतिः। सुन्दर स्त्रियों का उपभोग करनेवाला होता है। इसके अन्य फल नारायणभट्ट के समान हैं।

काशीनाथ–षष्ठे गुरौ विघ्नयुक्तो बहुशत्रुरनिष्ठुरः। उद्वेगी मतिहीनश्च कामुको जायते नरः ।। विघ्न आते हैं। शत्रु बहुत होते हैं। यह कठोर नही होता। उद्वेग करनेवाला, बुद्धिहीन और कामुक होता है।

पराशर–षष्ठे पराजयं व्याधिं च कुरुतः। गुरुणा रोगा-भावं तु नासिकायां। षड्वर्षद्वादशवर्षे ज्वररोगी भवेन्नरः। पराजय होता है। रोग नही होते किन्तु हुए तो नाक के रोग होते हैं। छठवें वर्ष और बारहवें वर्ष ज्वर से पीडा होती है।

ढुंढिराज–प्रारब्धकार्यालसकृन्नरःस्यात् । शुरू किये हुए कार्य में आलसी रहता है । अन्य वर्णन बृहद्यवनजातक के समान है ।

आर्यग्रंथकर्ता–करिहयैश्च कृशांगतनुर्भवेत् जयति शत्रुकुलं रिपुगे गुरौ । रिपुगृहे यदि वक्रगते गुरौ रिपुकुलाद् भयमातनुते विभुः ॥ शरीर कृश होता हैं । हाथीघोडों द्वारा शत्रुपर विजय प्राप्त करता है । यह गुरु यदि वक्री हो तो शत्रुओं से भय होता है ।

जयदेव–हिंस्त्रोलसः कीर्तियुतोऽरिहन्ता विरागवान् शत्रुगृहे गुरुश्चेत् । हिंसक, आलसी, विख्यात, शत्रुओं का नाश करनेवाला और विरक्त होता है ।

पुंजराज–सुरेज्यो वीर्यान्वितोऽरिस्थितस्तद्गृहं बहु गोधनेन सहितं वा सौरमेयैर्धनैः । वीर्याढ्येज्ये सुप्रजाः सौख्ययुक्तः पुत्रापत्यभ्रातृसौख्यान्वितः स्यात् ॥ यह गुरु बलवान हो तो उसके घर में गोधन और कुत्ते बहुत होते है । पुत्र और भाइयों का सुख मिलता है । मामा सुखी होता है ।

मन्त्रेश्वर–षष्ठे स्यादलसोऽरिहा परिभवी मन्त्राभिचारे पटुः । आलसी, शत्रुओं का नाश करनेवाला, अपमानित, जारण-मारणादि मन्त्रों में कुशल होता है ।

घोलप–धन थोडा होता है, शरीर जड होता है, मंगल काम नही होते, व्रणों से पीडा होती है, दुखी होता है, बहुत प्रवास करता है, पौरुष कम होता है ।

गोपाल रत्नाकर—ज्ञाति की वृद्धि करता है, पोते का मुख देख सकता है, विनोदप्रिय होता है, भूख कम होती है।

हिल्लाजातक—चतुर्विशन्मिते वर्षे शत्रुगो भयदो भवेत्। २४ वें वर्ष भय होता है।

लखनऊ नबाब—काहिलश्च बहुरोगयुतश्च मानवो बदसखुन् बदशक्ल:। मुश्तरी यदि भवेद् रिपुखाने मातुलादिभवसौख्यविहीन:।। आलसी, बहुत रोगों से पीडित, कठोर बोलनेवाला, कुरूप होता है। मामा इत्यादि से सुख प्राप्त नही होता।

पाश्चात्य मत—यह गुरु बलवान हो तो शरीर प्रकृति अच्छी होती है। नौकर अच्छे मिलते हैं। वैद्य, डाक्टरों के लिए यह गुरु अच्छा होता है। स्वास्थ्यविभाग की नौकरी में ये यशस्वी होते हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्यविषय में ये प्रवीण होते हैं। स्वतंत्र व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी के लिए यह गुरु अनुकूल होता है। यह गुरु यदि अशुभ योग में हो तो यकृत के विकार, मेदवृद्धि, तथा खानेपीने की अनियमितता से अन्य रोग होते हैं।

अज्ञात—इसका फलादेश अबतक के वर्णन में आ गया है।

हमारे विचार—इस स्थान में शास्त्रकारों ने अशुभ फलों का वर्णन किया उसका अनुभव पुरुष राशियों में आता है और शुभ फलों का अनुभव स्त्री राशियों में आता है। यवनजातक में ४० वें वर्ष शत्रुभय कहा उसका अनुभव नही आता। हिल्लाजातक में २४ वें वर्ष शरीरभय कहा यह अनुभवसिद्ध है।

हमारा अनुभव—यह गुरु किसी भी राशि में हो तो मामा और मौसियों का सुख नही मिलता। वैद्य, डाक्टरों के लिए यह

अशुभ होता है । अयशस्वी होते हैं । वकील भी इस योग पर यशस्वी नही हो पाते । इस गुरु का सामान्य फल यह है कि अच्छा वरताव करने पर भी लोगों में इस व्यक्ति के बारे में गलतफहमी होती है । इसे कठोर और व्यवहारी माना जाता है । पुरुष राशियों में यह गुरु हो तो जुंआ, शराब या वेश्यागमन का व्यसन होता है । मधुमेह, बहुमूत्र, हर्णिया, किडनी, मेदवृद्धि ये रोग होते हैं । यह गुरु यदि धनेश हो तो पैतृक सम्पत्ति नही मिलती । पिता का किया कर्ज चुकाना पडता है । मेष, कन्या या कर्क लग्न के लिए यह गुरु भाग्योदय में विरोधक होता है । मिथुन, तुला या मकर में हो तो नित्य कर्ज बना रहता है । एक कर्ज चुकाने के पहले ही दूसरा लेना पडता है । वेइज्जत होने का यह योग है । पुराणों में द्रौपदी के वस्त्रहरण का कारण उसके षष्ठ में कर्कस्थित गुरु बतलाया है ! द्रौपदी को जिस प्रकार श्रीकृष्ण की सहायता मिली उस प्रकार दैवी सहायता से ही आपत्तियों से छुटकारा मिलता है । षष्ठ में मीन राशि में गुरु होने से ललितकलादर्श नाटक मंडली के मालिक श्री. पंढारकर अन्तिम समय तक कर्ज के बोझ में ही रहे ।

सातवें स्थान में गुरु

आचार्य व गुणाकर—पितृतोऽधिकश्च । पिता से श्रेष्ठ होता है ।

कल्याणवर्मा—सुभगः सुरुचिरुदारः पितुरधिकः सप्तमे भवति जातः । वक्ता कविः प्रधानः प्राज्ञो जीवे सुविख्यातः ॥

यह भाग्यवान, अच्छी रुचिवाला, उदार, पिता से श्रेष्ठ, वक्ता, कवि, बुद्धिमान, प्रसिद्ध पुरुष होता है।

वैद्यनाथ--धीरश्चारुकलत्रवान् पितृगुरुद्वेषी मदस्थे गुरौ। वागीशे गुणयुक्ता सुपुत्रिणी। नीचे गुरौ मदनगे सति नष्टदारः। विप्रवनितां जीवे। धैर्यवान, सुन्दर स्त्री का पति, पिता और गुरु का द्वेष करनेवाला होता है। पत्नी गुणी और पुत्रवती होती है। यह गुरु नीच हो तो पत्नी की मृत्यु होती है। ब्राम्हण स्त्री का उपभोग करता है।

जातकालंकार--मदनगते वाक्पतौ पुत्रचिन्ता। पुत्रों की चिन्ता होती है।

वसिष्ठ--मानं वहुपुत्रयुक्तताम्। मान मिलता है, बहुत पुत्र होते हैं।

गर्ग--युवतिमंदिरगे सुरयाजके नयति भूपतितुल्यसुखं जनः। अमृतराशिसमानवचाः सुधीर्भवति चारुवपुः प्रियदर्शनः॥ राजा जैसा सुख मिलता है। अमृत के समान मधुर वोलता है। वुद्धिमान और सुन्दर होता है। पूज्ये रम्या सुतसूः। सुन्दर और पुत्रवती पत्नी प्राप्त होती है। सप्तमे गुरुसौम्यौ चेत् तदैका वनिता भवेत्। सप्तम में गुरु या बुध हो तो एक ही स्त्री होती है।

आर्यग्रंथकार--गर्ग के समान वर्णन है।

बृहद्यवनजातक--शास्त्राभ्यासेत्यन्तसक्तो विनीत; कान्ता-पित्रात्यन्तसंजातसौख्यः। मन्त्री मर्त्यः कार्यकर्ता प्रसूतौ जाया-भावे देवपूज्यो यदि स्यात्॥ अध्ययन में बहुत रुचि होती है।

नम्र होता है। मन्त्री तथा कार्यकर्ता होता है। पत्नी और पिता से सुख मिलता है। गुरुर्यमयमैः। २२ वें वर्ष स्त्री प्राप्त होती है।

ढुण्ढिराज---बृहद्यवनजातक के समान वर्णन है।

जयदेव---सुमित्रः--मित्र अच्छे मिलते हैं। अन्य फलादेश अबतक के वर्णन में आ गया है।

पुंजराज---जीवे गौरवर्णा नारी। पत्नी गौर वर्ण की होती है।

मन्त्रेश्वर---इसका फलादेश अबतक के वर्णन में आगया है।

जागेश्वर---गुरुर्गौरगरिष्ठां। स्त्री गौर वर्ण की होती है। भवेद् बुद्धिमान् सौख्ययुक्तो नरः स्यात् सुनेत्रीसुखं शत्रुजेता भवेद् वा। विभूत्या धिया को भवेत् तेन तुल्यो यदा प्राणनामालयेऽथो गुरुः स्यात्॥ बुद्धिमान, सुखी, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनेवाला और ऐश्वर्यवान होता है। स्त्रीसुख प्राप्त होता है।

पराशर---सप्तमे सैनापत्यं धनायतिः। सेनापतिपद और धन प्राप्त होता है।

घोलप---चोरी से अथवा चोरों और दुष्टों से धन प्राप्त करता है। कवि, गुणवान, प्रवास करनेवाला, सौम्य, वीर्यवान्, कामुक, अपनी जाति की प्रगति करनेवाला होता है। शरीरसुख प्राप्त होता है।

गोपालरत्नाकर---विद्वान, अभिमानी, गुणवान होता है। स्त्री पतिव्रता होती है। शरीर सम्बन्ध किसी उच्च घराने से होता है। व्यापार बढता है।

नारायणभट्ट--मतिस्तस्य बह्वी विभूतिश्च बह्वी रति-वैभवे भामिनीनामबह्वी । गुरुर्गर्वकृद् यस्य जामित्रभावे सपिंडाधिकोऽखंडकंदर्प एव ॥ बुद्धिमान, धनवान, गर्वयुक्त, भाईबहिनों में श्रेष्ठ और सुन्दर होता है। स्त्रीपर विशेष आसक्ति नही होती ।

काशीनाथ--सप्तमस्थे सुराचार्ये कामचित्तो महाबलः । धनी दाता प्रगल्भश्च चित्रकर्मश्च जायते ॥ कामुक, बलवान, धनवान, उदार, प्रगल्भ बुद्धि से युक्त और विचित्र कार्य करने--वाला होता है ।

हिल्लाजातक-द्वादशे वत्सरे स्त्रियः स्त्रीलाभं च बृहस्पतिः । १२ वें वर्ष स्त्री प्राप्त होती है।

लखनऊ नबाब--फाजिलः सुखयुतः सुविनीतो हम्जवाक् च रमणीसुखयुक्तः फारसश्च चतुरः किल ना स्यात् मुश्तरी यदि भवेज्जनखाने ॥ विद्वान, सुखी, नम्र, न्यायी, चतुर होता है ।

पाश्चात्य मत--इसे विवाह के कारण सुख, धन और विजय मिलता है । न्याय के कार्य में यश मिलता है यह गुरु मकर में हो तो संसारसुख ठीक तरह नही मिलता । पति या पत्नी उदार, न्यायी, सुस्वभावी, प्रामाणिक और स्नेहल होती है । विवाह से भाग्योदय होकर धन, श्रेष्ठ पद और मान्यता मिलती है । पत्नी या पति उच्च कुल का, धनवान और सुखी होता है । शत्रुता दूर होती है, मित्र मिलते है । साझीदार अच्छे होने से साझे के व्यवहार में और कचहरी के मामलों में यश मिलता है । वकीलों के लिए सप्तम में गुरु बलवान हो तो अच्छा योग होता है । क्योंकि ये समझौता करने में कुशल होते है । किन्तु यही

गुरु अशुभ योग में या कन्या राशि में हो तो विशेष लाभ नही होता।

अज्ञात–विद्याधनेशः बहुलाभप्रदः, चिन्ताधिकः, विद्यावान्, पातिव्रत्यभक्तियुक्तकलत्रः, सुनाभिकटिसंयुक्तः, शुभोदरः, सुखी। चतुस्त्रिंशद्वर्षे प्रतिष्ठासिद्धिः॥ यह गुरु धनेश या पंचमेश हो तो बहुत लाभ होता है। चिन्ता अधिक होती है। विद्वान होता है। स्त्री पतिव्रता होती है। इसकी नाभि, कमर और पेट सुन्दर होते है। ३४ वें वर्ष प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

हमारे विचार––इस स्थान में प्रायः सभी शास्त्रकारों ने गुरु के फल शुभ कहे है। ये पुरुष राशियों में प्राप्त होते है। सिर्फ वैद्यनाथ ने पितृगुरुद्वेषी और जातकालंकारकर्ता ने पुत्रचिन्ता ये अशुभ फल कहे हैं। इन का अनुभव स्त्रीराशियों में आता है। हिल्लाजातक में १२ वें वर्ष और यवनजातक में २२ वें वर्ष स्त्रीप्राप्ति का योग कहा है। उससमय बालविवाह प्रचलित थे अतः यह योग देरी से विवाह होने का समझना चाहिए।

हमारा अनुभव––इस स्थान का गुरु मेष, सिंह, मिथुन या धनु में हो तो शिक्षा पूरी होती है। वह व्यक्ति विद्वान, बुद्धिमान शिक्षक, प्राध्यापक, वकील या बॅरिस्टर और एकाधबार न्यायाधीश भी होता है। शिक्षाविभाग में नोकरी का यह योग है। पत्नी इच्छा के अनुकूल होती है और संसारसुख प्राप्त होता है। मिथुन, सिंह तथा कुम्भ में यह गुरु हो तो पुत्रसन्तति की चिन्ता होती है। सन्तति नही होती या होकर जीवित नही रहती। पति पर पत्नी का बहुत प्रभाव होता है और दोनों प्रेमसे

रहते हैं। वृषभ, कन्या, मकर, कर्क वृश्चिक, मीन इन राशियों में संसारसुख नही मिलता। पत्नी से झगडा होता है या वह भाग जाती है या तलाक देना पडता है। विवाह के विरूद्ध प्रवृत्ति होती है। अविवाहित रह सकते हैं। पतिपत्नी विभक्त हो कर रहते हैं। कर्क, वृश्चिक व मीन में ये अशुभ फल विशेष रीति से देखे हैं। तुला या मकर में यह गुरु हो तो दो विवाह होते हैं। विवाह के बाद भाग्योदय और स्थिरता प्राप्त होती है। इस स्त्रीराशि के गुरु से व्यापार की ओर प्रवृत्ति होती है। पुरुष राशि में गुरु हो तो पत्नीपर प्रेम कम होता है। स्वभाव दुष्ट होता है। स्त्री को पशु से अधिक योग्य नही समझते। किन्तु बाहर दिखावे से लोगों को उदार धर्मात्मा और दयालु प्रतीत होते हैं। स्त्री को अन्नवस्त्र ठीक मिले इसकी भी फिक्र नही रखते। यही लग्न में स्त्रीराशि में गुरु हो तो स्त्रीपुत्रों पर प्रेम होता है। उनकी फिक्र करते हैं। बाहर विशेष अच्छा बरताव नही होता। दूसरों से मदद की अपेक्षा करते हैं किन्तु स्वयं किसी को मदद नही करते। इसके विपरीत सप्तमस्थान में गुरु पुरुष राशि में हो तो स्त्रीपर प्रेम होता है और स्त्रीराशि में हो तो स्त्री को तुच्छ समझते हैं। इस स्थान के गुरु से पुत्रचिन्ता होती है। पत्नी गम्भीर, विचारी, प्रत्येक कार्य में सलाह देनेवाली, पति और वृद्धों की सेवा करनेवाली, स्नेहल, व्यवहार में दक्ष, प्रपंचकुशल होती है। कार्येषुमन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा इस प्रकार वह सभी कामों में कुशल होती है। कर्क राशि में यह गुरु हो तो ऐसी स्त्री प्राप्त होती है किन्तु आयु के मध्यभाग में ही उसकी अचानक

मृत्यु होती है । कालिदास के रघुवंश काव्य में अजराजा की इन्दुमती नामक रानी की मृत्यु का वर्णन इसी प्रकार किया है । एकदिन प्रासाद के गच्च पर वार्तालाप करते हुए ये दम्पति बैठे थे । उसी समय आकाशमार्ग से जा रहे नारद मुनि की पुष्पमाला नीचे गिरी और उस का स्पर्श होते ही इन्दुमती की मृत्यु हो गई ।

आठवें स्थान में गुरु

आचार्य व गुणाकर---दुष्कर्म-बुरे काम करता है ।

कल्याणवर्मा---परिभूतो दीर्घायुर्भृतको दासोऽथवा निधनसंस्थे । स्वजनप्रेष्यो दीनो मलिनस्त्रीभोगवान् जीवे ।। पराभव पानेवाला, दीर्घायु, दीन, नौकर अथवा गुलाम, स्वजनों में नौकरी करनेवाला और मलिन स्त्री का उपभोग करनेवाला होता है ।

वैद्यनाथ---मेधावी नीचकर्मा यदि द्विजगुरौ रन्ध्रयाते चिरायुः । बुद्धिमान, नीच काम करनेवाला और दीर्घायु होता है ।

वसिष्ठ---इस स्थान के गुरु के रोगविषयक फलों का वर्णन मंगलविचार में किया है ।

पराशर---अष्टमे वन्धनं तथा । कारावास भोगना पडता है ।

गर्ग---जीवे मृत्युगते ज्ञानात् सुतीर्थे मरणं भवेत् । शुभर्क्षे स्वगृहे चेत् स्यादन्यत्र मरणं श्रमात् ।। यह गुरु शुभ राशि में या स्वगृह में हो तो ज्ञानपूर्वक किसी तीर्थ स्थान में मृत्यु होता है । अन्यथा कष्टपूर्वक मृत्यु होता है ।

काश्यप---नानारोगैः १ शूलरोगैः २ कर्णरोगात् ३ तथैव च। स्वजनात ४ विषुचिकातः ५ अतीसारात् ६ निजमृत्युतः ७ रक्तकोपात् ८ तुरगतो ९ निजेशात् १० राजकोपतः ११ बहुभक्षणात् १२ भवेत् मृत्युर्जीवे स्यात्मृत्युभावगे ॥ यह गुरु मेष राशि में हो तो विविध रोगों से, वृषभ में हो तो शूलरोग से, मिथुन में हो तो कर्ण रोग से, कर्क में हो तो अपने ही लोगों से, सिंह में हो तो विषूचिका (कॉलरा) से, कन्या में हो तो अतिसार से, तुला में हो तो अपने नौकरों द्वारा, वृश्चिक में हो तो रक्तदोष से, धनु में हो तो घोडे पर से गिरने से, मकर में हो तौ राजाद्वारा, कुंभ में हो तो राजकोप से और मीन में हो तो बहुत खाने से मृत्यु होता है।

नारायणभट्ट---चिरंनो वसेत् पैतृके चैव गेहै चिरस्थायि नो तद्गृहं तस्य देहः। चिरं नो भवेत्तस्यनीरोगमंगं गुरुर्मृत्युगो यस्य वैकुण्ठगन्ता ॥ यह पिता के घर में बहुतकाल नही रहता। घर और शरीर चिरकाल नही टिकता। शरीर में हमेशा रोग बने रहते हैं। मृत्यु के बाद अच्छी गति मिलती है।

बृहद्यवनजातक---प्रेष्यो मनुष्यो मलिनोऽतिदीनो विवेकहीनो विनयोज्झितश्च। नित्यालसः क्षीणकलेवरश्चेद् आयुर्निशेषे वचसामधीशः ॥ यह नौकर, मलिन, बहुत दीन, अविवेकी, अतिउध्दत, आलसी, दुबला होता है। गुरुरिन्दुरामै रोगम्। ३१ वें वर्ष रोग होते हैं।

ढुण्ढिराज---यवनजातक के समान वर्णन है।

काशीनाथ---जीवेऽष्टमे सदा रोगी कृपणः शोकसंयुतः। बहुवैरी कुकर्मा च कुरूपश्च भवेन्नरः॥ यह हमेशा रोगी, कंजूस

शोक से युक्त, बुरे काम करनेवाला और कुरुप होता है। इसे बहुत शत्रु होते है।

जयदेव--काशीनाथ के समान वर्णन है।

आर्यग्रन्थकार--विमलतीर्थकरश्च बृहस्पतौ निधनता न मनःस्थिरता यदा। धनकलत्रविहीनकृशः सदा भवति योगपथे निरतः परम्॥ तीर्थयात्रा करनेवाला, चंचल, धनहीन, स्त्रीहीनः दुबला, सदा योगाभ्यास करनेवाला होता है।

जागेश्वर--परं पैतृकं नैव धान्भं सुखं वा गृहे नैव ॠद्धि, स रोगी नरःस्यात्। कुतस्तस्य भाग्यं धनं क्षीयते वै यदा जीवनामा विनाशं गतः स्यात्॥ इसे पैतृक धनधान्य प्राप्त नही होता। सुख, धन, भाग्य, वैभव यह कुछ प्राप्त नही होता। हमेशा रोगी रहता है।

मन्त्रेश्वर--नारायणभट्ट के समान वर्णन है।

जीवनाथ--बुद्धि स्थिर होती है, शरीर सुन्दर होता है। अन्य वर्णन नारायणभट्ट के समान है।

घोलप--इसका फलादेश अबतक के वर्णनों में आ गया है।

गोपाल रत्नाकर--नीच काम करनेवाला, पतित, विधवा से व्यभिचार करनेवाला, शूलरोगी, दीर्घायु होता है। फीस लेकर पढाने का काम करता है।

लखनऊ नबाब--बेदिलश्च परदेशरतश्च जाहिलः खलु नरः सगदश्च। मुश्तरी यदि हि हस्तमखाने गुस्वरः स किल भवेज्जनमस्तः॥ निर्दय, मूर्ख, रोगी, लोगों की परवाह न करनेवाला और विदेशों में रहनेवाला होता है।

पाश्चात्य मत--यह गुरु बलवान हो तो विवाह से आर्थिक लाभ होता है और प्रगति होने लगती है। किसी के वसीयत-द्वारा अथवा मृत्यु के कारण धन मिलता है। यह बलवान गुरु शनि के साथ शुभ योग करता हो तो वसीयतद्वारा स्थावरजंगम सम्पत्ति अवश्य प्राप्त होती है। किन्तु यही गुरु पीडित हो तो इन्ही मार्गों से असफलताद्वारा हानि होती है। इस गुरु से दीर्घायु प्राप्त होती है। मृत्यु शान्त अवस्था में होता है। अपने जन्म का साध्य पूरा हुआ यह जान करही मानों ये लोग मृत्यु का स्वागत करते हैं।

अज्ञात--अल्पायुः नीचकृत्यकारी, पतितः। बलवान्, अरोगी, पुण्यकर्ता, पौरुषपूर्णः, विद्वान्, वेदशास्त्रविचक्षणः॥ यह अल्पायु, नीच काम करनेवाला और पतित होता है। यह गुरु बलवान हो तो नीरोग, पुण्यकार्य करनेवाला, बलवान, विद्वान और वेदशास्त्रों का ज्ञाता होता है.।

हमारे विचार--

इस स्थान में प्रायः सभी शास्त्रकारों ने अशुभ फल बतलाए हैं। इसका अनुभव स्त्रीराशियों में आता है। पराशर ने बन्धनयोग कहा है। यह बन्धन कर्ज अधिक होने से कारावास के रूप में होता है। फौजदारी मामलों में नही होता। गोपाल रत्नाकर ने फीस लेकर पढाने का फल कहा। यह वास्तव में नवम या सप्तम स्थान का है। अन्य शुभफलों का अनुभव पुरुष राशियों में आता है।

हमारा अनुभव—

इस स्थान में मेष, सिंह, धनु, मिथुन या तुला में गुरु हो तो किसी के वसीयत द्वारा अथवा वारिस के रूप में सम्पत्ति प्राप्त होती है। धनु या मिथुन राशि में विधवा स्त्रियोंद्वारा रखी गई अनामत रकम प्राप्त होती है क्यों कि मृत्यु आदि द्वारा उन स्त्रियों का नाश होता है। वृश्चिक या कुम्भ में यह गुरु हो तो विवाह से भाग्योदय कम होता है। व्यवहार में बाधा आती है, उद्योग ढीले पडते हैं। पैतृक इस्टेट नष्ट होती है। ससुर गरीब होता है या विवाहके बाद वह धनहीन होता है। यह गुरु कर्क में हो तो हमेशा कर्ज होता है। धन नष्ट होकर गरीबी बढती है। व्यवहार किसी तरह निभाना पडता है। पैतृक सम्पत्ति धीरे धीरे नष्ट होती जाती है। इस गुरु से दारिद्रय या वंशक्षय का फल प्राप्त होता है। उदाहरणस्वरूप एक पतिपत्नी की कुण्डलियां देखिए। पति-जन्म शक १८१७ मार्गशीर्ष शु. १० मंगलवार इष्ट घटी ७-१५ अशांश ११.२० रेखांश ७२-५२.
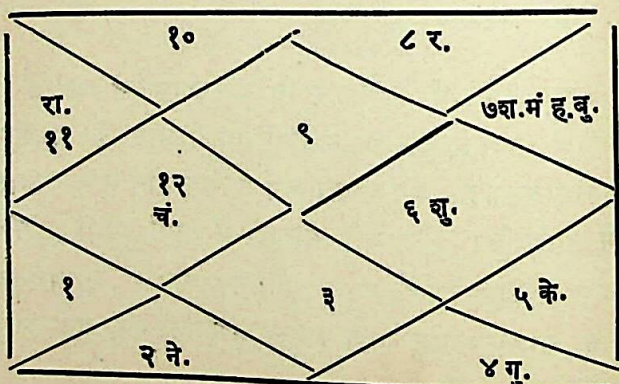
पत्नी—जन्म शक १८२२ आषाढ क्ट. १ इष्ट घटी १०-१० स्पष्ट लग्न ४-२५-२७-५४.
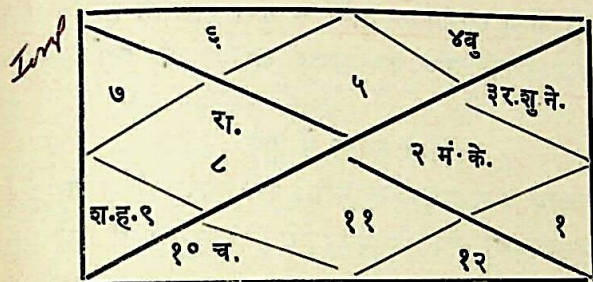
विवाह के पहले ये लक्षाधीश थे। किन्तु बाद में अवनति होकर आखिर अन्नान्न दशा हो गई। दो लडकों की मृत्यु हुई। एक जीवित रहा। इस गुरु का एक शुभ फल अवश्य मिलता है। इस व्यक्ति की पत्नी शान्त, धैर्यवती, आनन्दी, संकटों में स्थिर रहनेवाली और घरकी बातें बाहर न बतलानेवाली होती है। इस गुरु से दीर्घायु प्राप्त होती है। यह स्त्रीराशि में हो तो आयु के ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३ इन वर्षों में आपत्तियां आती हैं। पुरुष राशि में हो तो ७, १४ २१, २८, ३५ और ९, १८, २७, ३६ इन वर्षों में आपत्तियां आती हैं। भाग्याधिपे विनाशस्थे नीचशत्रुखगेक्षिते। क्रूरांशे नीचराश्यादौ भाग्यहीनो भवेन्नरः॥ अष्टम में भाग्येश क्रूर या नीच राशि में या नीच अथवा शत्रुग्रह द्वारा दृष्ट हो तो वह व्यक्ति भाग्यहीन होता है। हमारे अनुभव से यह भाग्यहानि विवाह के बाद होती है। यह गुरु पुरुष राशि में हो तो घरकी बातें घरमें ही रहती हैं। पत्नी और नौकर विश्वासु होते हैं।

स्त्रीराशि के गुरु से घरके गुह्य सबको मालूम होते हैं। नौकर अच्छे नही मिलते। इस स्थान में गुरु किसी भी राशि या योग में हो–मृत्यु शारीरिक दृष्टि से बुरी हालतमें ही होता है। पुराणों में रावणकी मृत्यु का कारण अष्टम में कर्क का गुरु बताया है।

नौवे स्थान में गुरु

आचार्य व गुणाकर–तपस्वी। ग्रह तपश्चर्या करता है।

कल्याणवर्मा–दैवतपितृकार्यरतो विद्वान् सुभगो भवेत् तथा नवमे। नृपमन्त्री नेता वा जीवे जातः प्रधानश्च॥ देव तथा पितरों के कार्य में तत्पर होता है। विद्वान, भाग्यवान राजा का मन्त्री, नेता अथवा प्रधान पुरुष होता है।

पराशर–सर्वसंपत्समृद्धिं च नवमे राजसंपदम्। सभी प्रकार की सम्पत्ति बढती है। राजा जैसा ऐश्वर्य मिलता है।

वैद्यनाथ–ज्ञानी धर्मपरो नृपालसचिवो जीवे तपस्थानगे। ज्ञानी, धार्मिक और राजा का मन्त्री होता है।

नारायणभट्ट–एकोऽपि यदि केन्द्रस्थो भार्गवो वा गिरांपतिः। नवमे वा सुतस्थाने दारिद्र्यं च न जायते। गुरु या शुक्र अकेलाही केन्द्र में अथवा पंचम या नवम स्थान में हो तो दारिद्र्य प्राप्त नही होता। लग्नधर्मसुत आयबंधुषु देवपूज्यनृपसोमसम्भवाः। लक्षदोषमुपयाति विनाशं अन्धकारमिव भास्करोदये॥ लग्न, नवम, पंचम, एकादश या तृतीयस्थान में गुरु, शुक्र अथवा बुध हों तो अन्यग्रहों के लाखों दोष भी दूर होते हैं।

जातकालंकार–नवमसुते पुत्रजा वासवेज्ये। गुरु नवम या पंचम स्थान में हो तो पुत्रचिन्ता होती है।

वसिष्ठ–सुखं सुरराजमन्त्री धर्मक्रियासु निरतं कुरुते मनुष्यम् ।। सुखी, और निरन्तर धार्मिक कार्यों में तत्पर रहता है।

गर्ग–विविधतीर्थंकरः सुकलेवरः सुरगुरौ नवमे सुखवान् गुणी। त्रिदशयज्ञकरः परमार्थवित् प्रचुरकीर्तिकरः कुलवर्धनः।। तीर्थयात्राएं करनेवाला, सुन्दर, सुखी, गुणवान, देवताओं के लिये यज्ञ करनेवाला, परमार्थ को जाननेवाला, बहुत कीर्ति प्राप्त करनेवाला और कुल को बढानेवाला होता है। आयुः-पर्यन्तं सुखयोगः। गुरुर्भाग्ये भवेन्मन्त्री महाभाग्योऽखिलेश्वरः। जीवनभर सुख मिलता है। बहुत भाग्यवान, बहुत लोगों का स्वामी और राजा का मन्त्री होता है।

बृहद्यवनजातक–नरपतेः सचिवः सुकृती पुमान् सकल-शास्त्रकलाकलनादरः। व्रतकरो हि नरो द्विजतत्परः सुरपु-रोधसि वै नवमे स्थिते।। यह कर्तृत्ववान, राजा का मन्त्री, सभी शास्त्रों और कलाओं के अभ्यास में आस्था रखनेवाला, व्रत धारण करनेवाला और ब्राम्हणों की सेवा में तत्पर होता है। जीवस्तिथ्यद्बके पितृमृतिंच। १५ वें वर्ष पिता का मृत्यु होता है। जीवे षोडश। १६ वें वर्ष लाभ होता है।

आर्यग्रन्थकार–सुरगुरौ नवमे मनुजोत्तमो भवति भूपतितुल्य-धनी शुचिः। कृपणबुद्धिरतः सुखी बहुधनः प्रमदाजनवल्लभः।। यह श्रेष्ठ पुरुष राजा के समान धनवान, पवित्र, कंजूस, सुखी और स्त्रियों को प्रिय होता है।

मन्त्रेश्वर–शुभेऽर्थसुतवान्। धन और पुत्र प्राप्त होते हैं।

जयदेव–सुविद्यः। उत्तम विद्या प्राप्त होती है। अन्य वर्णन पहले आ गया है।

काशीनाथ–धर्मे जीवे धर्मकर्ता साधुसंगी च शास्त्रवित्। विनयी तीर्थसेवी च ब्रम्हज्ञश्च स जायते ॥ धर्मकार्य करता है, साधुओं की संगति में रहता है। शास्त्रों को जानता है, तीर्थ-यात्रा करता है। विनयी और ब्रम्हज्ञानी होता है।

नारायणभट्ट–चतुर्भूमिकं तद्गृहं तस्य भूमिपतेर्वल्लभो वल्लभा भूमिदेवाः। गुरोर्धर्मगे बान्धवाः स्युर्विनीताः सदा-लस्यतो धर्मवैगुण्यकारी ॥ चार मंजिलों का घर होता है। यह राजा का प्रिय और ब्राम्हणों पर भक्ति रखनेवाला होता है। इसके रिश्तेदार सद्भावना से रहते हैं। आलस के कारण धर्मकार्य में न्यूनता होती है।

जीवनाथ–नारायणभट्ट के समान मत है।

जागेश्वर–भवेद् भाग्ययुक्तो नरः श्रेष्ठशक्तिस्तथा तीर्थ-पुण्यादिवार्तासु सक्तः। भवेद् बान्धवैः सेवकैः संप्रयुक्तो यदा देवपूज्यो ध्रुवं पुण्ययातः ॥ यह भाग्यवान, शक्तिमान, तीर्थ-यात्रा तथा अन्य पुण्यकार्यों में रुचि रखनेवाला, रिश्तेदार और नौकरों से युक्त होता है।

घोलप–यह सूर्य के समान तेजस्वी, पराक्रमी, गृहकृत्यों में निपुण, शत्रुओं का धन हरण करनेवाला, सुन्दर और सब लोगों के चित्त को प्रसन्न करनेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर–धार्मिक, तपस्वी, सदाचारी, दानशील होता है। इसका पिता दीर्घायु होता है। इसे कई पुत्र होते हैं।

हिल्लाजातक–यवनजातक के समान वर्णन है।

लखनऊ नवाब-हजरते च खुश परिजनवांश्च खूबरो बहुसुखी च मुशीरः । आमिलश्च यदि यख्तमखाने मुश्तरी प्रविभवेत् खलु यस्य ।। यह भाग्यशाली, सुन्दर, बडे परिवारवाला, अति सुखी, कीर्तिमान अधिकारी होता है।

पाश्चात्यमत-धार्मिक, सच बोलनेवाला, नीतिमान, विचारी और माननीय होता है। इसे कानून के काम, क्लर्क का काम, धार्मिक विषय, वेदान्त, दूर के प्रवास, इनमें लाभ होता है। विवाहसम्बन्ध से जो नये रिश्तेदार होते हैं उनसे अच्छा सुख प्राप्त होता है। यह योग अध्यात्मज्ञान और योगाभ्यास का द्योतक है। अन्तर्ज्ञान या भविष्य का ज्ञान प्राप्त होता है। न्यायकार्य, लेखन आदि के लिए यह गुरु शुभ है। यह गुरु यदि पीडित हो तो ऊपरी दिखावा, वृथा अभिमान बहुत होता है। वाहियात बरताव से इसकी बेइज्जत होती है।

अज्ञात-जीवो नवमे बलिष्ठः। पंचत्रिंशवर्षे यज्ञकर्ता। अनेकप्रतिष्ठावान्। बहुजनपालक :।। गुरु नवमस्थान में बलवान होता है। यह व्यक्ति ३५ वें वर्ष यज्ञ करता है। बहुत सन्मान प्राप्त होता है। बहुत लोगों का पालन करता है।

हमारे विचार-प्रायः सभी शास्त्रकारोंने इस स्थान में बहुत शुभ फलों का वर्णन किया है। इन फलों का अनुभव मेष, सिंह, धनु और मीन राशियों में आता है। जो थोडे अशुभ फल कहे हैं वे अन्य राशियों के हैं। नवमस्थान पिता का स्थान है। अतः हिल्लाजातक और यवनजातक में १५ वें वर्ष पिता की मृत्यु का

फल कहा हैं। इसका अनुभव देखना जाहिये। अज्ञात ने ३५ वें वर्ष यज्ञ कराने का जो फल कहा उसका अनुभव मिलना सम्भव नही है।

हमारा अनुभव—नवमस्थान में गुरु हो तो उस व्यक्ति का स्वभाव शान्त और सदाचारी होता हैं। विचार उच्च होते हैं। मेष, सिंह, धनु या मीन में हो तो आर्टस् विषयों में शिक्षा पूरी होकर एम्. ए., एल्एल्. बी., पीएच्. डी., डी. लिट्. आदि उपाधियां प्राप्त करते हैं। प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी के अधिकारी, उपकुलगुरु आदि पद प्राप्त करते हैं। यह गुरु वृषभ, कन्या, मकर में हो तो विज्ञानविषयों में एम्. एस्-सी आदि पदवियां प्राप्त कर शिक्षक के रूप में प्रगति करते हैं। कभी व्यापारी भी होते हैं। इनके विचार संकुचित, अपने फायदे की बात सोचने-वाले होते हैं। इनकी वहुत प्रगति नही होती। मिथुन, तुला या कुम्भ में यह गुरु हो तो प्रकाशक, वृत्तपत्रों में सम्पादक, मुद्रक आदि होते हैं। कर्क में यह गुरु हो तो शिक्षा पूरी होती है। बादमें सन्तति नही होती। वृश्चिक या मीनमें हो तो शिक्षा पूरी होती है। वकील, बॅरिस्टर, कानूनके प्रोफेसर, संशोधक, न्यायाधीश, बडे अधिकारी होते हैं। यह पुरुषराशि में हो तो भाईबहिनें कम होती हैं। उनके साथ प्रेमपूर्ण बरताव होता है। स्त्रीराशि में हो तो भाईबहिनें अधिक होती हैं किन्तु प्रेम नही रहता। झगडे होकर बंटवारा होता है। नवम गुरु हो तो भाइयोंने एकत्र कुटुम्ब में नही रहना चाहिए। इस योग में एकसाथ दोनों भाई प्रगति नही कर पाते। पुरुष राशि में सन्तति

कम होती है। एक या दो पुत्र होते हैं। स्त्रीराशियों में वृश्चिक में सन्तति अधिक होती है। कर्क और मीन में सन्तति नही होती। विवाह में ही अडचनें आती हैं। वृषभ, कन्या, मकर में सन्तति होती है किन्तु जीवित नही रहती। साधारणतः इस स्थान के गुरु से पुत्रचिन्ता बनी रहती है। पुत्र न होकर लडकी होती है। पुत्र होकर मृत होता है। जीवित रहा तो इच्छा के विरुद्ध आचरण करता है। सुशिक्षित होकर भी ठीक बरताव नही करता। इन्हें २६ वें वर्ष से भाग्योदय का आरम्भ होकर ३२ वें वर्ष अच्छा सन्मान मिलता है। जीवन सुखपूर्वक और सरल रीतिसे व्यतीत होता है। इसकी माता, पिता, भाई, बहिन आदि के मृत्यु तीन के गुणक वर्षो में (३, ६, ९, १२ आदि) होते हैं। सन्मान, राजकृपा आदि शुभयोग चार के गुणक वर्षो में (४, ८, १२, १६) होते हैं। नवमस्थान पितृस्थान है किन्तु माताका मृत्यु होना यह यवनजातक का फल भी अनुभव के अनुकूल ही है। कभी दोनों फलों का अनुभव भी आता है। इस स्थान के गुरु से कुछ व्यभिचारी प्रवृत्ति होती है। यह योग स्त्रीराशियों में विशेषतः होता है। वय अथवा सम्मान से ज्येष्ठ स्त्री–चाची, मामी, मौसी, सौतेली मां, गुरु अथवा किसी बडे अधिकारी की पत्नी आदि–से यह सम्बन्ध होता है। (इसका वर्णन करते समय अन्य ग्रहों का सम्बन्ध भी देखना चाहिए) अब नवमस्थ गुरु के कुछ उदाहरण देते हैं–

(१) श्री. नामदेवबुवा–अमरावती–जन्मशक १७८२ फाल्गुन कृ. व शनिवार रात्रि १० बजे। ये उत्तम गायक थे। आजन्म
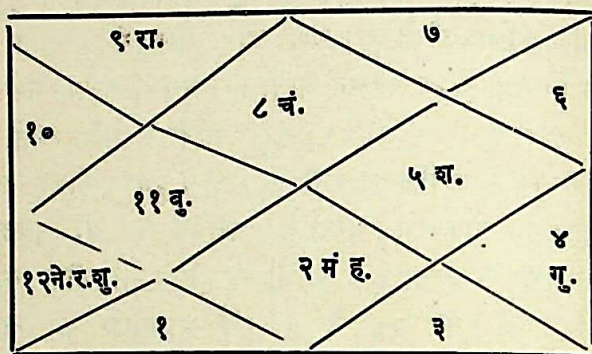
अविवाहित रहे ।

(२) एक क्ष जन्म ता. १७–३–१८७९ दोपहर १२, स्थान
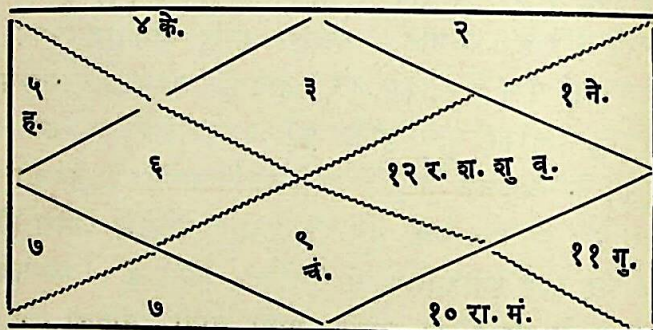
नागपुर । इसका माताके समान माननीय स्त्रीसे व्यभिचार सम्बन्ध हुआ । तब से भाग्योदय समाप्त होकर शराब का व्यसन लगा । अर्धांगवायु से वाणी नष्ट हुई और ७०० रु. तनखाह की सरकारी नौकरी छोडनी पडी । फिर भीख मांगते हुए महारोग होकर १९४० में इसकी मृत्यु हुई । एक लडका था वह भी बाद में मृत हुआ ।

(३) श्रीमान बाबासाहेब खापर्डे जन्म ता. २७-८-१८८०. सुबह ४-३० स्थान अमरावती।
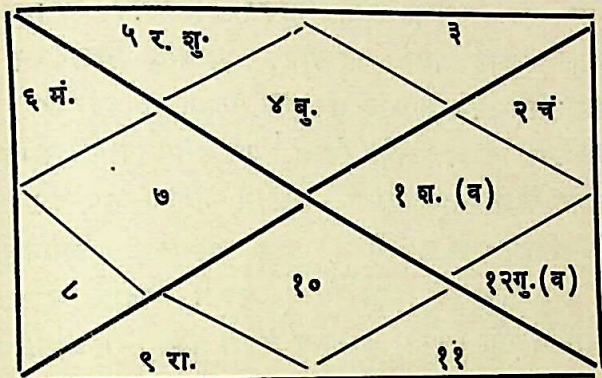
ये दो बार मध्यप्रांत में मन्त्री रहे। उदय साप्ताहिक पत्र के सम्पादक थें। स्वभाव बहुत शान्त, विचारी, समय देख कर बर्ताव रखनेवाला है। पुत्रों का भाग्योदय कैसे होगा इतनी चिन्ता थी।

(४) नेताजी सुभाषचन्द्र बोस-जन्म २३-१-१८९७. सूर्योदय के पहले, स्थान-कटक (ओरिसा)। लग्न-धनु-नवम अंश।
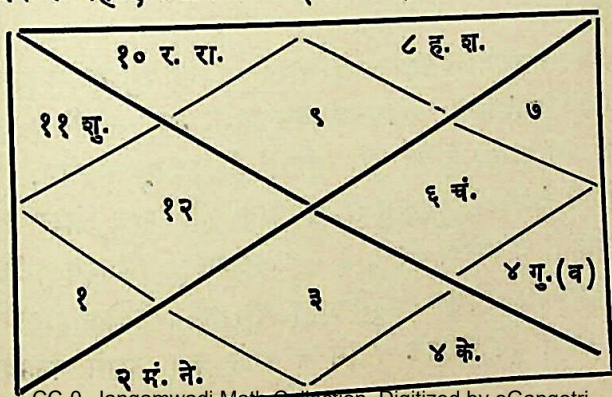
इस कुंडली में लग्नेश गुरु भाग्य में है । फलतः परमार्थ की ओर रुची रही । सद्गुरु की खोज में जंगलों में घूमे । आय्. सी. एस. परीक्षा पास होकर राजकीय अधिकारपद मिलने का अवसर आया । वह छोडकर देशबन्धु चित्तरंजन दास की सलाह से कांग्रेस के कार्य में भाग लिया । हरिपुरा और त्रिपुरी काँग्रेस का अध्यक्षपद मिला । यह सन्मानयोग भाग्य में लग्नेश गुरु के फलस्वरूप हुआ । षष्ठ में मंगल, नेपच्यून और व्यय में शनिहर्षल के फलस्वरूप दीर्घ कारावास, देशनिकाला इत्यादि दण्ड प्राप्त हुए । एक बन्धु अच्छी स्थिति में रहे । माता जीवित रहीं । पिता का मृत्यु जल्दी हुआ । तत्वज्ञान बहुत प्रिय था । कलकत्ता में कैद से अचानक भाग कर जर्मनी गये । यह अदृश्य होना तब हुआ जब लग्नेश गुरु का गोचर भ्रमण षष्ठस्थ मंगलपर हो रहा था ।

दसवें स्थान में गुरु

आचार्य तथा गुणाकर–सधनःवित्तैर्युक्तः । धनवान होता है ।

कल्याणवर्मा–सिद्धारम्भो मान्यः सर्वोपायकुशलःसमृद्धश्च । दशमस्थे त्रिदशगुरौ सुखधनजनवाहनयशोभाक् ॥ जिस कार्य का आरम्भ करता है वह पूरा होता है । सन्माननीय, सभी उपायों में कुशल, समृद्ध, सुखी, धनवान, कीर्तिमान और लोगों तथा वाहनों से सम्पन्न होता है । पंचदशषट् समेतश्चत्वारिंशत् तथैकविंशश्च । त्रिंशत् चतुस्त्रिंशत् पंचाशदेव यथोक्तहोरायुः ॥ प्रोक्ता सहजे तुर्ये पंचमके सप्तमे च नवमे च । दशमे चैकादशके

गृहेषु जीवस्थितौ वर्षाः ।। गुरु तृतीय में हो १५, चतुर्थ में हो तो ६, पंचम में हो तो ४०, सप्तम में हो तो २१, नवम में हो तो ३०, दशम में हो तो ३४ और एकादश में हो तो ५० वें वर्ष मृत्युयोग होता है ।

वैद्यनाथ—सिद्धारम्भः साधुवृत्तः स्वधर्मी विद्वानाढ्यो मानगे चामरेज्ये । कार्य को पूरा करनेवाला, सदाचारी, कर्तव्य पालन करनेवाला, विद्वान और धनवान होता है । अर्थाप्तिः पितृजननीसपत्नमित्रभ्रातृस्त्रीभृतकजनात् दिवाकराद्यैः ।। दशम में रवि हो तो पिता से, चन्द्र हो तो माता से, मंगल हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो स्त्री से और शनि हो तो नौकरों से धनप्राप्ति होती है । मीनालिचापकटके निजवर्गवारे मध्यन्दिनोदगयने यदि राशिमध्ये । कुंभे च नीचभवनेऽपि बली सुरेज्यो लग्ने सुखे च दशमे बहुवित्तदः स्यात् ।। मीन, वृश्चिक, धनु और कर्क राशि में वर्गकुंडली में स्वगृह में, मध्यान्ह में विषुव के उत्तर में, राशि के मध्यभाग में कुंभ में तथा मकर में गुरु बलवान होता है । लग्न में, चतुर्थ में तथा दशम में गुरु हो तो बहुत धन प्राप्त होता है ।

वसिष्ठ—दैन्यं गुरुः शुभकर्मभाजम् । दीनता प्राप्त होती है । अच्छे काम करता है ।

गर्ग—यशोवाहनसौख्यार्थगुणसत्यसमन्वितः । सिद्धारम्भोऽतिचतुरो भव्यकर्मस्थिते गुरौ ।। कीर्तिमान, सुखी, धनवान, गुणवान, चतुर, वाहनों से सम्पन्न, सच बोलनेवाला तथा कार्य पूरा करनेवाला होता है ।

नारायणभट्ट–ध्वजामण्डपे मदिरे चित्रशाला पितुः पूर्वजेभ्योऽपि तेजोऽधिकत्वम् । न तुष्टो भवेच्छर्मणा पुत्रकाणां पचेत् प्रत्यहं प्रस्थसामुद्रमन्नम् ।। मन्दिर में मण्डप और चित्र-शाला बनवाता है तथा ध्वज लगाता है। पिता और पूर्वजों से अधिक तेजस्वी होता है। पुत्रों के भाग्योदय से सन्तुष्टं नही होता। इसके घर में इतना अन्न पकाया जाता है जिसमें ४० तोले नमक लगे–अर्थात बहुत लोगों का आश्रयदाता होता है।

जीवनाथ–द्विजगणाः समन्ताद् गुंजन्ते मधुरमनिशं कीर्तिर-तुला। ब्राम्हण सर्वत्र इसकी कीर्ति का गान करते हैं। अन्य वर्णन नारायणभट्ट के समान है।

बृहद्यवनजातक–सद्राजचिह्नोत्तमवाहनानि मित्रात्मज-श्रीरमणीसुखानि। यशोविवृद्धिर्बहुधा जगत्यां राज्ये सुरेज्ये विजयं नराणाम् ।। राजा के चिन्ह, उत्तम वाहन, मित्र, पुत्र, धन, स्त्री, कीर्ति तथा विजय की प्राप्ति होती है। जीवोऽर्कके धनमथो। १२ वें वर्ष धनप्राप्ति होती है। यही वर्णन ढुण्डिराज ने किया है।

आर्यग्रन्थकार–दशममन्दिरगे च बृहस्पतौ तुरगरत्नविभू-षितमन्दिरः। भवति नीतिर्गुणैर्बुधसंयुतः परवरांगणवर्जित-धार्मिकः ।। इसका घर घोडे और रत्नों से शोभित होता है। यह नीतिमान, गुणी, विद्वानों से युक्त, परस्त्री से दूर रहनेवाला और धार्मिक होता है।

काशीनाथ–कर्मभावगते जीवे पुण्यकीर्तिसुखान्वितः। राज-तुल्यः सुरूपश्च दयालुर्जायते नरः। यह पुण्यवान, कीर्तिमान, सुखी, राजा जैसा वैभवशाली, सुन्दर और दयालु होता है।

मन्त्रेश्वर, जागेश्वर तथा जयदेव–इनने अन्य शास्त्रकारों जैसे शुभ फलों का ही वर्णन किया है।

पुंजराज–कर्मसंस्थो गुरुश्चेत् नानवित्ताभ्यागमं सः करोति। पुंसां नूनं गौरवं भूमिपालात् सत्त्वाधिक्यं जीवनं चित्तवृत्त्या॥ विविध प्रकारों से धन मिलता है। राजा से सन्मान मिलता है। सात्त्विक और बुद्धिजीवी होता है।

घोलप––अच्छे पुत्रों से युक्त, शूर, शत्रु का नाश करनेवाला, आनन्दी, इष्ट हेतु सिद्ध करनेवाला, सम्पन्न, घोडे आदि वैभव से युक्त तथा स्त्रीसुख प्राप्त करनेवाला होता है।

हिल्लाजातक––दशमे दशमश्चैव लाभदः सर्वदा गुरुः। दशवें वर्ष लाभ होता है।

लखनऊ नबाब––पालकीजडजवाहिरफीलैः संयुतो विविधवस्त्रविशालैः। मुश्तरी भवति शाहमखाने साहिबः खलु नरो नसरः स्यात्॥ पालकी, जवाहरात, हाथी, विविध वस्त्र प्राप्त होते हैं। यह वैभवसम्पन्न और भाग्यवान होता है।

पाश्चात्य मत––यह गुरु सन्मान, कीर्ति, भाग्य, यश आदि के लिए शुभ है। गुरु दशम में या धनस्थान में शुभसम्बन्ध में बलवान् हो तो बहुत भाग्यवृद्धि करता है। बडा अधिकारपद प्राप्त होता है। उन्नति जलदी होती है। आचरण शुद्ध होता है। यह गुरु कर्क, मकर, मीन और धनु में अच्छा होता है। मेष, सिंह, वृषभ, तुला कुम्भ तथा वृश्चिक में कुछ अच्छा होता है।

हमारे विचार—इस स्थान में प्रायः सभी शास्त्रकारों ने शुभ फलों का वर्णन किया है। सिर्फ नारायणभट्ट ने पुत्रसुख न

मिलना यह और वसिष्ठ ने दीनता यह अशुभ फल कहा। इन अशुभ फलों का अनुभव मिथुन, कर्क, तुला तथा कुम्भ में आता है। अन्य राशियों में शुभ फल मिलते हैं। जातकमार्गोपदेशिका (श्री. प्रधान) में दशमस्थ गुरु के जो फल बतलाए उनका अनुभव नवम स्थान में आता है। इस स्थान में धनलाभ के जो वर्ष यवनजातक और हिल्लाजातक में बतलाए हैं उनका अनुभव नही आता। वैद्यनाथ ने दशम में मकर में गुरु हो तो उत्तम धनलाभ का फल कहा। प्रचलित ज्योतिष में मकरस्थ गुरु निष्फल मानते हैं किन्तु यह योग्य नही। वैद्यनाथ का मत अनुभवसिद्ध प्रतीत होत है। कल्याणवर्मा ने मारक वर्षो का वर्णन किया है उसका अनुभव देखना चाहिए।

हमारा अनुभव—इस स्थान में गुरु के फलस्वरूप १६ या २४ वें वर्ष के पहले पिता की मृत्यु होती है अथवा उससे झगडा होता है। दोनों का भाग्योदय एकसाथ नही हो सकता। कर्ज बढता है। कारावासका प्रसंग आता है! रोज के खर्च के लिए भी कमाई पूरी नही पडती। लोगों से याचना करनी पडती है। पिता को अपनी कमाई का उपयोग नही होता। बडे होनेपर भी अपनी कमाई न होने का दुख रहता है। सदा अपयश मिलता है। इन फलों का अनुभव वृषभ, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ लग्न हो तो विशेषतः आता है। कुछ उदाहरणों में दशम में वृषभ और कर्क में गुरु होते हुए पिता के जीवित रहते ही मृत्यु हुआ। कुछ उदाहरणों में पिता के एक ही वर्ष बाद मृत्यु हुआ। भाग्योदय न होकर अन्नान्न दशा में मृत्यु हुआ। कुछ ने आत्महत्या और कुछ ने गृहत्याग किया। पुराणों में दुर्योधन के अधःपात का

कारण दशमस्थ गुरु बतलाया है। पिता का मृत्यु बचपन में ही हुआ तो प्रपंच ठीक चलता है। कार्य यशस्वी होते हैं। अन्य राशियों में साधारण अच्छा फल मिलता है। दशमस्थान में गुरु पुरुष राशि में हो तो सन्तति कम होती है। स्त्री राशि में हो तो सन्तति बहुत होती है। इस स्थान में व्यवसाय का फल बतलाना कठिन है। भिक्षुक, ठेलेवाले व्यापारी, जज, आयात-निर्यात व्यापारी आदि सभी प्रकार के लोग देखे जाते हैं। अब कुछ उदाहरणों से हमारे अनुभव स्पष्ट करते हैं--(१) क्ष-जन्म ता. २१-११-१९१७ सुबह १-४६ मंगलवार, इसके
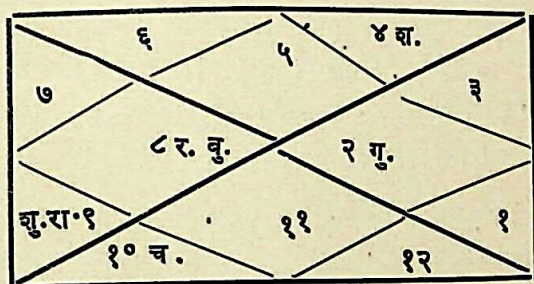
पिता का मृत्यु ता. १४-१-१९३८ को हुआ तथा दूसरे वर्ष इसी तारीख को इसने आत्महत्या की। भाग्योदय बिलकुल नही हुआ।

(२) क्ष-जन्मता. १२-३-१८८२ संध्या समय ४ से ५ तक-बेलगांव इनकी शिक्षा मैट्रिक तक हुई। पहला विवाह
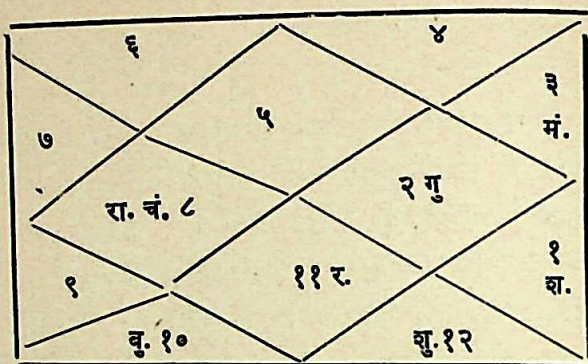
बचपन में हुआ। दूसरा विवाह १२ वें वर्ष में हुवा। सन्तति बहुत हुई। जीवनभर इनसे कोई भी व्यवसाय ठीक तरह नही हो सका। पिता का मृत्यु ता. ६–१–३३ को हुआ। इनका मृत्यु ता. ३–९–३३ को हुवा। सब जीवन विपत्तिमय रहा। धनहानि, व्यवसाय में अपयश, बेइज्जत और अन्त में अन्नान्न अवस्था तक प्रसंग आए।

(३) क्ष—जन्म ता. १–६–१९१८ दोपहर १२ नागपुर.
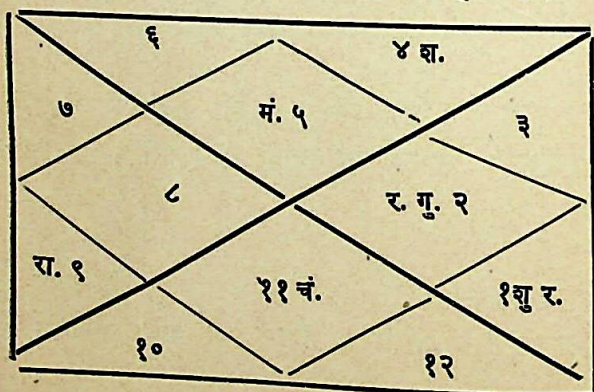
यह पिता का इकलौता लडका था। एल् एल्. बी. का अभ्यास कर रहा था। विवाह हुए थोडे ही दिन हुए थे। ता. २५-८-१९४१ को टाइफाइड से मृत्यु हुआ। पिता जीवित थे।

(४) क्ष-जन्म ता. २३-१२-१८९५ सोमवार इष्ट घटी ४९-४० अक्षांश २२-१६ रेखांश ७३-२०। इनकी कुण्डली में लग्न में शनि, धनस्थान में मंगल, तृतीय में रवि, बुध, पंचम में राहु, षष्ठ में चन्द्र, तथा दशम में वक्री गुरु है। ऊपरी तौर पर कुण्डली उत्तम प्रतीत होती है। किन्तु फल अशुभ मिले। ३ रे वर्ष पिता का तथा ६ वें वर्ष वडे भाई का मृत्यु हुआ। शिक्षा नही हो सकी। पूर्वार्जित सम्पत्ति नही थी-कर्ज था। माता जीवित थीं। विवाह नही हुआ। मासिक ४० रुपये पर नौकरी करते रहे।

ग्यारहवें स्थान में गुरु

आचार्य व गुणाकर-लाभवान्। इसे वहुत लाभ होते हैं।

कल्याणवर्मा-अपरिमितायद्वारो बहुवाहनभृत्यसंयुतः साधुः। एकादशगे जीवे न चातिविद्यो न चातिसुतः॥ इसके धनप्राप्ति के मार्ग असंख्य होते हैं। बहुत वाहन और नौकर होते हैं। सज्जन होता है। शिक्षा बहुत नही मिलती। पुत्र बहुत नही होते।

वसिष्ठ--धनायुषीज्यः लाभं। धन, दीर्घायु तथा लाभ प्राप्त होते हैं।

वैद्यनाथ-आयस्थेऽमरमन्त्रिणि प्रबलधीर्विख्यातनामा धनी। इसकी वुद्धि प्रबल होती है। यह धनवान और प्रसिद्ध होता है,

जीवो यच्छति वेदशास्त्रयजनाचारादिपुत्रैर्धनम् । वेदशास्त्रों का अभ्यास, यज्ञ कराना आदि से तथा पुत्रों से धन प्राप्त करता है ।

गर्ग---नीरोगो दृढवीर्यश्च मन्त्रवित् परशास्त्रवित् । नातिविद्योल्पतनय: साधुरेकादशे गुरौ ।। यह नीरोग, बलवान, मन्त्र जाननेवाला, दूसरों के शास्त्र जाननेवाला होता है । शिक्षा बहुत नही मिलती । पुत्र कम होते हैं । यह सज्जन होता है ।

बृहद्यवनजातक---सामर्थ्यमर्थागमनं च नूनं सद्रत्नवस्त्रोत्तमवाहनानि । भूपप्रसादं कुरुते नराणां गीर्वाणवन्द्यो यदि लाभसंस्थ: ।। यह बलवान और धनवान होता है । उत्तम रत्न, वस्त्र और वाहन प्राप्त होते हैं । राजा की कृपा होती है । ईज्य इनाब्द्लक्ष्मीम् । १२ वें वर्ष धन प्राप्त होता है ।

नारायणभट्ट---अकुप्यं च लाभे गुरौ किं न लभ्यं वदन्त्यष्टधीमन्तमन्ये मुनीन्द्रा: । पितुर्भारभृत् स्वांगजास्तस्य पंच परार्थंस्तदर्थो न चेद् वैभवाय ।। सभी प्रकारका धन प्राप्त होता है । यह अष्टावधानी होता है । एकही समय आठ चीजों की ओर ध्यान दे सकता है । पिता के कुटुम्ब का भार इसे ही वहन करना पडता है । पांच पुत्र होते हैं । इसके धन का उपयोग दूसरों के लिए ही अधिक होता है ।

काशीनाथ---लाभे गुरौ विवेकी स्यात् हस्त्यश्वादिधनैर्युत: । अलोलुप: सुरूपश्च गुणवानपि जायते ।। विवेकी, निर्लोभ, सुन्दर, गुणवान तथा हाथी घोडे आदि सम्पत्ति से युक्त होता है ।

आर्यग्रन्थकार---व्रजति भूमिपते: समतां धनै: निजकुलस्य विकासकर: सदा । सकलधर्मरतोऽर्थं समन्वितो भवति चायगते

सुरनायके ।। यह राजा के समान धनवान, अपने कुल का विकास करनेवाला, धार्मिक तथा धनवान होता है।

मन्त्रेश्वर-आयस्थे धनिकोऽभयोल्पतनयो जैवातृको यानगः। यह धनवान, निर्भय, विजयी तथा वाहनों से युक्त होता है। इसे पुत्र कम होते हैं।

जयदेव---सविक्रमायाम्बरमानवित्तः सुकीर्तिसामर्थ्ययुतो भवस्थे। यह पराक्रमी, धनवान, मानी, विविध वस्त्रों से युक्त, कीर्तिमान तथा धनवान होता है। **जीवनाथ** का मत भी यही है।

जागेश्वर---गुरौ विद्यया पुत्रसौख्यान्वितः स्याद् भवेद् धार्मिकैः साधुलोकैः प्रसंगः। सुवर्णादिधातुर्भवेत् तस्य गेहे नृपाणां सुमान्यः सुधानं प्रभूतं ।। यदा देवपूज्यस्य लाभे स्थितिः स्यात् ।। यह विद्यावान, सुखी, पुत्रों से युक्त, धार्मिक, सज्जनों के साथ रहनेवाला होता है। सोना चांदी आदि धातु प्राप्त होते हैं। राजा को मान्य होता है। धान्य बहुत होता है।

पुंजराज---कान्तासुखम्। स्त्रीसुख अच्छा मिलता है।

घोलप---यह मित्रता के लिये उत्सुक होता है। मित्र बहुत होते हैं और उनके फायदे के लिए यह प्रयत्न करता है। सज्जनों का आश्रय लेनेवाला किन्तु कपटी और हीन होता है। राजा की कृपा प्राप्त कर के बलिष्ठ शत्रुओं का नाश करता है। यह वाहनों से युक्त, कलाओं का ज्ञाता और पूज्य होता है।

गोपाल रत्नाकर---यह गीतापठन करता है। बडे भाई का पोषण करता है। धन जमीन में गाडकर रखता है।

हिल्लाजातक---लाभगो लाभदश्चैव चतुर्विंशे च वत्सरे। २४ वें वर्ष लाभ होता है।

लखनऊ नबाब---साविर: शुभतनुर्जरदार: फारसो बहु-पराक्रमयुक् स्यात् । काविलश्च यदि याफ्तिमकाने मुश्तरी प्रविभवेत् खुशर: स्यात् ॥ यह धनवान, पराकमी, सुन्दर, विद्वान्, और बलवान होता है।

पाश्चात्य मत---यह प्रामाणिक, सच बोलनेवाला, भाग्य-वान, उदार और अच्छे मित्रों से युक्त होता है। यह गुरु स्थिर राशि में हो तो गर्विष्ठ और अभिमानी होता है। चर राशि में हो तो साहसी, कार्यकुशल होता है। द्विस्वभाव राशि में हो तो धार्मिक और संसारदक्ष होता है। इसे राजाद्वारा सन्मान और लाभ के विलक्षण योग प्राप्त होते हैं। इस स्थान में गुरु बलवान होना बडे भाग्य का लक्षण है। श्रीमान और खानदानी लोगों से मित्रता होती है। मित्रों की मदद से आशाएं और महत्वा-कांक्षाएं पूरी होती है। उनकी सलाह उत्तम और फायदेमन्द होती है। अपने कामों से समाज में नाम होता है और श्रेष्ठता प्राप्त होती हैं। धनप्राप्ति अच्छी होती है। संततिसुख अच्छा मिलता है। पुत्र के जन्म से भाग्योदय शुरू होता है। इस स्थान में गुरु के साथ चन्द्र, रवि, हर्षल, नेपच्यून अथवा शनि की युति शुभ होती है। मंगल, शनि और हर्षल से अशुभ सम्बन्ध नहीं होना चाहिए।

अज्ञात---नरेशयज्ञगजभूज्ञानक्रियाभि: ॥ आयुरारोग्य-मैश्चर्यं जायापत्यसुहृत्सुखम्। नृणां चतुष्पदप्राप्ति: देवेज्यो लाभगो यदि ॥ विद्वान, धनवान, द्वात्रिंशद्वर्षे बहुलाभ: । अनेकप्रतिष्ठा-सिद्धि: । शुभभावयुते गजलाभ: । भाग्यवृद्धि: । चन्द्रयुते निक्षे-

पलाभः ।। इसे राजा, यज्ञ, हाथी, जमीन और ज्ञान की क्रिया से लाभ होता है। यह दीर्घायु, नीरोग, धनवान होता है। स्त्री, पुत्र और मित्रों का सुख प्राप्त होता है। चौपाये पशु मिलते हैं। यह विद्वान होता है। ३२ वें वर्ष लाभ होता है। अनेक प्रकारकी प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। अन्य ग्रहों से सम्बन्ध हो तो हाथी प्राप्त होता है। भाग्य बढता है। चन्द्रकी युति हो तो निक्षेप (धरोहर रखा हुआ धन) प्राप्त होता है।

हमारे विचार--पुराने ग्रन्थकारों की एक सामान्य कल्पना है कि लाभ स्थान में सभी ग्रहों का फल शुभ मिलता है--लाभस्थाने ग्रहाः सर्वे बहुलाभप्रदाः। इसी के अनुसार इस स्थान में गुरु के फल सभी ग्रन्थकारों ने प्रायः शुभ बतलाए हैं। सिर्फ कल्याणवर्मा और गर्ग ने शिक्षा न होना और पुत्र कम होना यह फल कहा है। इस स्थान के गुरु के शुभ फलों का अनुभव कर्क, कन्या और मीन को छोड कर अन्य राशियों में आता है।

हमारा अनुभव--इस स्थान में गुरु का सामान्य फल यह हे कि सन्तति, सम्पत्ति या विद्या इन में कोई एक लाभ अच्छा होता है। सन्तति अधिक हो तो सम्पत्ति और विद्या कम होती है। सम्पत्ति अधिक हो तो सन्तति और विद्या कम होती है। विद्या अधिक हो तो सन्तति और सम्पत्ति कम होती है। पूर्वार्जित इस्टेट प्राप्त नही होती। रिश्तेदार हडप करते हैं अथवा अपने ही हाथों उस इस्टेट का नाश होता है। बडे भाई का प्रपंच ठीक नही चलता। उसका पोषण भी इसे करना पडता है। इस स्थान में गुरु होने से पुत्र बहुत दुराचारी होते हैं।

मां-बाप से झगडा कर मारपीट तक नौबत लाते हैं। कुल का नाम गंवाते हैं। अपने परिश्रम से उदरनिर्वाह नही कर सकते। ये व्यक्ति पुत्रों का हित नही कर सकते। पिता और पुत्र दोनों की एकसाथ उन्नति नही होती। पिता के पश्चात् भाग्योदय होता है। यह गुरु कर्क, कन्या, धनु या मीन में हो तो सन्तति नही होती अथवा होकर मृत होती है। यह अथवा इसकी स्त्री पुत्रोत्पत्ति में असमर्थ होते हैं। प्रपंच में विपत्तियां वहुत आती हैं। खुद बीमार होना, पत्नी बीमार होना, पत्नी से झगडा होना, द्विभार्यायोग, सन्तति में सिर्फ कन्याएं होना, बडे भाई को मारक अथवा दारिद्र्ययोग होना, कर्ज अधिक होने से कारावास होना, व्यवसाय में नुकसान और बेइज्जत होने से गांव छोडना आदि अशुभ फल मिलते हैं।

ग्यारहवें स्थान में गुरु के उदाहरण स्वरुप राजा रामेन्द्र-नारायण राय की कुंडली देते हैं। जन्म ता. २८-७-१८८४ श्रावण शु. ६ शक १८०६ सोमवार सुबह १०-४८ जयदेवपुर (जि. ढाका-पूर्व बंगाल) अक्षांश २३-४३ रेखांश ९०-२६.
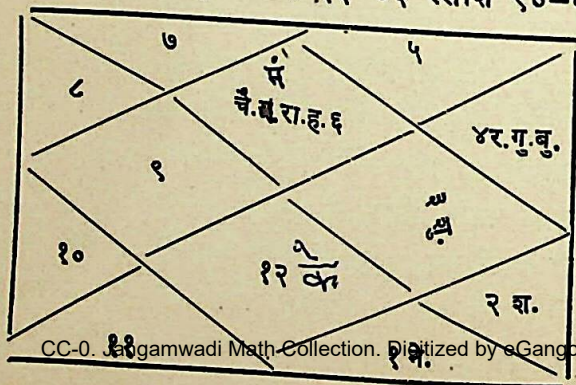
ढाका जिले में जयदेवपुर रियासत के यह राजा थे। पिता की मृत्यु के बाद बडे भाई की भी जलदी ही मृत्यु होने से इन्हें रियासत का अधिकारपद मिला। छोटे भाई की भी मृत्यु हुई थी। इनका विवाह हुआ किन्तु घरमें चित्त बिलकुल नही था। सन्तति नहीं हुई। सन् १९०९ में बीमार होने पर हवा बदलने के लिए दार्जिलिंग गए। वहां इनकी पत्नी ने अपने भाई की सहायता से विषप्रयोग किया उससे ये बेहोश हुए। उसी हालत में थे मरे समझकर चिता पर लिटाकर अग्निसंस्कार किया। किन्तु भयानक तूफान से चिता बुझ गई और ये होश में आए। तबतक सब लोग दहनस्थल से भाग गए थे। उस हालत में संन्यासियों के एक दल ने इन्हें देखा और अपने साथ ले गए। इस बेहोशी में स्मरणशक्ति नष्ट होने से यह बारह सालतक उन संन्यासियों के साथ घूमते रहे। बाद में ढाका स्टेशन पर आने पर इनकी स्मरणशक्ति जागृत हुई और लोगों ने भी इन्हें पहचाना। ढाका में इनकी बहन ज्योतिर्मयी देवीने भी इन्हें पहचाना। इस समय तक इन्हें मरा समझ कर इनकी पत्नीने अपने भाई के साथ रियासत की सम्पत्ति का यथेच्छ उपभोग किया। किन्तु इन्हें पहचाननेके बाद प्रजा रियासत के सब कर इन्हें ही देने लगी। फिर सन १९२१ में रियासत के कानूनन अधिकार के लिए ढाका कोर्ट में दरखास्त दी। सन १९३६ में फैसला होकर इनकी विजय हुई। इस दावे में यह संन्यासी ही राजपुत्र है यह सिद्ध करने के लिए कोई १५०० गवाह आए थे। सन १९४१ में कलकत्ता हायकोर्ट ने भी इन्हीं के पक्ष में निर्णय दिया। इस अद्‌भुत प्रकार का स्पष्टीकरण किन ग्रहयोगों से

होता है यह देखिये। लग्न में कन्या राशि में चंद्र, मंगल तथा राहु, हर्षल हैं। इस से शरीर प्रमाणबद्ध, ऊंचा, चेहरा गोल, मस्तिष्क भव्य, नाक लंबी और नोकदार, आंखें सुंदर, दृष्टि भेदक, सुन्दर वर्ण, चेहरा उठावदार, केश पिंगल-इस प्रकार शरीरसौंदर्य प्राप्त हुआ। स्वभाव विक्षिप्त, हठी, किसी की न सुननेवाला, चैनी, कुछ दुष्ट हुआ। शिकार प्रिय थी। मातापिता की मृत्यु छोटी उम्र में हुई। लाभस्थान में कर्क में गुरु और लग्न में चन्द्र-मंगल हैं अतः शिक्षा नहीं हुई। षष्ठ स्थान से शनि का गोचर भ्रमण हुआ उस समय बीमार हुए। अष्टम में नेपच्यून है। इस का फल वर्णन एलन लिओ ने इस प्रकार किया है—नेपच्यून अष्टम स्थान का स्वामी है। धन अथवा वारिस के हक के लिये अच्छा नही है। धोखे से अथवा विष-प्रयोगद्वारा सुखवैभव से हाथ धोना पडता है। यह ग्रह रहस्यमय वातावरण सूचित करता है। लम्बी नींद, समाधि आदि से सम्बन्ध होता है। लिओ के बतलाये इस वर्णन का सही अनुभव इस कुंडली में मिला है। इस रहस्यमय प्रकार में लग्नस्थ राहु और हर्षल भी सहायक हुये है। संन्यासियों के साथ, वस्त्रहीन अवस्था में घूमना पडा यह फल शनि का है। वनगिरिनिलयो नग्नशीलो विवासाः—यह शनि का फल प्राचीन आचार्यों ने दिया है। कुंडली में जिस स्थान में और राशि में पापग्रह हो उस स्थान और राशि के अधीन शरीरावयव पर तिल या धब्बे जैसा कोई चिन्ह होता है। यहां शनि वृषभ राशि के तृतीय द्रेष्काण में है। अतः दाएं घुटने पर बडा दाग था। इसी दाग से बाद में इन्शुरन्स कम्पनीने इस संन्यासी को राजपुत्र सिद्ध

किया। लग्न में चंद्र, मंगल, राहु तथा हर्षल, अष्टम में नेपच्यून तथा लाभ में बुध यह योग स्मृति नष्ट होने में कारण हुआ। शुक्र के बारहवें स्थान में शनि है अतः पत्नी ही शत्रु हुई। यह आपत्तियों का अनुभव लाभ में स्थित गुरु की महादशा के वर्षों में हुआ। कर्क के इस गुरु से सन्तति नही हुई, राज्याधिकार गँवाना पडा और बहुत आपत्तियां आईं।

दूसरा उदाहरण—महाराष्ट्र के प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री. वसंत लाडोबा म्हापणकर—जन्म श्रावण शु. ४ मंगलवार शक १८२९ इष्ट घटी ९ तारीख १३–७–१९०८ स्थान मालवण (जिला रत्नागिरी)
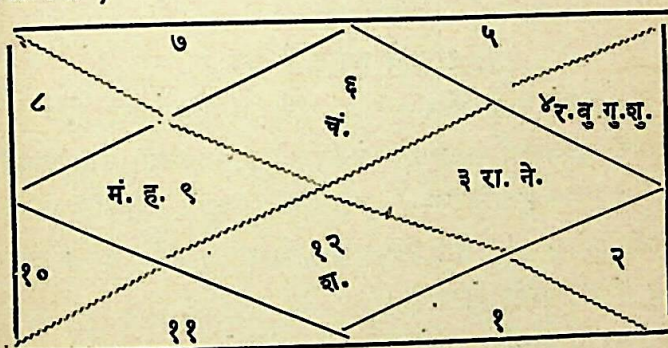
इन का लग्न और राशि कन्या है। यह ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन में कारण हुआ। एकादश में कर्क में गुरु और रवि हैं अतः शिक्षा अधूरी हुई। चतुर्थ, सप्तम और दशम इन तीनों केंद्रों में पापग्रह हैं अतः माता पिता का सुख ठीक नहीं मिला। यही द्विभार्यायोग हुआ। सदा आपत्तियां बनी रहती हैं क्यों कि लाभ में गुरु है। धनेश और लग्नेश साथसाथ लाभ में हैं अतः

ज्योतिषलेखन ही जीविका का साधन बना। लाभ के समय शारीरिक कष्ट हो कर विलम्ब होना यह गुरु का फल है। पुराणों में नलराजा की दुरवस्था का कारण लाभ स्थान मे कर्क का गुरु कहा है। उसे राज्यच्युत हो कर वन में जाना पडा। वहां आधा वस्त्र पहनी हुई प्रिय पत्नी का त्याग करना पडा। सर्पदंश से रंग काला हुआ। दमयंती के दूसरे स्वयंवर की वार्ता सुननी पडी। इस प्रकार नल राजा की कथा में और रामेन्द्रनारायण चौधरी की केस में बहुत समानता है। इस से स्पष्ट हुआ कि लाभस्थान में स्त्री राशि में गुरु विपत्तिमों को कारणीभूत होता है।

बारहवें स्थान में गुरु

आचार्य व गुणाकर--खलः दुर्जनः। यह दुष्ट होता है।

कल्याणवर्मा--अलसो लोकद्वेष्यो ह्यपगतवाग् दैवपक्षभग्नो वा। परितः सेवानिरतो द्वादशसंस्थे गुरौ भवति॥ यह आलसी, लोगों द्वारा द्वेष किया जानेवाला, बोलने में अकुशल, सेवक ओर दुर्भागी होता है।

पराशर--रिःफे चोरहृतस्वं तु नेत्ररोगं पराजयम्। इस का धन चोरों द्वारा हरण होता है। आंख के रोग होते हैं। पराजय होता है।

वसिष्ठ--धिषणः कृशांगः पीडां च। दुबला और पीडायुक्त होता है।

वैद्यनाथ--चार्वाकी चपलोऽटनः खलमतिः जीवो यदान्त्ये गतः। चार्वाक मत का--अर्थात् मनःपूतं समाचरेत्--इस विचार

का होता है। चंचल, प्रवासी, दुष्ट होता है। वागीशेन्दुसिता यदि व्ययगता वित्तस्य संरक्षकाः। गुरु, शुक्र या चन्द्र व्यवस्थान में हों तो धन का रक्षण करते हैं।

जातकालंकार–रिःफस्थानस्थितश्चेत् गुरुर्गुप्तरोगी नितान्तं। वागीशे यानभूषावसनहयभवा चामरच्छत्रचिन्ता। गुप्त रोग होते हैं। वाहन, भूषण, वस्त्र घोडे, छत्र, चामर आदि की चिन्ता होती है।

गर्ग––उच्छ्रितव्ययकारी च रिःफगे देवतागुरौ, सेवाविज्ञो महाक्रोधी सालसो लोकविग्रही॥ व्ययेन्नदाता धिषणः। गुरुर्व्यये यदा पटगोधनहेमसम्पदः॥ बडे बडे खर्च करता है। सेवा में कुशल, क्रोधी, आलसी, लोगों से झगडनेवाला होता है। अन्न की कमी नही होती, वस्त्र, गायें, सोना आदि धन प्राप्त होता है।

बृहद्यवनजातक––नानाचित्तोद्वेगसंजातकोपं पापात्मानं सालसं त्यक्तलज्जं। बुध्दचा हीनं मानवं मानहीनं वागीशोयं द्वादशस्थः करोति॥ पंचविंशे धनव्ययं गुरुः। चित्त उद्विग्न होनेसे क्रोध बहुत आता है। यह पापी, आलसी, निर्लज्ज, बुद्धि-हीन और अपमानित होता है। २५ वें वर्ष बहुत खर्च होता है। इसीप्रकार वर्णन **जयदेव** तथा **ढुंढिराज** ने किया है।

नारायणभट्ट––यशः कीदृशं सद्व्ये साभिमाने मतिः कीदृशी वंचना चेत् परेषाम्। विधिः कीदृशोऽर्थस्य नाशो हि येन त्रयस्ते भवेयुर्व्यये यस्य जीवः॥ अभिमान के कारण इसे दान करने पर भी कीर्ति नही मिलती। बुद्धि होती है किन्तु उसका उपयोग दूसरों को धोखा देने के लिए करता है। धन का नाश होता है।

जीवनाथ--गुरुणा बन्धूनामुपकृतिविधाने शिथिलता। मातापिता तथा भाइयों पर उपकार करने में आलसी होता है।

काशीनाथ--व्यये बृहस्पतौ रोगी व्यसनी परधर्मकृत् बन्धुवैरी नीचसेवी गुरुद्वेषी च जायते ॥ यह रोगी, व्यसनी, धर्मभ्रष्ट भाइयों का वैरी, नीचों का नौकर तथा गुरुजनों का द्वेष करने-वाला होता है।

आर्यग्रन्थकार--शिशुदशाभवने हृदि रोगवान् उचितदान-पराङ्मुख एव च। कुलधनेन सदा बहुदाम्भिको भवति पापगृहे च बृहस्पतौ ॥ हृदयरोग होता है। योग्य दान नही करता। कुल के धन से मदान्ध होता है।

जागेश्वर--ईज्यः व्यये संस्थितः संचयं वै धनानाम् लालसः। भवेत् कोपयुक्तस्तथा चिन्तयासौ ध्रुवं लालसो मानहीनः कुबुद्धिः। स्वयं पापरूपः खलानां च रूपो व्यये देवपूज्ये न दृष्टश्च पापैः ॥ धन का संचय करनेवाला तथा लोभी होता है। क्रोधी, चिन्तित, मानहीन, दुर्बुदि, दुष्ट तथा दुष्टों को साहाय्य करनेवाला होता है।

पुंजराज--जीवो व्ययभावसंस्थः पितुः सहोत्थाः सुखि-नस्तदा स्युः। पिता के भाइयों को सुख मिलता है।

मन्त्रेश्वर--द्वेष्यो धिक्कृतवाग् व्यये वितनयः साघोऽलसः सेवकः। द्वेषयोग्य, धिक्कार होनेवाला, पुत्रहीन, पापी, आलसी तथा नौकर होता है।

हिल्लाजातक--बृहद्यवनजातक के समान वर्णन है।

लखनऊ नवाब---मुफलिसः कमफहम् गतलज्जो बदसखुंश्च-रयभूतलच्चिन्तः । काहिलश्च यदि खर्चमकाने मुश्तरी भवति ना बदफेलः ।। बेकार, कम वोलनेवाला, निर्लज्ज, निष्ठुर बोलनेवाला झगडालू, चिन्तायुक्त, आलसी तथा बुरे कार्यों में धन खर्च करनेवाला होता है ।

गोपाल रत्नाकर---पतित, दरिद्री, विरक्त, होता है । पुत्र कम होते हैं । वेश्यासंग करता है । विचित्र शय्या मिलती है ।

घोलप---शरीर यें सन्धियों तथा पांव में पीडा होती है । वोलना अच्छा नही होता । अधिकारहीन, स्त्रीसुखहीन, धनहीन, दुष्टों द्वारा पीडित, राजा द्वारा पीडित, आलसी, मातृहीन, निर्लज्ज, उद्विग्न, क्रोधी होता है । इसे अधिकारपंद मिले भी तो राजा के कोप से भ्रष्ट होना पडता है ।

पाश्चात्य मत---यह गुरु विजय प्राप्त कराता है किन्तु शत्रु बहुत होते हैं । अध्यात्मविद्या तथा गूढ शास्त्रों में रुचि होती है । शत्रु द्वारा लाभ होता है । आयु का मध्य तथा उत्तरार्ध अच्छा जाता है । वैद्य, धर्मगुरु, वेदज्ञानी, लोकसेवक आदि के लिए यह गुरु शुभ है । पुरानी रीतियों के बारे में आदर होता है । लोगों को अकल्पनीय ऐसे चमत्कारिक प्रकारों से लाभ होता है । यह गुरु पीडित या अशुभ सम्बन्ध में हो तो विवाह में कुछ गडबड होती है । शुभ सम्बन्ध में हो तो ३० वें वर्ष के बाद मित्रों से गुप्त साहाय्य मिलकर अच्छा उत्कर्ष होता है । यह गुरु बलवान हो तो दानाध्यक्ष, सार्वजनिक संस्थाओं में कार्यकर्ता, अस्पताल, धार्मिक संस्थाएं आदि के व्यवस्थापक के रूप में लाभ होता है । इस गुरु से एकांतवास में होनेवाले

कार्यों में यश, लाभ और कीर्ति प्राप्त होती है। देशत्याग, अज्ञातवास तथा दूर प्रदेशों में प्रवास से कीर्ति तथा लाभ प्राप्त होते हैं। द्वादश स्थान का सम्बन्ध परोपकार तथा विश्वप्रेम से है अतः ये फल कहे। बडे बडे दान देने की प्रवृत्ति भी होती है। यही गुरु पीडित हो तो आलसी, विवेकहीन तथा किसी सार्वजनिक संस्था के आश्रय से जीवन बितानेवाला होता है। कन्या, मकर तथा वृश्चिक में यह गुरु बहुत अशुभ होता है।

अज्ञात--महेन्द्रेज्ये प्रयच्छति व्ययस्थे विपुलं धनम्। स्वजनविग्रहं दुःखं क्षयोत्पत्तिर्धनव्ययः। प्रवासो नृपतेर्भीतिर्देवेज्ये व्ययसंस्थिते ॥ निर्धनः, पठितः, अल्पपुत्रः, गणितशास्त्रज्ञः, ग्रंथित्रणी, अयोग्यः ब्राह्मणस्त्रीभोगी, गर्भिणीगामी, धर्मार्थेन धनव्ययः। उच्चे स्वक्षेत्रे जनहितकारी, राष्ट्रसेवकः। स्वर्गलोक-प्राप्तिः। पापयुते पापलोकः ॥ इस गुरु से विपुल धन प्राप्त होता है। अपने लोगों से झगडे होते हैं। दुःख होता है। क्षय-रोग होता है। धनहानि होती है। प्रवास बहुत होता है। राजा का क्रोध सहना पडता है। धनहीन, पढालिखा, गणित का ज्ञाता होता है। पुत्र कम होते हैं। ग्रंथित्रण होता है। अयोग्य होता है। ब्राह्मणी और गर्भिणी स्त्री से संभोग करता है। धर्म कार्य में धन खर्च होता है। यह गुरु उच्च अथवा स्वगृह में हो तो लोकहित करनेवाला, देशसेवक होता है। मृत्यु के बाद स्वर्ग में पहुंचता है। पापग्रह से युक्त हो तो पापगति में जाता है।

हमारे विचार--इस स्थान के गुरु के अशुभ फल ही हमने देखे हैं। किसी भी शुभ फल का अनुभव नहीं मिला। पाठकों से अनुभव देखना चाहिए।

कार्यों में यश, लाभ और कीर्ति प्राप्त होती है। देशत्याग, अज्ञातवास तथा दूर प्रदेशों में प्रवास से कीर्ति तथा लाभ प्राप्त होते हैं। द्वादश स्थान का सम्बन्ध परोपकार तथा विश्वप्रेम से है अतः ये फल कहे। बडे बडे दान देने की प्रवृत्ति भी होती है। यही गुरु पीडित हो तो आलसी, विवेकहीन तथा किसी सार्वजनिक संस्था के आश्रय से जीवन बितानेवाला होता है। कन्या, मकर तथा वृश्चिक में यह गुरु बहुत अशुभ होता है।

अज्ञात——महेन्द्रेज्ये प्रयच्छति व्ययस्थे विपुलं धनम्। स्वजनविग्रहं दुःखं क्षयोत्पत्तिर्धनव्ययः। प्रवासो नृपतेर्भीतिर्देवेज्ये व्ययसंस्थिते ॥ निर्धनः, पठितः, अल्पपुत्रः, गणितशास्त्रज्ञः, ग्रंथिव्रणी, अयोग्यः ब्राह्मणस्त्रीभोगी, गर्भिणीसंगमी, धर्ममूलेन धनव्ययः। उच्चे स्वक्षेत्रे जनहितकारी, राष्ट्रसेवकः। स्वर्गलोकप्राप्तिः। पापयुते पापलोकः ॥ इस गुरु से विपुल धन प्राप्त होता है। अपने लोगों से झगडे होते हैं। दुःख होता है। क्षयरोग होता है। धनहानि होती है। प्रवास बहुत होता है। राजा का क्रोध सहना पडता है। धनहीन, पढालिखा, गणित का ज्ञाता होता है। पुत्र कम होते हैं। ग्रंथिव्रण होता है। अयोग्य होता है। ब्राह्मणी और गर्भिणी स्त्री से संगम करता है। धर्म कार्य में धन खर्च होता है। यह गुरु उच्च अथवा स्वगृह में हो तो लोकहित करनेवाला, देशसेवक होता है। मृत्यु के बाद स्वर्ग में पहुंचता है। पापग्रह से युक्त हो तो पापगति में जाता है।

हमारे विचार——इस स्थान के गुरु के अशुभ फल ही हमने देखे हैं। किसी भी शुभ फल का अनुभव नहीं मिला। पाठकों ने अनुभव देखना चाहिए।

हमारा अनुभव---इस स्थान में गुरु के विशेष उदाहरण हमने नही देखे हैं । जो देखे उन में प्राय: अशुभ फल ही मिले। कंजूस तथा स्वार्थी स्वभाव के ये लोग होते हैं किंतु लोगों से मिलजुल कर रहते हैं। ग्रंथिव्रण का उदाहरण हमने निम्न-लिखित कुंडली में देखा --एक क्ष, जन्म ता. ६-२-१९२० इष्ट घटी ३२-३२.
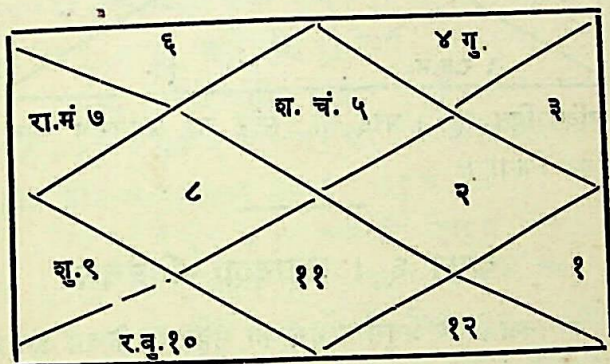
इस व्यक्ति को विवाह के बाद दाहिने अंक में चमत्कारिक फोडा हुआ जो बहुत चिकित्सा करने पर भी ठीक नही हुआ। इस से स्त्रीसुख भी बिलकुल नही मिल सका।

दूसरा उदाहरण---एक क्ष, जन्म शक १८०४ मार्गशिर शु. १३ रात्रि ८॥ से ९ के बीच, बम्बई के समीप।
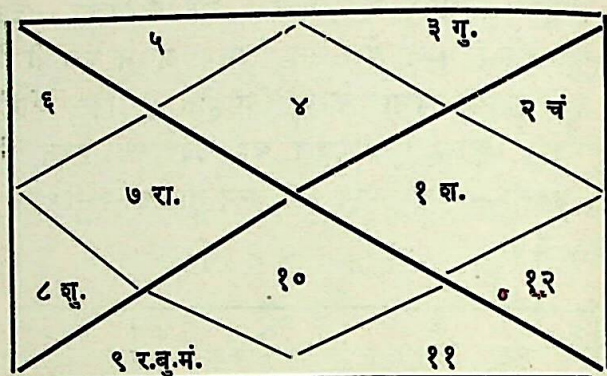
यह अविवाहित रहा। भाई की इस्टेट का अपहरण कर बहुत धनसंचय किया।

प्रकरण ६ : महादशा–विवेचन

जन्मनक्षत्रों के अनुसार गुरु की महादशा के वर्ष इस प्रकार होते हैं—पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपदा–जन्म से १६ वें वर्ष तक; आर्द्रा, स्वाति, शततारका–१९ वें वर्ष से ३५ वें वर्ष तक, मृग, चित्रा, धनिष्ठा–२५ वें वर्ष से ४१ वें वर्ष तक। रोहिणी, हस्त, श्रवण–३५ वें वर्ष से ५१ वें वर्ष तक। कृत्तिका, उत्तरा, उत्तराषाढा–४१ वें वर्ष से ५७ वें वर्ष तक; भरणी, पूर्वा, पूर्वाषाढा–६१ वें वर्ष से ७७ वें वर्ष तक, अन्य नक्षत्रोंमें गुरु की महादशा जीवनभर नही आती।

जन्म से १६ वें वर्ष तक की महादशा में–गुरु लग्न, पंचम, नवम, दशम या एकादश स्थान में, मेष मिथुन, सिंह, तुला, धनु या मीन राशि में हो तो खुद को विशेष फायदा नही होता किन्तु

मातापिता की उन्नति होती है। पिता को नौकरी या व्यापार में अच्छा लाभ होता है। दांत देर से आते हैं किन्तु मजबूत होते हैं और वृद्धावस्था तक अच्छे रहते हैं। डेढ वर्ष की आयु में बोलना शुरू होता है। खेलने में प्रवृत्ति अधिक होती है। विद्याध्ययन ठीक तरह शुरू होता हैं। प्रवृत्ति गंभीर होती हैं। घर की परिस्थिति का परिणाम इस पर जलदी होता है। गुरु वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक या मकर में हो तो इस दशा में दांत जलदीं आते हैं किन्तु अच्छे नही होते। हमेशा अस्वस्थता रहती है। सरदी, जुकाम, खांसी आदि होते रहते हैं। शिक्षा में रुकावटें आती हैं। १२ वें वर्षं के बाद घर की परिस्थिति बिगडती जाती है, शिक्षा छोडकर व्यवसाय अपनाना पडता है।

१९ वें वर्ष से ३५ वें वर्षं तक की महादशा में–गुरु लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम या एकादश स्थान में मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु या मीन लग्न हो तो शिक्षा पूरी होती हैं। पिता की मृत्यु का योग होता है। विवाह होकर सन्तति होतीं है। हलके वर्गों में व्यवसाय जलदी शुरू होता है। उच्च वर्गों में ३० वें वर्षं के बाद शुरु होता है। इस महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा बहुत अशुभ होती हैं। इसमें सम्बधितों के मृत्यु होते हैं। व्यवसाय में अपयश आता है। ऋण होता है। बेकार रहना पडता है।

२५ वें वर्षं से ४१ वें वर्ष तक की महादशा में–लग्न, पंचम, नवम, दशम तथा लाभ स्थान में चन्द्र के शुभ योग में गुरु हो तो शिक्षा पूरी होती है। विशिष्ट विषय का अध्ययन कर के बी. टी., पी. एच. डी., डी. लिट्., एल. एल. डी. आदी

उपाधियां प्राप्त करते हैं। शिक्षक, प्राध्यापक या न्यायाधीश होते हैं। स्त्री तथा पुत्रों का सुख नही मिलता।

३५ वें वर्ष से ५१ वें वर्ष तक की दशा का फल भी बहुत कुछ ऊपर लिखे जैसा ही होता है। परिवार का पोषण करना पडता है। नौकरी में अडचनें आती हैं। पूर्वार्जित इस्टेट नष्ट होती है। चारों ओर से अपमान होता है। दशा के अन्त में परिस्थिति कुछ सुधरती है। ४१ वें वर्ष से ५७ वें वर्ष तक की दशा भी ऐसी ही होती है। ६१ वें वर्ष से ७७ वें वर्ष तक की दशा अन्तिम समय की है जो बहुतों को जीवन में आती ही नहीं।

गुरु की दशा का सामान्य स्वरूप यह है कि इसके प्रारम्भ से शुक्र की अन्तर्दशा पूरी होने तक समय बहुत कष्टप्रद होता है। **पाराशरी कर्ता** ने लिखा है—आदौ कष्टफलं चैव चतुष्पाद्-जीवलाभकृत्। मध्यान्ते सुखमाप्नोति राजसन्मानवैभवम्॥ वृषभ, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ लग्न हो तो यह दशा बहुत अशुभ होती है। कर्कलग्न के लिए प्रारम्भ में अच्छी किन्तु अन्त में अतिकष्टमय होती है। विदेशयानं दुःखैः परिक्लिन्नो मनुष्यः। गांव छोडकर बाहर जाना पडता है। हमेशा चिन्ता और दुःख बने रहते हैं। गुरु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा अशुभ होती है।

जातकाभरणकर्ता लिखते हैं–निजैर्वियोगोर्थविनाशनं च श्लेष्मानिलश्चापि कलिप्रसंगः। स्यान्मानवानां व्यसनोपलब्धि-र्भृगोः सुते जीवदशां प्रयाते॥ आप्तस्वजनों का वियोग, धन-

हानि, वायु तथा कफ रोग, झगडे, संकट ये फल इस दशा में मिलते हैं। मानसागरी में इस प्रकार का वर्णन है।---कलहं शत्रुवैरंच वित्तमानसचिन्तनम्। स्त्रीभ्यो विघातमाप्नोति जीवस्यान्तर्गते सिते ।। झगडे, शत्रु का वैर, धन की तथा मानसिक चिन्ता, स्त्रियों से घात ये फल इस दशा में मिलते हैं। किन्तु इस अशुभ फलों के स्थान बडे लोगों से परिचय होना, मित्रपरिवार बढना, मित्रों की मदत मिलना, दूसरा विवाह होना ये योग भी होते हैं।

कुण्डली में राहु लग्न, तृतीय, पंचम, षष्ठ, नवम, दशम, लाभ या व्ययस्थान में गुरु से शुभयोग करता हो तो राहु की अन्तर्दशा बहुत भाग्यदायक होती है। आकस्मिक अधिकार मिलना, विवाह होना, व्यवसाय या नौकरी में प्रगति, चुनावों में विजय, बडे लोगों के परिचय से लाभ, सन्तति होना, कीर्ति प्राप्त होना ये योग होते हैं।

इस दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा अशुभ होती है। अन्य अन्तर्दशाएं साधारण होती हैं। गुरु तृतीय, षष्ठ, अष्टम या व्यय में हो तो बहुत अवनति होने का योग इस दशा में होता है। सभी ओर से निराश होना पडता है। नौकरी बीच में ही समाप्त होती है। इस प्रकार गुरु की महादशा के सामान्य फल हैं। विस्तार अन्यत्र देखना चाहिए।

प्रकरण ७ उच्चनीच–विचार

हमारे पुस्तकों में सर्वत्र नीच राशि में स्थित ग्रहों के फल शुभ तथा उच्च राशि में स्थित ग्रहों के फल अशुभ बतलाए हैं। यह परंपरागत विचार से कुछ विरुद्ध है। अतः इसका स्पष्टीकरण यहां देते हैं। खगोलशास्त्र की दृष्टि से सूर्यपरिवार के ग्रह भ्रमण करते समय जब पृथ्वी के बहुत निकट आते हैं तब उच्च कहलाते हैं और पृथ्वी से बहुत दूर जाते हैं तब नीच कहलाते हैं। इन के प्रत्यक्ष फल इस प्रकार दीखते हैं——सूर्य पृथ्वी के समीप आता है उस समय धूप से सर्वत्र लोगों को कष्ट होता है। चन्द्र समीप आने पर समुद्र को ज्वार आता है, कामविकार प्रबल होते हैं। मंगल समीप आने पर डकैत, व्यभिचार, खून, झगडे आदि बढते है। बुध समीप आने पर वाङ्मयीन वाद जोरों से शुरु होते हैं। असभ्य वाङ्मय लिखा जाता है। गुरु समीप आने पर धार्मिक झगडे बढते हैं। विधान सभाओं में विवाद हो कर जनता के पक्ष का पराभव होता है। ये ही ग्रह जब पृथ्वी से दूर जाते हैं तब उनके किरण शान्त होते हैं। अतः इन फलो के विरुद्ध शुभ फल सर्वत्र मिलते है। आचार्य वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में जहां राष्ट्रीय ज्योतिष (Mundane Astrology) का विचार किया है वहां प्रत्येक ग्रह के बारे में लिखा है कि वह स्वच्छ, शान्त, निर्मल किरणों से युक्त हो तो शुभफल देता है। यह तभी होता है जब वह ग्रह पृथ्वी से बहुत दूर हो। श्रवण नक्षत्र (जो मंगल की उच्च राशि मकर में है) में मंगल के फल नारदसंहिता में इस प्रकार बतलाए हैं——उदितः श्रवणे वक्रतो

नृपहानिदः यद्दिग्भ्योभ्युदितो भौमस्तद्दिग्भूपभयप्रदः ।। यह राजाओं की हानि करता है। जिस दिशा में उदय होता है उस दिशा के राजा को भय उत्पन्न करता है। यह उच्च मंगल का फल बतलाया। अब एलन लिओ ने शनि का नीच राशि का फल बतलाया है वह देखिए---यह जीवन में कभी न कभी अवश्य उन्नति करता है। यह महत्त्वाकांक्षी, सत्ता का इच्छूक और अधिकार चलानेवाला होता है। संघटक, व्यवस्थापक और कुछ अविश्वासी होने पर भी मुसद्दी होता है। इसी तरह मकर के गुरु का फल बतलाया है--यह व्यवसाय के लिए अच्छा है। सार्वजनिक जीवन में शुभ फल देता है। धन अथवा वारिस के रूप में मिली संपत्ति के बारे में शुभ फल देता है। बडों से मदद मिलती है। कुछ सत्ता, लोकप्रियता और आदर तथा सार्वजनिक और सरकारी जीवन में यश मिलता है। इसी तरह कर्क के गुरु के फल सामान्य ही बतलाए हैं। उच्च राशि के फल शुभ तभी मिलते हैं जब ग्रह उस राशि के ७ वें अंश के बाद हो क्यों कि ऐसी स्थिति में सायन गणना से वह ग्रह अगली राशि में पहुंच चुकता है। किन्तु निरयन राशिगणना में उच्च राशि के ४ थे अंश तक ग्रह हो तो उसके फल अवश्य अशुभ ही मिलते हैं। अतः अनुभव के आधार पर ही फलवर्णन करना चाहिए।

अद्वितीय सर्वोत्कृष्ट ज्योतिष ग्रंथ

कै. ज्यो. ह. ने. काटवे

१	रवि-विचार	मराठी	दुसरी आवृत्ति		२-०
२	चंद्र-विचार	,,	,,	...	२-०
३	मंगळ-विचार	,,	,,	...	२-८
४	बुध-विचार	,,	,,	...	२-०
५	गुरु-विचार	,,	,,	...	२-८
६	शुक्र-विचार	,,	,,	...	२-८
७	शनि-विचार	,,	,,	...	२-८
८	भाव-विचार	,,	,,	...	२-०
९	गोचर-विचार	,,	,,	...	२-०
१०	शुभाशुभ ग्रहनिर्णय-विचार		पहिली आवृत्ति	...	२-०
११	भावेश-विचार	,,	दुसरी आवृत्ति	...	२-८
१२	ग्रहण विचार	,,	,,	...	३-८
१३	योग-विचार भाग १ ला	,,	,,	...	१-०
१४	योग-विचार भाग २ रा	,,	पहिली आवृत्ति	...	२-०
१५	योग-विचार भाग ३ रा	,,	,,	...	२-०
१६	योग-विचार भाग ४ था	,,	,,	...	१-०
१७	योग-विचार भाग ५ वा	,,	,,	...	१-८
१८	योग-विचार भाग ६ वा	,,	,,	...	२-०
१९	योग-विचार भाग ७ वा	,,	,,	...	२-०
२०	अध्यात्म ज्योतिष-विचार	हिन्दी	,,	...	१०-०
२१	रवि-विचार	,,	,,	...	१-८
२२	चन्द्र-विचार	,,	,,	...	२-०
२३	मंगल-विचार	,,	,,	...	२-८
२४	बुध-विचार	,,	,,	...	२-०
२५	गुरु-विचार	,,	,,	...	२-८

नागपुर प्रकाशन, सीताबर्डी, नागपुर नं. ...